पांचवां भाग

(१)

प्रिंसेस श्चेर्बात्स्काया का ख़्याल था कि लेण्ट के धार्मिक पर्व तक, जिसके लिये केवल पांच सप्ताह बाक़ी रह गये थे, शादी करना असम्भव था, क्योंकि इस वक़्त तक आधा दहेज तैयार नहीं हो सकेगा। मगर उसके लिये लेविन के साथ इस बात पर सहमत न होना भी सम्भव नहीं था कि लेण्ट के बाद कुछ ज़्यादा देर हो जायेगी, क्योंकि प्रिंस श्चेर्बात्स्की की सगी बूढ़ी मौसी बहुत बीमार थी और उसकी जल्द ही मृत्यु हो सकती थी। ऐसा होने पर मातम के कारण शादी और भी रुक सकती थी। इसलिये दहेज को बड़े और छोटे – दो भागों में बांटने का निर्णय करके प्रिंसेस लेण्ट से पहले ही बेटी की शादी करने को राज़ी हो गयीं। उन्होंने तय किया कि दहेज का छोटा भाग वे अभी तैयार कर लेंगी और बड़ा भाग बाद में भेज देंगी तथा इस कारण लेविन से बहुत नाराज़ थीं कि वह किसी तरह भी इस बात का गम्भीरतापूर्वक जवाब देने को तैयार नहीं था कि वह इसके लिये राज़ी है या नहीं। ऐसा निर्णय इस वजह से भी सुविधाजनक था कि नवदम्पति विवाह के फ़ौरन बाद गांव जानेवाले थे, जहां बड़े दहेज की चीज़ों की ज़रूरत नहीं होगी।

लेविन पागलपन की पहले जैसी स्थिति में ही बना रहा, जिसमें उसे ऐसा प्रतीत होता था कि वह और उसका सुख-सौभाग्य ही सारी दुनिया का मुख्य तथा एकमात्र ध्येय है और अब उसे किसी चीज़ के बारे में सोचने तथा चिन्ता करने की ज़रूरत नहीं, कि दूसरे ही उसके

लिये सब कुछ कर रहे हैं तथा कर देंगे। भावी जीवन की उसकी कोई योजनायें और लक्ष्य भी नहीं थे। उसने यह जानते हुए कि सब कुछ अच्छा होगा, इनका निर्णय दूसरों पर छोड़ दिया था। उसका भाई कोज़्निशेव, ओब्लोन्स्की और कीटी की मां उसे यह बताते थे कि उसे क्या कुछ करना चाहिये। उसे जो भी सुझाव दिया जाता, वह उससे पूरी तरह सहमत हो जाता। भाई ने उसके लिये ऋण लिया और प्रिंसेस ने शादी के बाद मास्को से जाने की सलाह दी। ओब्लोन्स्की ने विदेश-भ्रमण का मशविरा दिया। लेविन सभी चीज़ों के लिये सहमत था। "अगर आपको ख़ुशी मिलती है, तो जो भी चाहें, करें। मैं बहुत सुखी हूं और आप चाहे कुछ भी क्यों न करें, मेरा सुख न अधिक और न कम होगा," वह अपने मन में सोचता। जब उसने कीटी को विदेश जाने के सम्बन्ध में ओब्लोन्स्की की सलाह बताई, तो उसे हैरानी हुई कि कीटी इससे सहमत नहीं थी और उनके भावी जीवन के बारे में उसकी कुछ अपनी निश्चित मांगें थीं। उसे मालूम था कि गांव में लेविन का अपना मनपसन्द काम है। जैसा कि उसे स्पष्ट था, कीटी न केवल इस काम को समझती ही नहीं थी, बल्कि समझना भी नहीं चाहती थी। लेकिन इससे उसके इस काम को महत्त्वपूर्ण मानने में बाधा नहीं पड़ती थी। चूंकि वह यह जानती थी कि गांव ही उनका घर होगा, इसलिये विदेश नहीं, जहां उसे रहना नहीं था, बल्कि वहां जाना चाहती थी, जहां उनका घर होगा। ऐसे इरादे की निश्चित अभिव्यक्ति से लेविन को आश्चर्य हुआ। किन्तु चूंकि उसके लिये सब समान था, उसने ओब्लोन्स्की से तुरन्त अनुरोध किया, जैसे कि यह उसका कर्त्तव्य हो, कि वह गांव जाकर अपनी अच्छी पसन्द के मुताबिक़, जिसकी उसके पास कोई कमी नहीं थी, वहां सारा प्रबन्ध कर दे।

"लेकिन सुनो तो," ओब्लोन्स्की ने गांव से लौटने के बाद, जहां उसने नवदम्पति के लिये सब प्रबन्ध कर दिया था, एक दिन लेविन से पूछा, "तुम्हारे पास ईसाई धर्म की दीक्षा लेने का प्रमाण-पत्र है न?"

"नहीं। क्यों?"

"उसके बिना शादी नहीं हो सकती।"

"हे भगवान!" लेविन चिल्ला उठा। "मुझे लगता है कि मैंने नौ साल से व्रत-उपवास नहीं किया। मुझे इसका ख़्याल ही नहीं आया।"

"तुम भी ख़ूब हो!" ओब्लोन्स्की ने हंसते हुए कहा। "और मुझे सर्वखण्डनवादी कहते हो! लेकिन ऐसे काम नहीं चलेगा। तुम्हें दीक्षा लेनी चाहिये।"

"कब यह किया जाये? सिर्फ़ चार दिन बाक़ी रह गये हैं।"

ओब्लोन्स्की ने इसकी भी व्यवस्था कर दी। लेविन ने उपवास करना शुरू कर दिया। हर उस नास्तिक की भांति, जो दूसरों की आस्तिकता का आदर करता है, लेविन के लिये भी गिरजाघर की सभी धार्मिक रस्मों में उपस्थित रहना और उनमें भाग लेना एक मुश्किल काम था। सभी चीज़ों के प्रति अत्यधिक संवेदनशील और दयालुता की जिस मानसिक स्थिति में वह इस समय था, उसमें ढोंग करने की यह विवशता लेविन को न केवल बोझिल, बल्कि सर्वथा असम्भव प्रतीत हुई। अपने गौरव और उत्कर्ष की इस स्थिति में उसे या तो झूठ का सहारा लेना होगा या धर्मोल्लंघन करना पड़ेगा। वह अपने को दोनों में से कोई भी चीज़ करने की स्थिति में अनुभव नहीं कर रहा था। किन्तु उसने ओब्लोन्स्की से चाहे कितना ही क्यों न यह पूछा कि व्रत-उपवास किये बिना क्या प्रमाण-पत्र नहीं मिल सकता, ओब्लोन्स्की ने यही जवाब दिया कि ऐसा करना असम्भव है।

"इसमें तुम्हारे लिये कौन बड़ी मुसीबत है – दो दिन की ही तो बात है? और वह बूढ़ा पादरी भला तथा समझदार आदमी है। वह इस दुखते दांत को ऐसे निकाल देगा कि तुम्हें पता भी नहीं चलेगा।"

गिरजे में पहली प्रार्थना के समय खड़े हुए लेविन ने अपने दिल में किशोरावस्था की उन तीव्र धार्मिक भावनाओं की स्मृतियों को ताज़ा करने की कोशिश की, जो उसने सोलह से सत्रह वर्ष तक अनुभव की थीं। किन्तु उसे फ़ौरन इस बात का यक़ीन हो गया कि उसके लिये ऐसा करना बिल्कुल असम्भव है। उसने इस सब को लोगों से मिलने-जुलने के लिये जाने की महत्वहीन रस्म की तरह मानना चाहा, लेकिन अनुभव किया कि उसके लिये ऐसा करना भी किसी तरह सम्भव नहीं। अपने अन्य समकालीनों की भांति, धर्म के मामले में लेविन भी सर्वथा अनिश्चित स्थिति में था। भगवान में उसकी आस्था तो हो नहीं सकती

थी, किन्तु साथ ही उसे इस बात का भी पक्का यक़ीन नहीं था कि यह सब अनुचित है। इसलिये जो कुछ वह कर रहा था, उसके महत्त्व को स्वीकारने और साथ ही उसे निरी औपचारिकता मानते हुए उसके प्रति उदासीनता का भाव अपनाने की स्थिति में भी न होने के कारण समझ में न आनेवाली रस्में पूरी करते समय उसे अटपटापन और लज्जा तथा इसी कारण, जैसे कि उसकी अन्तर्रात्मा उससे कहती, झूठ और बुराई की सी अनुभूति होती।

उपासना के समय वह कभी तो प्रार्थना को ऐसा अर्थ प्रदान करने का प्रयास करते हुए, जो उसके दृष्टिकोण से भिन्न न हो, तो कभी यह अनुभव करते हुए कि वह इन प्रार्थनाओं को समझने में असमर्थ है और उसे इनकी भर्त्सना करनी चाहिये, उन्हें अनसुना करने की कोशिश में अपने विचारों, निरीक्षणों तथा संस्मरणों में खो जाता, जो गिरजे में बेकार खड़े रहने की हालत में अत्यधिक सजीवता से उसके मस्तिष्क में चक्कर काट रहे थे।

उसने दोपहर, तीसरे पहर की उपासना तथा भजन को जैसे-तैसे बर्दाश्त किया और अगले दिन, रोज़मर्रा के मुक़ाबले में कुछ पहले उठकर नाश्ता किये बिना, आठ बजे ही सुबह की प्रार्थना सुनने और दीक्षा लेने के लिये गिरजे में पहुंच गया।

फ़ौजी-भिखमंगों, दो बुढ़ियाओं और पादरियों, आदि के सिवा गिरजे में कोई नहीं था।

पतला-सा अंगरखा पहने, जिसके नीचे लम्बी पीठ के दोनों भाग बहुत स्पष्ट रूप से नज़र आ रहे थे, एक नौजवान डीकन ने लेविन का स्वागत किया और तुरंत दीवार से सटी छोटी-सी मेज़ के पास जाकर प्रार्थना पढ़ने लगा। प्रार्थना के पाठ के समय, विशेषतः "भगवान दया करें" शब्दों के बार-बार और तेज़ी से दोहराये जाने पर, जो "भगव दया करें" सुनाई देते थे, लेविन ने अनुभव किया कि उसका चिन्तन-द्वार बन्द है, उसपर मुहर लगी है और इस समय इसे छेड़ना तथा हिलाना-डुलाना उचित नहीं होगा, वरना मस्तिष्क में सब कुछ गड्डमड्ड हो जायेगा। इसलिये वह डीकन के पीछे खड़ा रहकर कुछ सुने और समझे बिना अपने ही विचारों में खोया रहा। "अद्भुत रूप से अभिव्यक्तिपूर्ण है उसका हाथ," यह याद करते हुए कि कैसे वे

एक दिन पहले कोनेवाली मेज़ के पास बैठे रहे थे, वह सोच रहा था। जैसा कि लगभग हमेशा ही इस समय होता था, उनके बीच बात करने को कुछ नहीं था और कीटी मेज़ पर अपना हाथ रखकर उसे बन्द करती तथा खोल रही थी तथा उसके हिलने-डुलने को देखते हुए ख़ुद ही हंस पड़ी थी। उसे याद आया कि कैसे उसने इस हाथ को चूमा था और बाद में कैसे उसने गुलाबी हाथ पर एक मिलन-बिन्दु की ओर बढ़ती रेखाओं को ध्यान से देखा था। "फिर भगव दया करें," लेविन ने सलीब बनाते, झुकते और झुकनेवाले डीकन की पीठ की लचीली गतिविधि को देखते हुए सोचा। "इसके बाद उसने मेरा हाथ लेकर रेखाओं को देखा। 'तुम्हारा हाथ बहुत अच्छा है,' उसने कहा था।" और उसने अपने तथा डीकन के छोटे-से हाथ को देखा। "हां, अब जल्द ही प्रार्थना ख़त्म हो जायेगी," उसने अनुमान लगाया। "नहीं, लगता है कि फिर शुरू से दोहराने लगा है," प्रार्थनाओं को सुनते हुए उसने सोचा। "नहीं ख़त्म कर रहा है – वह अब ज़मीन की ओर बहुत झुककर प्रणाम कर रहा है। ऐसा तो हमेशा समाप्ति के पहले होता है।"

डीकन ने मख़मली कफ़ के नीचे से उसके हाथ में खोंसा गया तीन रूबल का नोट चुपके से लेकर लेविन से कहा कि वह पाप-स्वीकृति के लिये लेविन का नाम लिख देगा और ख़ाली गिरजे के फ़र्श की सिलों पर अपने घुटनों तक के नये जूतों को ज़ोर से पटकता हुआ वेदी की ओर चल दिया। क्षण भर बाद उसने वहां से सिर बाहर निकाला और लेविन को उधर आने का इशारा किया। लेविन के मस्तिष्क में अब तक बन्द पड़ा हुआ विचार हिला-डुला, मगर उसने जल्दी से उसे दूर खदेड़ दिया। "किसी तरह बात बन ही जायेगी," उसने सोचा और वेदी के बग़लवाले चबूतरे की ओर चल दिया। वह वेदी पर चढ़ा और दायीं तरफ़ मुड़ने पर उसे पादरी दिखाई दिया। अध-पकी, विरली दाढ़ी और थकी हुई दयालु आंखों वाला बूढ़ा पादरी डेस्क के पीछे खड़ा हुआ प्रार्थना-पुस्तक के पृष्ठ उलट रहा था। तनिक सिर झुकाकर लेविन का अभिवादन करने के फ़ौरन बाद वह अभ्यस्त स्वर में प्रार्थनाओं का पाठ करने लगा। प्रार्थनायें समाप्त करके उसने भूमि की ओर झुकते हुए प्रणाम किया और फिर लेविन को सम्बोधित किया।

"यहां अदृश्य रूप से उपस्थित भगवान ईसा मसीह आपकी पाप-स्वीकृति को क़बूल करते हैं," पादरी ने सलीबी मौतवाले ईसा के चित्र की ओर संकेत करके कहा। "हमारा पावन ईसाई धर्म जो शिक्षा देता है, आप उसमें विश्वास करते हैं या नहीं?" पादरी ने लेविन के चेहरे से नज़रें हटाते और चोग़े के नीचे हाथ छिपाते हुए पूछा।

"मैं सन्देह करता था, मैं हर चीज़ में सन्देह करता हूं," लेविन ने अपने को अप्रिय प्रतीत होनेवाली आवाज़ में कहा और चुप हो गया।

पादरी इसलिये कुछ क्षण तक ख़ामोश रहा कि लेविन कुछ और कहता है या नहीं और फिर आंखें मूंदकर व्लादीमिर क्षेत्र के लोगों की तरह अपने उच्चारण में अत्यधिक "ओ" का उपयोग करते हुए कहता गया –

"सन्देह मानव की दुर्बलता है, किन्तु हमें प्रार्थना करनी चाहिये कि दयालु भगवान हमें शक्ति प्रदान करें। कौनसे विशेष पाप किये हैं?" पादरी ने विराम के बिना, मानो इस बात का यत्न करते हुए कि समय बरबाद न हो, पूछा।

"मेरा मुख्य पाप सन्देह है। मैं हर चीज़ में सन्देह करता हूं और अधिकतर सन्देह की स्थिति में रहता हूं।"

"सन्देह मानव की दुर्बलता है," पादरी ने वही शब्द दोहराये। "किन्तु मुख्यत: आप किस बात में सन्देह करते हैं?"

"मैं सभी चीज़ों में सन्देह करता हूं। कभी-कभी मुझे भगवान के अस्तित्व के बारे में भी सन्देह होने लगता है," लेविन ने अनचाहे ही कहा और अपने शब्दों की अशिष्टता से स्तम्भित रह गया। किन्तु, जैसाकि प्रतीत हुआ, लेविन के शब्दों का पादरी पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा।

"भगवान के अस्तित्व के बारे में भला कैसे सन्देह हो सकता है?" तनिक दिखाई देनेवाली मुस्कान के साथ पादरी ने जल्दी से पूछा।

लेविन चुप रहा।

"स्रष्टा के अस्तित्व के बारे में आपको क्या सन्देह हो सकता है, जब आप उसकी रची हुई सृष्टि अपने सामने देखते हैं?" पादरी जल्दी-जल्दी बोलने के अपने अभ्यस्त ढंग में कहता गया। "आकाश की मेहराब को किसने दीपों से सजाया है? किसने पृथ्वी को उसका सौन्दर्य

प्रदान किया है? स्रष्टा के बिना यह कैसे हो सकता है?" उसने प्रश्न-सूचक दृष्टि से लेविन की ओर देखते हुए कहा।

लेविन ने अनुभव किया कि पादरी के साथ दार्शनिक वाद-विवाद करना उचित नहीं होगा और इसलिये केवल प्रश्न से सम्बन्धित बात का ही जवाब दिया।

"मैं नहीं जानता," उसने कहा।

"नहीं जानते? तो फिर आप इस बात में सन्देह क्यों करते हैं कि भगवान ने ही सारी रचना की है?" पादरी ने प्रफुल्लतापूर्ण आश्चर्य के साथ जानना चाहा।

"मैं कुछ भी नहीं समझता," लेविन ने शर्म से लाल होते और यह अनुभव करते हुए कहा कि उसके शब्द बेतुके हैं तथा ऐसी परिस्थिति में इसके अलावा और कुछ नहीं हो सकते।

"भगवान का नाम लीजिये और उनसे अनुनय-विनती कीजिये। पावन पादरियों के हृदयों में भी सन्देह थे और उन्होंने भगवान से अपनी आस्था की पुष्टि का अनुरोध किया। शैतान बहुत बड़ी ताक़त रखता है और हमें उसके सामने झुकना नहीं चाहिये। भगवान का नाम लीजिये, उनसे विनय-अनुनय कीजिये। भगवान का नाम लीजिये," उसने जल्दी-जल्दी दोहराया।

पादरी मानो सोचते हुए कुछ क्षण तक चुप रहा।

"जैसा कि मैंने सुना है, आप मेरे गिरजे से सम्बन्धित और मेरे धर्म-पुत्र, प्रिंस श्चेर्बात्स्की की बेटी से विवाह करने जा रहे हैं?" उसने मुस्कराते हुए इतना और कहा। "बड़ी अच्छी लड़की है।"

"हां," पादरी के लिये लज्जारुण होते हुए लेविन ने उत्तर दिया। "पाप-स्वीकृति के समय वह किसलिये यह पूछ रहा है?" लेविन ने सोचा।

उसके इस विचार का मानो उत्तर देते हुए पादरी ने कहा—

"आप शादी करने जा रहे हैं और बहुत सम्भव है कि भगवान आपको सन्तान का वरदान दें, ठीक है न? अगर अनास्था की ओर आकर्षित करनेवाले शैतान के आकर्षण पर आप स्वयं विजय नहीं पायेंगे, तो आप अपने बच्चों को क्या शिक्षा देंगे?" उसने नम्र भर्त्सना के साथ कहा। "अगर आप अपने बच्चों को प्यार करते हैं, तो एक

अच्छे पिता के नाते अपने बच्चों के लिये केवल दौलत, ऐश-आराम और मान-सम्मान की ही कामना नहीं करेंगे, आप उनकी आत्मिक मुक्ति, सत्य के प्रकाश से उनकी आत्मा की दीप्ति भी चाहेंगे। ठीक है न? जब आपका बच्चा आपसे यह सवाल करेगा कि 'पिता जी, इस दुनिया में मुझे मोहित करनेवाली सभी चीज़ें – पृथ्वी, जल, सूरज, फूल, घास – किसने बनायी हैं,' तो आप क्या जवाब देंगे? क्या आप उससे यह कहेंगे – 'मुझे मालूम नहीं?' जब भगवान ने अपनी परम अनुकम्पा से आपको यह स्पष्ट कर दिया है, तो ऐसा नहीं हो सकता कि आपको यह मालूम न हो। या फिर जब आपका बच्चा यह पूछेगा – 'मरने के बाद मेरा क्या होगा?' जब आप खुद कुछ नहीं जानते, तो उसे क्या बतायेंगे? कैसे जवाब देंगे उसे? उसे दुनिया के आकर्षणों और शैतान के रहम पर छोड़ देंगे? यह तो अच्छी बात नहीं होगी!" पादरी ने कहा, चुप हो गया और अपना सिर एक ओर को झुकाकर दयालु और विनयी आंखों से लेविन को देखने लगा।

लेविन ने इस बार इस कारण कोई जवाब नहीं दिया कि पादरी से वाद-विवाद करना अनुचित समझता था, बल्कि इसलिये कि उससे किसी ने ऐसे सवाल नहीं किये थे। जब बच्चे ऐसे सवाल करेंगे, तो क्या जवाब दिया जाये, यह सोचने को काफ़ी वक़्त होगा।

"आप ज़िन्दगी की ऐसी दहलीज़ पर क़दम रख रहे हैं, जब रास्ता चुनना और उसी पर बने रहना चाहिये," पादरी ने अपना कथन जारी रखा। "भगवान का नाम लीजिये, ताकि वह अपनी अनुकम्पा-अनुग्रह से आपकी सहायता और आप पर दया करें," उसने अपनी बात समाप्त की। "हमारे प्रभु और भगवान ईसा मसीह, पूरी मानव-जाति के प्रति अपनी दया और अनुकम्पा से अपनी सन्तान को क्षमा करें" और पाप-मुक्ति की प्रार्थना समाप्त करके पादरी ने उसे आशीर्वाद देकर जाने को कहा।

उस दिन घर लौटने पर लेविन को इस बात की सुखद अनुभूति हुई कि अटपटी स्थिति का अन्त हो गया और वह भी इस ढंग से कि उसे झूठ नहीं बोलना पड़ा। इसके अलावा उसके दिमाग़ में इस बात की धुंधली-सी अनुभूति रह गयी कि उस दयालु और प्यारे बूढ़े ने जो कुछ कहा था, वह इतना बेतुका नहीं था, जितना उसे शुरू में प्रतीत

हुआ था, और इस मामले में कुछ ऐसा है, जिस पर सोच-विचार करना चाहिये।

"ज़ाहिर है कि अभी नहीं," लेविन ने सोचा, "मगर कभी बाद में।" पहले किसी भी समय की तुलना में लेविन अब यह अनुभव कर रहा था कि उसकी आत्मा में कुछ अस्पष्टता और मलिनता है तथा धर्म के मामले में उसकी वैसी ही स्थिति है, जिसे वह साफ़ तौर पर दूसरों में देखता और नापसन्द करता था और जिसके लिये अपने दोस्त स्वियाज्स्की को भला-बुरा कहता था।

इस दिन की शाम उसने अपनी मंगेतर के साथ डौली के यहां बितायी। लेविन बहुत ही अधिक उल्लासित था और ओब्लोन्स्की को अपनी हर्षोन्माद की यी स्थिति स्पष्ट करते हुए उसने कहा कि वह उस कुत्ते जैसी ख़ुशी महसूस कर रहा है, जिसे चक्र में से कूदना सिखाया जाता है और जो आख़िर उससे अपेक्षित बात समझकर उसे पूरा करने के बाद ख़ुशी से भौंकता है और दुम हिलाते हुए बड़ी उमंग में मेज़ और खिड़की के दासे पंर उछलता-कूदता है।

(२)

शादी के दिन रिवाज के मुताबिक़ (कीटी की मां और डौली ने रीति-रिवाजों का कड़ाई से पालन करने का अनुरोध किया) लेविन अपनी मंगेतर से नहीं मिला और उसने होटल के अपने कमरे में ही संयोग से जमा हो जानेवाले तीन छड़ों के साथ खाना खाया। ये तीन अविवाहित थे – कोज़्निशेव, विश्वविद्यालय की पढ़ाई के ज़माने का लेविन का साथी और अब प्राकृतिक विज्ञान का प्रोफ़ेसर कातावासोव, जिससे सड़क पर लेविन की अचानक मुलाक़ात हो गयी थी और वह उसे अपने कमरे में खींच लाया था, तथा दूल्हे का साथी, मास्को का एक न्यायाधीश और शिकार का साथी चीरिकोव। भोजन प्रफुल्लता के वातावरण में हुआ। कोज़्निशेव बहुत रंग में था और कातावासोव की मौलिकता का बड़ा मज़ा ले रहा था। कातावासोव यह अनुभव करते हुए कि उसकी मौलिकता का ऊंचा मूल्यांकन हो रहा है, उसे समझा जा रहा है, उसका प्रदर्शन कर रहा था। चीरिकोव

बड़ी ख़ुशी और ज़िन्दादिली से सारी बातचीत में हिस्सा ले रहा था।

"हां तो," कातावासोव ने व्याख्यान देने की अपनी आदत के मुताबिक़ शब्दों को खींचते हुए कहा, "कितना योग्य व्यक्ति था हमारा दोस्त कोन्स्तान्तीन द्मीत्रियेविच लेविन। मैं अनुपस्थितों की चर्चा कर रहा हूं, क्योंकि वह तो अब यहां रहा ही नहीं। विश्वविद्यालय छोड़ने के समय उसे विज्ञान से लगाव था और उसकी मानवीय रुचियां थीं। अब उसकी योग्यता का आधा भाग इस दिशा में निर्देशित है कि अपने को धोखा दे और दूसरा आधा भाग इस धोखे की सफ़ाई पेश करने में।"

"आपके समान शादी का कट्टर दुश्मन मैंने आज तक कोई दूसरा जाना-देखा ही नहीं," कोज़्निशेव ने कहा।

"नहीं, मैं शादी का दुश्मन नहीं हूं। मैं श्रम-विभाजन का हिमायती हूं। जो लोग और कुछ नहीं कर सकते, वे नसल बढ़ायें, और बाक़ी उनको शिक्षित तथा सुखी बनाने में हाथ बंटायें। मेरा तो ऐसा दृष्टिकोण है। इन दो धंधों को आपस में मिला देने की इच्छा रखनेवाले बड़ी संख्या में हैं, मगर मैं उनमें से नहीं हूं।"

"कितनी ख़ुशी होगी मुझे उस दिन, जब यह पता चलेगा कि आप प्रेम-जाल में फंस गये हैं!" लेविन ने कहा। "कृपया मुझे शादी में ज़रूर बुलाइयेगा।"

"मैं तो पहले से ही फंसा हुआ हूं।"

"हां, मसिक्षेपी मछलियों के प्रेम-जाल में। जानते हो," लेविन ने भाई को सम्बोधित किया, "मिख़ाईल सेम्योनोविच एक निबन्ध लिख रहे हैं मसिक्षेपियों के भोजन और..."

"ख़ैर, गड़बड़ नहीं कीजिये! इससे क्या फ़र्क़ पड़ता है कि किस बारे में। बात यह है कि मैं तो सचमुच ही मसिक्षेपियों को प्यार करता हूं।"

"किन्तु वे आपके बीवी को प्यार करने में बाधा नहीं डालेंगी।"

"वे तो बाधा नहीं डालेंगी, मगर बीवी बाधा डाल देगी।"

"वह क्यों?"

"देख लीजियेगा। आपको खेतीबारी और शिकार पसन्द है न, देख लीजियेगा!"

"आज आर्खीप आया था, कहता था कि प्रूद्नी जंगल में बहुत सारे हिरन और दो भालू भी हैं," चीरिकोव ने कहा।

"तो आप मेरे बिना ही उनका शिकार कीजिये।"

"लो, सचाई सामने आ गयी," कोज़्निशेव ने कहा। "पहले से ही भालुओं के शिकार को अलविदा कह देना चाहिये – बीवी इसके लिये जाने नहीं देगी!"

लेविन मुस्करा दिया। इस बात की कल्पना कि बीवी जाने नहीं देगी, उसे इतनी प्रिय लगी कि वह भालुओं को देख पाने की ख़ुशी से हमेशा के लिये इन्कार करने को तैयार था।

"फिर भी अफ़सोस की बात है कि इन दो भालुओं का आपके बिना शिकार किया जायेगा। याद है ख़ापीलोवो में हमारा आख़िरी शिकार? कितना अच्छा शिकार होगा," चीरिकोव ने कहा।

लेविन यह कहकर कि कीटी के बिना कहीं, कुछ भी अच्छा नहीं हो सकता, उसे निराश नहीं करना चाहता था, इसलिये ख़ामोश रहा।

"छड़े की ज़िन्दगी से विदा लेने की परम्परा यों ही नहीं चली है," कोज़्निशेव ने कहा। "आदमी कितना ही सुखी क्यों न हो जाये, फिर भी आज़ादी गंवाने का दुख तो होता ही है।"

"आप यह स्वीकार करें कि गोगोल के नाटक के एक पात्र की तरह खिड़की से बाहर कूद जाने को मन होता है?"

"होता तो होगा, मगर वह मानेगा नहीं!" कातावासोव ने कहा और ठठाकर हंस दिया।

"खिड़की तो खुली हुई है... अभी त्वेर चलते हैं! एक मादा भालू भी है, मांद तक जाया जा सकता है। सच, पांच बजे की गाड़ी से चलते हैं! यहां वे जो चाहें, करते रहें," चीरिकोव ने मुस्कराकर कहा।

"क़सम खाकर कहता हूं," लेविन ने मुस्कराते हुए जवाब दिया, "मैं अपनी आत्मा में आज़ादी खोने का ज़रा भी अफ़सोस महसूस नहीं कर रहा हूं!"

"हां, आपकी आत्मा में अब ऐसा गड़बड़-झाला है कि कुछ भी महसूस नहीं होगा वहां आपको," कातावासोव ने कहा। "कुछ सब्र करें, तब आपको यह महसूस होने लगेगा।"

"नहीं, अगर ऐसा होता, तो मैंने अपनी सुख-भावना (वह उसकी उपस्थिति में प्रेम-भावना नहीं कहना चाहता था) के अतिरिक्त अपनी आज़ादी खोने का कुछ तो दुख अनुभव किया होता... इसके विपरीत मैं इस आज़ादी को खोने से ख़ुश हूं।"

"यह तो बुरी बात है! बिल्कुल लाइलाज मरीज़ है!" कातावासोव ने कहा। "आइये, इसके स्वस्थ होने का जाम पियें और यह कामना करें कि इसके सपनों का कम से कम सौवां भाग ही साकार हो जाये! यह ऐसा सुख होगा, जैसा कभी पृथ्वी पर नहीं हुआ!"

मेहमान खाना ख़त्म होने के फ़ौरन बाद चले गये, ताकि शादी में शामिल होने के लिये कपड़े बदल आयें।

अकेला रह जाने पर इन छड़ों की बातों को याद करते हुए लेविन ने एक बार फिर अपने से पूछा – क्या वह अपनी आत्मा में उस आज़ादी के खो जाने का अफ़सोस महसूस करता है, जिसकी वे चर्चा कर रहे थे? इस सवाल पर वह मुस्करा दिया। "आज़ादी? किसलिये चाहिये मुझे आज़ादी? सुख इसी में है कि आदमी प्यार करे और उसके हृदय में कामना हो, किसी की इच्छाओं और विचारों के अनुरूप सोचे यानी कोई भी आज़ादी न हो – यही है सुख!"

"किन्तु क्या मैं उसके विचार, उसकी इच्छायें, उसकी भावनायें जानता हूं?" अचानक उसे किसी आवाज़ की फुसफुसाहट सुनाई दी। उसके चेहरे से मुस्कान ग़ायब हो गयी और वह सोच में डूब गया। सहसा एक अजीब-सी भावना उसपर हावी हो गयी। उसे भय और शंका, सभी चीज़ों के बारे में शंका ने आ घेरा।

"मान लो, वह मुझे प्यार न करती हो? मान लो, वह केवल शादी करने के लिये ही ऐसा कर रही हो? अगर वह ख़ुद ही यह न जानती हो कि क्या कर रही है?" उसने अपने आपसे पूछा। "हो सकता है कि वह होश में आये और शादी होने के बाद ही यह समझे कि मुझे प्यार नहीं करती और कर भी नहीं सकती थी।" और बहुत अजीब, बहुत बुरे विचार उसके दिमाग़ में आने लगे। कीटी को लेकर उसे व्रोन्स्की से एक साल पहले की तरह ही ईर्ष्या होने लगी, मानो वह शाम, जब उसने कीटी को व्रोन्स्की के साथ देखा था, कल की ही बात हो। उसे शंका हुई कि कीटी ने उससे सब कुछ नहीं कहा।

वह तेज़ी से उछलकर खड़ा हो गया। "नहीं, ऐसे नहीं चल सकता!" उसने हताश होते हुए अपने आपसे कहा। "उसके पास जाता हूं, उससे उसके दिल की बात पूछूंगा, आख़िरी बार उससे कहूंगा – हम आज़ाद हैं और क्या यह सब कुछ यहीं रोक देना ठीक नहीं होगा? स्थायी दुख, लज्जा और बेवफ़ाई से तो सभी कुछ बेहतर है!" बुरी तरह हताश होता और सभी लोगों पर, अपने पर, कीटी पर भुनभुनाता हुआ वह होटल से निकला और कीटी के घर की तरफ़ चल दिया।

कीटी उसे पीछे वाले कमरों में मिली। वह सन्दूक़ पर बैठी थी और कुर्सियों की टेकों पर लटके तथा फ़र्श पर रखे हुए ढेर सारे रंग-बिरंगे फ़ाकों को छांटती हुई नौकरानी को कुछ हिदायतें दे रही थी।

"ओह!" लेविन को देखकर वह कह उठी तथा ख़ुशी से उसका रोम-रोम पुलकित हो गया। "कैसे आये हो तुम, कैसे आना हुआ आपका (विवाह के दिन तक वह उसे कभी "तुम" और कभी "आप" कहती थी)? इसकी आशा नहीं की थी! मैं अपने पुराने फ़ाकों को छांट रही हूं, किसे कौन-सा दूं..."

"ओह! यह तो बड़ी अच्छी बात है!" उदासी से नौकरानी की तरफ़ देखते हुए उसने जवाब दिया।

"दुन्याशा, तुम जाओ, मैं तुम्हें बाद में बुला लूंगी," कीटी ने कहा। "क्या हुआ है तुम्हें?" नौकरानी के जाने पर कीटी ने दृढ़ता से "तुम" का उपयोग करते हुए पूछा। कीटी का उसके अजीब, उदास और परेशान चेहरे की तरफ़ ध्यान गया और उसे भय ने जकड़ लिया।

"कीटी! मैं बहुत व्यथित हूं। मैं अकेला यातना नहीं सह सकता," उसने कीटी के सामने रुककर अनुनय से उसकी ओर देखते हुए बहुत दुखी आवाज़ में कहा। कीटी के प्यार भरे और निश्छल चेहरे से उसे यह साफ़ नज़र आ रहा था कि वह जो कुछ उससे कहना चाहता है, उसका कुछ भी नतीजा नहीं निकलेगा। किन्तु फिर भी वह चाहता था कि ख़ुद कीटी उसके ग़लत होने की पुष्टि कर दे। "मैं यह कहने आया हूं कि अभी भी वक़्त है। यह सब कुछ ख़त्म और ठीक-ठाक किया जा सकता है।"

"क्या? मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा। तुम्हें हुआ क्या है?"

"मैं तुमसे पहले भी हज़ार बार कह चुका हूं और इस बारे में सोचे बिना नहीं रह सकता... यही कि मैं तुम्हारे लायक़ नहीं हूं। तुम मुझसे शादी करने को राज़ी नहीं हो सकती थीं। तुम सोच-विचार लो। तुमसे भूल हुई है। तुम अच्छी तरह ग़ौर कर लो। तुम मुझसे प्यार नहीं कर सकतीं। अगर... बेहतर यही है कि कह दो," उसकी ओर देखे बिना उसने कहा। "मुझे बहुत दुख होगा। लोग जो चाहें, कहते रहें। मानसिक यातना से सभी कुछ बेहतर होगा... अभी, जब तक समय है, सभी कुछ बेहतर है..."

"मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा," कीटी ने सहमते हुए जवाब दिया, "मेरा मतलब है कि क्या तुम इन्कार करना चाहते हो... नहीं चाहते?"

"हां, अगर तुम मुझे प्यार नहीं करतीं।"

"तुम पागल हो गये हो!" झल्लाहट से लाल होते हुए उसने कहा।

किन्तु लेविन का चेहरा इतना दयनीय था कि कीटी ने अपनी खीझ पर क़ाबू पा लिया और कुर्सी से फ़ाक नीचे गिराकर उसकी बग़ल में जा बैठी।

"तुम क्या सोच रहे हो? सब कुछ कहो मुझसे।"

"मैं सोच रहा हूं कि तुम मुझे प्यार नहीं कर सकतीं। किसलिये तुम प्यार कर सकती हो मुझे?"

"हे भगवान! मैं क्या कर सकती हूं?.." कीटी ने कहा और रो पड़ी।

"ओह, यह क्या कर डाला मैंने!" लेविन ज़ोर से कह उठा और कीटी के सामने घुटनों के बल खड़े होकर उसके हाथ चूमने लगा।

कीटी की मां जब पांच मिनट बाद कमरे में आईं, तो इन दोनों के बीच पूरी सुलह हो चुकी थी। कीटी ने उसे केवल यही विश्वास नहीं दिला दिया था कि वह उसे प्यार करती है, बल्कि किसलिये प्यार करती है, ऐसा करने का कारण भी स्पष्ट कर दिया था। उसने कहा था कि वह इसलिये उसको प्यार करती है कि सम्पूर्ण रूप में उसे समझती है, इसलिये कि जानती है कि उसे क्या कुछ पसन्द है और जो पसन्द है, वह सब अच्छा है। लेविन को यह पूरी तरह स्पष्ट प्रतीत हुआ। कीटी की मां जब कमरे में दाख़िल हुईं, तो वे दोनों एक-दूसरे के पास बैठे हुए फ़ाकों को छांट रहे थे तथा उन पर इस बात की बहस

हो रही थी कि कीटी दुन्याशा को कत्थई रंग का वह फ़ाक देना चाहती थी, जो वह उस दिन पहने थी, जब लेविन ने उससे विवाह का प्रस्ताव किया था, और लेविन उसे किसी को न देने का आग्रह कर रहा था तथा दुन्याशा को आसमानी रंग का फ़ाक देने को कह रहा था।

"तुम समझते क्यों नहीं? वह श्यामकेशी है और उसे यह फ़ाक जंचेगा नहीं... मैंने ऐसी सभी बातों को ध्यान में रखा है।"

यह जानकर कि लेविन किसलिये आया है, प्रिंसेस कुछ नाराज़गी और कुछ मज़ाक़ में उसपर बिगड़ीं और कपड़े बदलने के लिये घर जाने तथा कीटी के केश-विन्यास में बाधा न डालने को कहा, क्योंकि शार्ल नाम का हेयर-ड्रेसर जल्द ही आनेवाला था।

"वह तो वैसे ही इन पिछले कुछ दिनों में कुछ भी खा-पी नहीं रही तथा उसका चेहरा उतर गया है। तुम अपनी बेवक़ूफ़ी की बातों से उसे और परेशान कर रहे हो," प्रिंसेस ने लेविन से कहा। "जाओ, जाओ, मेहरबानी करो।"

अपराधी और लज्जित-सा, किन्तु शान्त मन से लेविन अपने होटल में लौट आया। उसका भाई, डौली और ओब्लोन्स्की पूरी तरह सजे-धजे हुए उसकी राह देख रहे थे, ताकि देव-प्रतिमा के साथ उसे आशीर्वाद दें। वक़्त बहुत कम था। डौली को अभी घर जाना था, ताकि सुगन्धित तथा घुंघराले बनाये गये बालों वाले बेटे को साथ ले ले। इसी बेटे को देव-प्रतिमा लेकर दुलहन के साथ बग्घी में जाना था। इसके बाद दूल्हे के साथी के लिये बग्घी भेजनी थी और कोज़्निशेव को ले जानेवाली बग्घी को वापस लौटाना था... कुल मिलाकर सभी तरह के जटिल प्रबन्ध करने थे। हां, एक बात निश्चित थी कि देर नहीं करनी चाहिये, क्योंकि साढ़े छः बज चुके थे।

देव-प्रतिमा के साथ आशीर्वाद देने की रस्म कुछ ढंग से पूरी नहीं हुई। ओब्लोन्स्की अपनी पत्नी की बग़ल में हास्यपूर्ण गम्भीर मुद्रा बनाकर खड़ा हो गया, उसने देव-प्रतिमा हाथ में ली, लेविन को पृथ्वी की ओर सिर झुकाने को कहा, दयालु और व्यंग्यपूर्ण मुस्कान के साथ उसे आशीर्वाद दिया और तीन बार चूमा। डौली ने भी ऐसा ही किया, जल्दी से जाना चाहा और बग्घियों की व्यवस्था के बारे में फिर से गड़बड़-झाले में उलझ गयी।

"तो हम ऐसा करेंगे – तुम हमारी बग्घी में इसे लेने आ जाना और कोज़्निशेव अगर इतनी मेहरबानी करे, तो बग्घी में वहां पहुंचकर उसे वापस भेज दे।"

"मैं ख़ुशी से ऐसा करूंगा।"

"और हम अभी इसके साथ पहुंच जायेंगे। चीज़ें भिजवा दी हैं?" ओब्लोन्स्की ने पूछा।

"हां, भिजवा दी हैं," लेविन ने जवाब दिया और कुज़्मा से अपने पहनने के कपड़े देने को कहा।

(३)

विवाह के लिये रोशनी से जगमगाते गिरजाघर को लोगों की भीड़, विशेषत: नारियां बड़ी संख्या में घेरे थीं। जो लोग भीतर नहीं जा सके थे, वे खिड़कियों के आस-पास जमा थे, रेल-पेल कर रहे थे, झगड़ रहे थे और जंगले में से झांक रहे थे।

पुलिस वाले बीस से अधिक बग्घियों को सड़क पर पार्क करवा चुके थे। पुलिस का अफ़सर पाले की परवाह न करता और अपनी वर्दी की लौ देता हुआ दरवाज़े के पास खड़ा था। बग्घियां अभी भी लगातार आती चली जा रही थीं। सिर पर फूल लगाये तथा पोशाक के लटकते दामन ऊपर उठाये महिलायें या टोपियां अथवा काले टोप उतारे हुए पुरुष गिरजे में दाखिल होते। गिरजे में दोनों झाड़-फ़ानूस और देव-प्रतिमाओं के सामने सभी शमादान जले हुए थे। देव-प्रतिमाओं वाली दीवार की लाल पृष्ठभूमि पर सुनहरी चमक, देव-प्रतिमाओं की सुनहरी नक़्क़ाशी, धूपदानों और शमादानों की चांदी, फ़र्श की सिलें, क़ालीन, गायक-मण्डली के ऊपर सन्त-चित्रोंवाला ध्वज, वेदी की ओर जानेवाली पैड़ियां, पुरानी तथा काली पड़ चुकी पुस्तकें, केसाक और पादरियों के सफ़ेद जाम – सभी कुछ रोशनी में जगमगा रहा था। अच्छे ढंग से गर्माये हुए गिरजे के दायीं ओर फ़्राक कोटों और सफ़ेद टाइयों, वर्दियों और ज़रीदार पोशाकों, मख़मल, साटिन, बालों, फूलों, नंगे कंधों और बांहों तथा लम्बे दस्तानों वाली भीड़ में संयत तथा सजीव बातचीत हो रही थी और गिरजे के ऊंचे गुम्बज से वह अजीब ढंग

से प्रतिध्वनित होती थी। हर बार जैसे ही दरवाज़ा खुलने की चीं-चर्र होती, भीड़ में बातचीत बन्द हो जाती और सभी दूल्हा-दुलहन को देखने की उम्मीद से मुड़कर दरवाज़े की तरफ़ देखते। किन्तु दरवाज़ा दस से अधिक बार खुल चुका था और हर बार या तो देर से आनेवाला कोई मेहमान भीतर आता और दायीं ओर खड़े आमंत्रित अतिथियों में शामिल हो जाता या फिर कोई तमाशबीन औरत होती, जो पुलिस अफ़सर की आंख में धूल झोंककर अथवा उसकी मिन्नत-समाजत करके बायीं ओर खड़े अजनबियों की भीड़ में मिल जाती। सगे-सम्बन्धी और पराये लोग भी राह देखते-देखते तंग आ चुके थे।

शुरू में ऐसा मानते हुए कि वर-वधू किसी भी क्षण आ जायेंगे, इस देरी की तरफ़ किसी ने ध्यान नहीं दिया। इसके बाद बार-बार दरवाज़े की ओर देखने तथा यह कहने लगे कि कहीं कोई बात तो नहीं हो गयी। इसके पश्चात् यह देरी अटपटी मालूम होने लगी और सगे-सम्बन्धी तथा मेहमान यह दिखावा करने लगे कि वे दूल्हे के बारे में नहीं सोच रहे हैं और अपनी बातचीत में व्यस्त हैं।

बड़ा डीकन मानो अपने समय के बहुमूल्य होने की याद दिलाते हुए बेचैनी से खांसता था, जिससे खिड़कियों के शीशे कांप उठते थे। गायक-मण्डली में से कभी तो कोई अपने स्वर को जांचता या ऊब अनुभव करते हुए नाक सिनकता। पादरी लगातार कभी तो अपने सहायक और कभी डीकन को यह जानने के लिये भेजता कि दूल्हा आया या नहीं और ख़ुद बैंगनी रंग का जामा पहने तथा कशीदे वाली पेटी बांधे हुए दूल्हे की प्रतीक्षा में बार-बार बग़ल के दरवाज़ों से बाहर जाता। आख़िर एक महिला ने अपनी घड़ी पर नज़र डालकर कहा – "कुछ भी हो, है यह बड़ी अजीब बात!" और सभी मेहमान बेचैन हो उठे तथा अपना आश्चर्य और असन्तोष प्रकट करने लगे। दूल्हे का साथी यह मालूम करने चला गया कि क्या मामला है। इसी बीच कीटी, जो कभी से सफ़ेद फ़्राक पहने, लम्बा पर्दा डाले तथा सफ़ेद रंग का पुष्प-चक्र लगाये अपनी धर्म-माता और बहन ल्वोवा के साथ अपने घर के हॉल में खड़ी खिड़की से बाहर झांक रही थी और आधे घण्टे से अधिक समय से अपने दूल्हे के साथी से दूल्हे के गिरजे में आने की ख़बर सुनने की बेक़रारी से राह देख रही थी।

दूसरी ओर, लेविन पतलून पहने, किन्तु कोट और वास्कट के बिना, अपने कमरे में इधर-उधर आ-जा रहा था, लगातार दरवाज़े से सिर बाहर निकालकर गलियारे में झांकता था। मगर लेविन जिसकी राह देख रहा था, गलियारे में वह नज़र न आता। लेविन निराश होकर लौटता तथा हाथ झटककर इतमीनान से सिगरेट पीते हुए ओब्लोन्स्की को सम्बोधित करता।

"कभी किसी आदमी ने अपने को ऐसी बेहूदा स्थिति में भी पाया होगा!" वह कहता।

"हां, बेहूदा स्थिति है," ओब्लोन्स्की उसे शान्त करती हुई मुस्कान के साथ जवाब देता। "पर तुम शान्त हो जाओ, अभी आ जायेगा।"

"ख़ाक आ जायेगा!" लेविन दबे-दबे गुस्से से जवाब देता। "और ये नीची काट की बेहूदा वास्कटें! क्या हिमाकत है!" अपनी सिलवटें पड़ी क़मीज़ को देखते हुए वह कहता। "और अगर चीज़ें स्टेशन पर भेज दी गयी होंगी, तो!" वह हताशा से चिल्लाता।

"तब मेरी पहन लेना।"

"बहुत पहले से ही ऐसा कर लेना चाहिये था।"

"अपना मज़ाक़ उड़वाने में क्या तुक है... ज़रा सब्र करो! सब ठीक हो जायेगा!"

बात यह थी कि लेविन ने जब अपनी पोशाक देने को कहा, तो लेविन का बूढ़ा नौकर कुज़्मा फ़्राक कोट, वास्कट और बाक़ी सभी कुछ ले आया।

"और क़मीज़ कहां है!" लेविन ने चिल्लाकर पूछा।

"क़मीज़ आप पहने हुए हैं," कुज़्मा ने शान्त मुस्कान के साथ जवाब दिया।

कुज़्मा को धुली हुई क़मीज़ रखने का ख़्याल नहीं आया और यह हुक्म मिलने पर कि सभी चीज़ें पैक करके श्चेर्बात्स्की परिवार के यहां पहुंचा दी जायें, जहां से नवदम्पति उसी शाम को गांव के लिये रवाना होनेवाले थे, कुज़्मा ने सूट को छोड़कर बाक़ी सभी चीज़ें पैक कीं और पहुंचा दीं। सुबह से पहनी हुई क़मीज़ में सिलवटें पड़ गयी थीं और नीची काट के फ़ैशन वाली वास्कट के साथ उसे पहनना असम्भव था।

श्चेर्बात्स्की परिवार का घर बहुत दूर था और इसलिये वहां से क़मीज़ लाने की बात बेतुकी थी। नौकर को क़मीज़ ख़रीदने के लिये भेजा गया। उसने लौटकर जवाब दिया कि इतवार होने की वजह से सभी दुकानें बन्द हैं। ओब्लोन्स्की के घर किसी को भेजा, क़मीज़ आ गयी, मगर वह बहुत ही चौड़ी और छोटी थी। आख़िर श्चेर्बात्स्की परिवार के यहां किसी को भेजा गया ताकि वह सामान खोलकर वहां से क़मीज़ ले आये। दूल्हे का गिरजे में इन्तज़ार हो रहा था और वह पिंजरे में बन्द जानवर की तरह कमरे में इधर-उधर आ-जा रहा था, गलियारे में झांक रहा था तथा हताश और बेहद परेशान होते हुए यह याद कर रहा था कि उसने कीटी से क्या कुछ कह दिया था और अब उसके दिमाग़ में कैसे-कैसे ख़्याल आ सकते हैं।

आख़िर बुरी तरह से हांफता हुआ दोषी कुज़्मा क़मीज़ लेकर कमरे में भागा आया।

"यही अच्छा हुआ कि ठीक वक़्त पर पहुंच गया। सामान छकड़े पर लादा जा रहा था," कुज़्मा ने कहा।

तीन मिनट बाद घड़ी पर नज़र डाले बिना, ताकि घाव पर नमक छिड़कनेवाली बात न हो, लेविन गलियारे में से नीचे भाग चला।

"इससे कुछ फ़र्क़ नहीं पड़ेगा," ओब्लोन्स्की ने इतमीनान से उसके पीछे-पीछे जाते हुए कहा। "सब ठीक हो जायेगा, सब ठीक हो जायेगा... कह रहा हूं न।"

(४)

"आ गये! वह रहा! कौन-सा? जो अधिक जवान है? और उस बेचारी का तो दम निकला जा रहा है!" भीड़ में यह सुनाई दिया, जब लेविन दरवाज़े के पास दुल्हन से मिलकर उसके साथ गिरजे में दाख़िल हुआ।

ओब्लोन्स्की ने अपनी पत्नी को देर होने का कारण बताया और मेहमान मुस्कराते हुए आपस में खुसर-फुसर करने लगे। लेविन किसी व्यक्ति और किसी चीज़ की तरफ़ ध्यान नहीं दे रहा था, एकटक अपनी दुल्हन को देख रहा था।

सभी यह कह रहे थे कि पिछले कुछ दिनों में कीटी का रूप-रंग काफ़ी फीका पड़ गया है और शादी के दिन वह वैसी अच्छी नहीं लग रही है, जैसी आम दिन लगती थी। किन्तु लेविन को ऐसा नहीं प्रतीत हो रहा था। वह जाली के लम्बे सफ़ेद पर्दे और सफ़ेद फूलों सहित कीटी के ऊंचे केश-विन्यास, घेरदार ऊंचे और खड़े कालर को, ज़ो ख़ास लड़कियों के अन्दाज़ में उसकी लम्बी गर्दन को अगल-बग़ल से ढके हुए तथा सामने से खोले था, और आश्चर्यजनक रूप से पतली कमर को देख रहा था तथा उसे लग रहा था कि वह पहले किसी भी समय की तुलना में आज अधिक सुन्दर थी। सो भी इसलिये नहीं कि ये फूल, यह जाली का पर्दा और पेरिस से मंगवाया गया फ़ाक उसके सौन्दर्य को कुछ बढ़ा रहे थे, बल्कि इसलिये कि इस बड़ी सज-धज के बावजूद उसके प्यारे चेहरे, उसकी दृष्टि और होंठों पर भोली-भाली सचाई का वही भाव झलक रहा था।

"मैं सोचने लगी थी कि तुम भाग गये हो," कीटी ने कहा और उसकी ओर देखकर मुस्करा दी।

"मेरे साथ जो हुआ वह इतना बेहूदा था कि बताते हुए शर्म आती है!" उसने लज्जारुण होते हुए कहा और अपने पास आनेवाले कोज़्निशेव की तरफ़ उसे ध्यान देना पड़ा।

"तुम्हारा यह क़मीज़ वाला क़िस्सा भी ख़ूब रहा!" कोज़्निशेव ने सिर हिलाते और मुस्कराते हुए कहा।

"हां, हां," लेविन ने यह न समझते हुए कि उससे क्या कहा जा रहा है, उत्तर दिया।

"सुनो, कोस्त्या, अब एक महत्त्वपूर्ण सवाल का हल ढूंढ़ना चाहिये," ओब्लोन्स्की ने बनावटी तौर पर सहमी-सी सूरत बनाते हुए कहा। "अब तुम पूरी तरह उसकी महत्ता को समझने की स्थिति में हो। मुझसे पूछा जा रहा है कि इस्तेमाल की हुई मोमबत्तियां जलाई जायें या नयी, बिना इस्तेमाल की हुई? फ़र्क़ दस रूबल का है," उसने इतना और जोड़ते हुए होंठों पर मुस्कान चस्पां कर ली। "मैंने इसका फ़ैसला तो कर लिया है, मगर डरता हूं कि तुम सहमत नहीं होगे।"

लेविन समझ गया कि यह मज़ाक़ है, मगर मुस्करा नहीं सका।

"तो क्या किया जायें? इस्तेमाल की हुई या नई? यह सवाल है।"

"हां, हां! नई।"

"मैं बहुत ख़ुश हूं। मामला तय हो गया!" ओब्लोन्स्की ने मुस्कराकर कहा। "फिर भी इस स्थिति में लोग कैसे बुद्धू-से हो जाते हैं," उसने चीरिकोव से कहा, जब लेविन खोयी-खोयी नज़र से उसकी तरफ़ देखकर दुल्हन की ओर बढ़ गया।

"देखो, कीटी, क़ालीन पर तुम ही पहले खड़ी होना," काउंटेस नोर्डस्टोन ने पास आकर कहा। "ख़ूब आदमी हैं आप!" उसने लेविन को सम्बोधित किया।

"क्यों, घबरा तो नहीं रही हो?" बूढ़ी मौसी मार्या द्मीत्रियेव्ना ने पूछा।

"तुम्हें ठण्ड तो नहीं लग रही? तुम्हारे चेहरे का रंग उड़ा हुआ है। रुको, ज़रा झुको तो!" कीटी की बहन ल्वोवा ने कहा और अपने गदराये सुन्दर हाथों को ऊपर उठाकर मुस्कराते हुए कीटी के सिर पर फूलों को ठीक कर दिया।

डौली क़रीब आई, उसने कुछ कहना चाहा, मगर कह न सकी, रो पड़ी और अस्वाभाविक ढंग से हंस दी।

कीटी भी लेविन की तरह सभी को बेध्यान-सी देख रही थी। उससे जो कुछ भी कहा या पूछा जाता था, उसके जवाब में वह सुख की द्योतक मुस्कान ही, जो अब उसके लिये इतनी स्वाभाविक थी, होंठों पर ले आती थी।

इसी बीच गिरजे के लोगों ने अपने जामे-चोग़े पहन लिये और डीकन को साथ लेकर पादरी डेस्क के पास, जो दरवाज़े के पास था, आ गया। पादरी ने लेविन को सम्बोधित करके कुछ कहा। लेविन को यह सुनाई नहीं दिया।

"दुल्हन का हाथ थामकर आगे बढ़िये," दूल्हे के साथी ने कहा।

लेविन बहुत देर तक यह नहीं समझ पाया कि उससे क्या अपेक्षा की जा रही है। देर तक लोग उसकी भूल सुधारते रहे और आख़िर निराश होकर उन्होंने इस प्रयास को त्यागना चाहा – कारण कि वह दुल्हन को या तो ठीक हाथ से नहीं पकड़ता था या फिर उसका ठीक

हाथ नहीं पकड़ता – और तभी वह यह समझ गया कि अपनी स्थिति बदले बिना उसे अपने दायें हाथ से दुल्हन का दायां हाथ ही थामना है। अन्त में जब उसने दुल्हन का हाथ वैसे ही थाम लिया, जैसे थामना चाहिये था, तो पादरी उनसे कुछ क़दम आगे बढ़कर डेस्क के पास रुक गया। खुसर-फुसर की भनक और महिलाओं की पोशाकों के लटकते दामनों की सरसराहट करती हुई सगे-सम्बन्धियों और परिचितों की भीड़ उनके पीछे-पीछे बढ़ने लगी। किसी ने झुककर दुल्हन की पोशाक का लटकता दामन ठीक किया। गिरजाघर में ऐसी ख़ामोशी छा गयी कि मोमबत्तियों से टपकती हुई मोम की बूंदों की आवाज़ भी सुनाई दे रही थी।

सिर पर ऊंची टोपी पहने नाटे-से बूढ़े पादरी ने, जिसके सफ़ेद बालों की सुन्दर लटें दोनों ओर कानों के पीछे सिमटी हुई थीं, पीठ पर सुनहरी सलीब वाले भारी रुपहले जामे के नीचे से अपने बुढ़ाये हुए छोटे-छोटे हाथ बाहर निकाले और डेस्क पर कुछ उलटने-पलटने लगा।

ओब्लोन्स्की सावधानी से उसके पास गया, फुसफुसाकर कुछ कहा, लेविन को आंख मारकर कुछ संकेत किया और अपनी जगह वापस चला गया।

पादरी ने फूलों से सजी और बायें हाथ में टेढ़ी पकड़ी हुई, ताकि उनसे मोम की बूंदें धीरे-धीरे गिरें, दो मोमबत्तियां जलायीं और वर-वधू की ओर मुंह किया। पादरी वही था, जिसने लेविन से पाप-स्वीकृति करवायी थी। उसने थकी-थकी और उदास दृष्टि से वर-वधू की ओर देखा, गहरी सांस ली और जामे के नीचे से दायां हाथ निकालकर दूल्हे को आशीर्वाद दिया और इसी भांति, सावधानीपूर्ण स्नेह की झलक के साथ, कीटी के झुके हुए सिर पर अपनी उंगलियां रखीं। इसके बाद उसने इन दोनों को मोमबत्तियां पकड़ा दीं और धूपदान हाथ में लेकर इनसे दूर हट गया।

"क्या यह हक़ीक़त है?" लेविन ने सोचा और मुड़कर दुल्हन की ओर देखा। कुछ ऊंचाई से उसे कीटी की आकृति की झलक मिली और उसके होंठों तथा बरौनियों के तनिक हिलने-डुलने से उसने जान लिया कि कीटी ने उसकी नज़र को भांप लिया है। कीटी ने मुड़कर

नहीं देखा, मगर उसका घेरदार ऊंचा कालर हिला-डुला और उसके छोटे-से गुलाबी कान तक ऊंचा उठ गया। उसने देखा कि गहरी सांस कीटी की छाती में ही दबकर रह गयी और लम्बा दस्ताना पहने तथा मोमबत्ती थामे छोटा-सा हाथ कांप गया।

क़मीज़ को लेकर सारी परेशानी, देर, जान-पहचान के लोगों और सगे-सम्बन्धियों से हुई बातचीत, उनकी अप्रसन्नता, उसकी हास्यास्पद स्थिति – यह सब कुछ अचानक ग़ायब हो गया और उसे ख़ुशी तथा भय की अनुभूति हुई।

रुपहला चोग़ा पहने ऊंचे क़द का सुन्दर बड़ा डीकन, जिसके घुंघराले बाल सिर के दोनों ओर संवरे हुए थे, तेज़ी से आगे बढ़ा और अभ्यस्त ढंग से लम्बे-से रिबन को अपनी दो उंगलियों पर उठाकर पादरी के सामने पेश किया।

"हम पर कृपा करें, देव," हवा को थरथराती हुई एक के बाद एक गम्भीर आवाज़ें धीरे-धीरे गिरजे में प्रतिध्वनित हो उठीं।

"भला हो हमारे भगवान का, अब, आगे और चिरकाल तक!" बूढ़े पादरी ने डेस्क पर अभी कुछ उलटते-पलटते इसके जवाब में धीमे और गाने के अन्दाज़ में कहा। और खिड़कियों से मेहराबदार छत तक पूरे गिरजे को गुंजाता हुआ अदृश्य सहगायकों द्वारा गाया जानेवाला सहगान पूरे विस्तार में फैला, ज़ोर से उभरा, क्षण भर को रुका और धीरे-धीरे लुप्त हो गया।

सदा की भांति दूसरी दुनिया और मुक्ति, उच्च धर्म-परिषद और सम्राट के बारे में प्रार्थनायें की गयीं, प्रभु-सेवकों कोन्स्तान्तीन और येकातेरीना, जिनकी उस दिन शादी हो रही थी, के सम्बन्ध में भी प्रार्थना की गयी।

"हे प्रभु आप से अनुरोध है, आप इन्हें पूर्ण प्रेम, शान्ति और अपनी सहायता दें," सारा गिरजा बड़े डीकन की आवाज़ से भरपूर-सा प्रतीत हो रहा था।

लेविन ये शब्द सुन रहा था और आश्चर्यचकित हो रहा था। "कैसे इन्होंने यह अनुमान लगा लिया कि सहायता, हां सहायता की आवश्यकता है?" कुछ ही समय पहले के अपने सारे भय और सन्देहों को स्मरण करते हुए वह सोच रहा था। "मैं क्या जानता हूं? बिना

मदद के मैं क्या कर सकता हूं इस भयानक मामले में?" वह सोच रहा था। "हां, अब मुझे सहायता की ही आवश्यकता है।"

डीकन ने जब प्रार्थना समाप्त कर ली, तो पादरी ने पुस्तक हाथ में लेकर वर-वधू को सम्बोधित किया –

"अजर-अमर ईश्वर, आपने बिछुड़े हुओं को मिलाया," अपने धीमे और गाने के से स्वर में वह पढ़ रहा था, "और इनके लिये प्यार का अटूट बन्धन निर्धारित किया है।"

"'अजर-अमर ईश्वर, आपने बिछुड़े हुओं को मिलाया और इनके प्यार का अटूट बन्धन निर्धारित किया है,' कितने गहन अर्थ से परिपूर्ण हैं ये शब्द और कितने अनुरूप हैं उस भावना के, जो इस क्षण अनुभव हो रही है!" लेविन सोच रहा था। "क्या उसे भी मेरी ही जैसी अनुभूति हो रही है?"

लेविन ने मुड़कर देखा और कीटी से उसकी नज़रें मिलीं।

कीटी की आंखों की भावाभिव्यक्ति से उसने यह निष्कर्ष निकाला कि उसे भी उसके समान ही अनुभूति हो रही है। मगर यह सही नहीं था। वह प्रार्थना के शब्दों को लगभग नहीं समझती थी और विवाह की रस्म के समय उन्हें सुन भी नहीं रही थी। वह इन शब्दों को सुन और समझ नहीं सकती थी – इतनी प्रबल थी वह एक भावना, जो उसकी आत्मा में पूरी तरह व्याप्त थी और अधिकाधिक तीव्र होती जा रही थी। यह भावना थी उस चीज़ की पूर्ण सफलता की ख़ुशी की, जिसने डेढ़ महीना पहले उसकी आत्मा में जन्म लिया था और जो इन छः सप्ताहों के दौरान उसे प्रसन्नता और यातना देती रही थी। उस दिन, जब वह कत्थई रंग का फ़्राक पहने हुए अपने अर्बात सड़क वाले घर के हॉल में चुपचाप उसके पास आई थी और अपने को उसे समर्पित कर दिया था – उस दिन, उस घड़ी उसकी आत्मा में पहले के जीवन से उसका पूरा नाता टूट गया था और सर्वथा दूसरे तथा उसके लिये सर्वथा नये जीवन का श्रीगणेश हुआ था, किन्तु वास्तव में पुराना जीवन ही जारी रहा था। ये छः सप्ताह उसके लिये सबसे अधिक सुख और सर्वाधिक यातना का समय रहे थे। उसका पूरा जीवन, उसकी सारी इच्छायें और आशायें उसके लिये अभी तक अनबूझ इस एक व्यक्ति पर केन्द्रित रही थीं, जिसके साथ उसे वह भावना जोड़ रही

थी, जो इस व्यक्ति से भी अधिक अनबूझ थी और जो कभी उसे उसके निकट ले जाती थी और कभी दूर हटाती थी, तथा साथ ही वह पहले के जीवन की परिस्थितियों में रहती जा रही थी। पुरानी ज़िन्दगी जीते हुए खुद अपने से, अपने अतीत की सभी चीज़ों, सभी आदतों, सभी लोगों के प्रति, जो उसे प्यार करते थे और करते हैं, अपनी पूर्ण अदम्य उदासीनता से, इस उदासीनता के कारण दुखी मां तथा प्यारे और स्नेहपूर्ण पिता के प्रति, जिन्हें वह पहले सबसे अधिक प्यार करती थी, अपनी इस उदासीनता से वह दहल उठती थी। अपनी इस उदासीनता से कभी वह कांप उठती, तो कभी उस कारण से खुश होती, जिससे यह उदासीनता आई थी। इस व्यक्ति के बिना वह न तो कुछ सोच और न चाह सकती थी। किन्तु यह नया जीवन अभी अस्तित्व में नहीं आया था और वह अपने लिये उसकी स्पष्ट कल्पना भी नहीं कर सकती थी। केवल प्रतीक्षा ही थी – नये और अज्ञात का भय और खुशी ही थी। बस, कुछ क्षण बाद यह प्रतीक्षा और अस्पष्टता, पश्चाताप तथा पहले जीवन को तिलांजली – यह सब समाप्त हो जायेगा तथा नया जीवन आरम्भ होगा। अपनी अस्पष्टता के कारण इस नये का भयावह होना अनिवार्य था। किन्तु भयावह हो या न हो – वह तो छः हफ़्ते पहले ही उसकी आत्मा में घट चुका था। अब उस चीज़ को केवल धार्मिक पुष्टि प्रदान की जा रही थी, जो बहुत पहले उसकी आत्मा में हो चुकी थी।

फिर से डेस्क के पास आकर पादरी ने कठिनाई से कीटी की छोटी-सी अंगूठी हाथ में पकड़ी, लेविन को अपना हाथ बढ़ाने को कहा, उसकी उंगली के सिरे पर उसे पहनाया और कहा – "प्रभु-सेवक कोन्स्तान्तीन की प्रभु-सेविका येकातेरीना से शादी होती है," तथा लेविन की बड़ी अंगूठी को कीटी की गुलाबी, छोटी और दुर्बल होने के कारण दयनीय उंगली में पहनाकर पादरी ने फिर से यही शब्द दोहराये।

वर-वधू ने कई बार यह अनुमान लगाने का प्रयास किया कि उनसे क्या करने की अपेक्षा की जाती है और हर बार उनसे भूल हुई तथा पादरी ने उनकी भूल सुधारी। आख़िर वह करने के बाद, जो अपेक्षित था, और अंगूठियों से उनके ऊपर सलीब बनाकर उसने फिर से कीटी

को बड़ी और लेविन को छोटी अंगूठी दे दी। फिर से उन दोनों ने मामला गड़बड़ कर दिया, दो बार अंगूठियों को एक-दूसरे को दिया, फिर भी वह नहीं हुआ, जो होना चाहिये था।

डौली, चीरिकोव और ओब्लोन्स्की उन्हें सही बात सुझाने के लिये आगे बढ़ आये। इससे मामला और भी गड़बड़ा गया, खुसर-फुसर होने लगी, मुस्कानें उभरीं। किन्तु वर-वधू के चेहरे का गम्भीर और मधुर भाव नहीं बदला। इसके विपरीत, हाथों के गड़बड़ाने से वे पहले की तुलना में और भी अधिक गम्भीर और संजीदा दिख रहे थे और ओब्लोन्स्की ने जिस मुस्कान के साथ फुसफुसाकर उनसे यह कहा कि वे अब अपनी-अपनी अंगूठियां पहन लें, वह अनचाहे ही उसके होंठों से ग़ायब होकर रह गयी। उसने अनुभव किया कि किसी भी तरह की मुस्कान से उनके दिलों को ठेस लगेगी।

लेविन अधिकाधिक यह अनुभव कर रहा था कि विवाह के बारे में उसके सारे विचार, उसकी सारी कल्पनायें कि वह अपने जीवन को कैसा रूप देगा – यह सब कुछ बचकाना बातें थीं और यह कुछ ऐसी चीज़ है, जिसे वह अब तक नहीं समझता था तथा अब और भी कम समझता है, यद्यपि यह हो उसी के साथ रहा है। उसे अपना गला अधिकाधिक रुंधता प्रतीत हुआ और उसकी आखों में बरबस आंसू छलछला आये।

(५)

सारा मास्को गिरजे में आया हुआ था, रिश्तेदार और जान-पहचान के सभी लोग। रोशनी से जगमगाते गिरजे में विवाह की रस्म के वक़्त सजी-धजी महिलाओं और लड़कियों, सफ़ेद टाइयां, फ़्राक कोट तथा वर्दियां पहने पुरुषों के हलक़े में लगातार धीमी-धीमी बातचीत चलती रही, जिसे मुख्यत: मर्द ही जारी रख रहे थे। इसी बीच नारियां सभी धार्मिक रस्मों को देखने में डूबी हुई थीं, जिनमें उनकी हमेशा गहरी रुचि रहती है।

लोगों के इस घेरे में दुल्हन की दो बहनें – डौली और विदेश से आयी शान्त सुन्दरी ल्वोवा – उसके निकटतम खड़ी थीं।

"शादी के मौक़े पर मारी बिल्कुल काली-सी लगनेवाली बैंगनी पोशाक क्यों पहने है?" कोर्सून्स्काया ने पूछा।

"उसके चेहरे के रंग के लिये यही ठीक है..." द्रुबेत्स्काया ने उत्तर दिया। "मुझे हैरानी हो रही है कि वे शाम के वक़्त शादी क्यों कर रहे हैं। ऐसा तो व्यापारियों-सेठों के यहां होता है..."

"अधिक सुन्दर लगता है। मेरी शादी भी शाम को हुई थी," कोर्सून्स्काया ने उत्तर दिया और यह याद करके आह भरी कि उस दिन वह कितनी प्यारी लग रही थी, उसका दीवाना पति कितना हास्यास्पद था और अब कैसे सब कुछ बदल गया है।

"कहते हैं कि जो दस से अधिक बार दूल्हे का साथी बनता है, उसकी कभी शादी नहीं होती। मैं दसवीं बार ऐसा करना चाहता था, ताकि मेरे लिये ऐसा सुनिश्चित हो जाता, मगर जगह ख़ाली नहीं थी," काउंट सिन्याविन प्यारी-सी प्रिंसेस चारस्काया से कह रहा था, जो उसपर उम्मीद लगाये थी।

चारस्काया ने उत्तर में केवल मुस्करा दी। वह यह सोचती हुई कीटी की तरफ़ देख रही थी कि कब कीटी की तरह काउंट सिन्याविन की बग़ल में खड़ी होगी और कैसे तब उसे उसका यह मज़ाक़ याद दिलायेगी।

युवा श्चेर्बात्स्की बूढ़ी दरबारी परिचारिका निकोलायेवा से कह रहा था कि वह कीटी के पराये बालों के जूड़े पर सेहरा बांधना चाहता है, ताकि वह सौभाग्यशालिनी हो।

"उसे पराये बालों का जूड़ा सिर पर नहीं रखना चाहिये था," निकोलायेवा ने उत्तर दिया, जिसने यह निर्णय कर रखा था कि अगर वह बूढ़ा विधुर, जिसे वह फांसना चाह रही थी, उससे शादी करेगा, तो शादी बहुत ही सीधी-सादी होगी। "मुझे ऐसी तड़क-भड़क पसन्द नहीं है।"

कोज़्निशेव दार्या द्मीत्रियेव्ना से बात कर रहा था और मज़ाक़ करते हुए उसे यह यक़ीन दिला रहा था कि शादी के फ़ौरन बाद नवदम्पति के चले जाने की परम्परा इसलिये फैलती जा रही है कि उन्हें हमेशा कुछ शर्म महसूस होती है।

"आपका भाई गर्व कर सकता है। वह एक अजूबे-सी मोहिनी है। मेरे ख़्याल में आपको ईर्ष्या हो रही होगी?"

"मेरे लिये यह बात पुरानी हो चुकी है, दार्या द्मीत्रियेव्ना," कोज़्निशेव ने उत्तर दिया और उसका चेहरा अप्रत्याशित ही उदास और गम्भीर हो गया।

ओब्लोन्स्की अपनी साली को तलाक़ के बारे में चुटकुला सुना रहा था।

"उसके सिर पर पुष्प-चक्र को ठीक करना चाहिये," उसकी बात पर कान न देते हुए उसने कहा।

"कितने अफ़सोस की बात है कि पिछले दिनों में कीटी का रंग-रूप इतना बिगड़ गया है," काउंटेस नोर्डस्टोन कीटी की बड़ी बहन ल्वोवा से कह रही थी। "फिर भी लेविन उसकी जूती की नोक के बराबर नहीं है। ठीक है न?"

"नहीं, वह मुझे बहुत पसन्द है। इसलिये नहीं कि वह मेरा भावी beau-frère* है," ल्वोवा ने उत्तर दिया। "इसलिये कि वह कैसे अच्छे ढंग से अपने को पेश कर रहा है! ऐसी स्थिति में अपना सन्तुलन बनाये रखना, हास्यास्पद न होना, बड़ा मुश्किल होता है। और वह न तो हास्यास्पद है, न तनाव की स्थिति में है, नज़र आ रहा है कि भाव-विह्वल है।"

"लगता है कि आप ऐसी ही आशा कर रही थीं।"

"लगभग। कीटी हमेशा ही उसे प्यार करती रही है।"

"देखेंगे कि इनमें से कौन पहले क़ालीन पर पांव रखता है। मैंने कीटी को ऐसा करने की सलाह दी है।"

"इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता," ल्वोवा ने जवाब दिया। "हम सभी पति की बात माननेवाली पत्नियां हैं, यह हमारे ख़ून में है।"

"लेकिन मैं तो जान-बूझकर वसीली से पहले क़ालीन पर खड़ी हुई थी। और डौली आप?"

डौली इनके क़रीब खड़ी थी, इनकी बातें सुन रही थी, मगर उसने कोई उत्तर नहीं दिया। वह बहुत द्रवित थी। आंसू उसकी पलकों तक आये हुए थे और रोये बिना वह कुछ भी न कह पाती। वह कीटी और लेविन के लिये ख़ुश हो रही थी और मन ही मन अपनी शादी

---

* बहनोई। (फ़्रांसीसी)

की ओर लौटते हुए खिले चेहरे वाले ओब्लोन्स्की को देख रही थी, वर्त्तमान का सब कुछ भूलकर अपने पहले, निश्छल प्रेम को ही याद कर रही थी। उसे केवल अपनी ही नहीं, बल्कि अपनी नज़दीकी और जान-पहचान की सभी नारियों की याद आई। उसे उनके जीवन के एकमात्र उस समारोही समय की याद आई, जब कीटी की भांति वे भी हृदय में प्यार, आशा और भय लिये हुए वेदी पर खड़ी थीं, अतीत से नाता तोड़ रही थीं और रहस्यपूर्ण भविष्य से अपना सम्बन्ध जोड़ रही थीं। इस तरह की जिन दुल्हनों का उसे स्मरण हो आया, उनमें उसकी प्यारी आन्ना भी थी, जिसके सम्भव तलाक़ की तफ़सीलें उसे कुछ समय पहले सुनने को मिली थीं। वह भी सफ़ेद रंग के फूलों से सजी और जाली का पर्दा डाले ऐसी मासूम और निर्मल-सी खड़ी थी। लेकिन अब?

"बहुत अजीब बात है," वह बुदबुदायी।

केवल कीटी की बहनें, सहेलियां और रिश्तेदारिनें ही धार्मिक रस्म की हर तफ़सील को बहुत ध्यान से नहीं देख रही थीं, परायी तमाशबीन औरतें भी बड़ी उत्तेजित होकर तथा सांस रोककर सब कुछ देख रही थीं, किसी भी गतिविधि, वर या वधू के चेहरे के किसी भी भाव को नज़र से ओझल नहीं होने देना चाहती थीं और मज़ाक़ तथा इधर-उधर की टीका-टिप्पणियां करनेवाले उदासीन पुरुषों की बातों के न केवल जवाब नहीं देती थीं, बल्कि अक्सर उन्हें सुनती ही नहीं थीं।

"वह इतनी रोयी हुई क्यों है? क्या इच्छा के विरुद्ध शादी की जा रही है?"

"ऐसे सुन्दर जवान के साथ इच्छा के विरुद्ध शादी का क्या सवाल हो सकता है? कोई प्रिंस है क्या?"

"सफ़ेद साटिन की पोशाक पहने हुए क्या बहन है? सुनो तो, यह डीकन कैसे चीख़ रहा है – 'पति की बात मानना!'"

"यह चुदोव्स्की मठ की भजन-मण्डली है क्या?"

"उच्च धर्म-परिषद की।"

"मैंने नौकर से बात की थी। उसने बताया कि अभी अपनी जागीर पर उसे ले जायेगा। कहते हैं कि बड़ा ही मालदार है। इसीलिये तो इससे शादी की है।"

"नहीं, अच्छी जोड़ी है।"

"मार्या व्लास्येव्ना, आप मुझसे बहस कर रही थीं कि बुकरम वाले फूले घाघरों का रिवाज है। उसकी तरफ़ देखिये, वह जो गहरे भूरे रंग वाला फ़्राक पहने है। कहते हैं किसी राजदूत की पत्नी है... उसका घाघरा फूलता नहीं है..."

"दुल्हन तो कितनी प्यारी है, जिबह करने के लिये सजाई गयी भेड़ की तरह! कोई कुछ भी क्यों न कहे, हमें अपनी इस बहन के लिये अफ़सोस हुए बिना नहीं रह सकता।"

गिरजे के दरवाज़े से घुस आनेवाली औरतों की भीड़ में कुछ इस तरह की बातें हो रही थीं।

(६)

जब अंगूठियां बदलने की रस्म पूरी हो गयी, तो गिरजे के एक कर्मचारी ने गिरजे के मध्य में डेस्क के सामने गुलाबी रंग के रेशमी कपड़े का एक टुकड़ा बिछा दिया। भजन-मण्डली ने बड़ी दक्षता से एक जटिल भजन गाना आरम्भ किया, जिसमें मन्द और तार सप्तक के स्वर एक-दूसरे के बाद उभरते थे। पादरी ने पीछे मुड़कर वर-वधू को बिछे हुए गुलाबी रेशमी कपड़े की ओर संकेत किया। बेशक इन दोनों ने इस रस्म के बारे में अक्सर और बहुत अधिक सुना था कि जो पहले क़ालीन पर पांव रखेगा, वही परिवार का मुखिया होगा, फिर भी इसकी ओर कुछ क़दम बढ़ाते हुए न तो कीटी और न लेविन ने ही इस चीज़ की तरफ़ कोई ध्यान दिया। उन्होंने ऊंची टीका-टिप्पणियां और इस बारे में बहस भी नहीं सुनी कि कुछ के मुताबिक़ लेविन ने क़ालीन पर पहले क़दम रखा और दूसरों के मतानुसार दोनों ने एक साथ ऐसा किया।

एक-दूसरे के साथ शादी के बन्धन में बंधने की उनकी इच्छा तथा यह कि किसी अन्य को तो उन्होंने ऐसा वचन नहीं दिया और ख़ुद अपने को अजीब-से सुनाई देनेवाले उत्तरों के बाद नयी प्रार्थना शुरू हुई। कीटी प्रार्थना के शब्दों का भाव समझने की उत्सुकता से उन्हें सुन रही थी, मगर समझ नहीं पाई। जैसे-जैसे यह रस्म आगे

बढ़ती जाती थी, समारोही वातावरण और उल्लास की भावना उसकी आत्मा को अधिकाधिक अभिभूत करती जाती थी और उसके लिये ध्यान को केन्द्रित करना कठिन होता जा रहा था।

प्रार्थना में कहा जा रहा था – "योनि के फल के लाभ के लिये वे पवित्र जीवन व्यतीत करें और इन्हें बेटे-बेटियों का सुख मिले।" प्रार्थना में इस बात का भी उल्लेख किया गया कि नारी को आदम की पसली से बनाया गया है और "इसलिये पुरुष अपने मां-बाप को छोड़कर अपनी पत्नी से चिपक जायेगा, दो तन एक प्राण हो जायेंगे" तथा "यह एक महान रहस्य" है। आराधना की जा रही थी कि प्रभु इन्हें सन्तान-सुख दें और वैसे ही इनपर कृपा करें, जैसे उन्होंने इसहाक और रेबेका, यूसुफ़, मूसा और ज़िप्पोराह पर की थी तथा ये अपने बच्चों के बच्चे देखें। "यह सब कुछ बहुत अद्भुत है," इन शब्दों को सुनते हुए कीटी सोच रही थी, "इससे भिन्न कुछ हो भी नहीं सकता," और ख़ुशीभरी मुस्कान, जिसने अपने आप ही उसकी ओर देखनेवाले दूसरे लोगों को भी प्रभावित किया, उसके चमकते चेहरे पर खिल उठी।

"पहन लीजिये!" जब पादरी ने उन्हें सेहरे पहनाये, तो लोगों के परामर्श सुनाई दिये और श्चेर्बात्स्की तीन बटनों वाले दस्ताने में कांपते हाथ से कीटी के सिर के काफ़ी ऊपर सेहरा थामे रहा।

"पहन लीजिये!" कीटी मुस्कराते हुए फुसफुसायी।

लेविन ने मुड़कर कीटी की तरफ़ देखा और ख़ुशी की उस चमक से चकित रह गया, जो कीटी के चेहरे पर दिखाई दे रही थी और इस भावना ने अनचाहे ही उसे वशीभूत कर लिया। कीटी की भांति वह भी प्रसन्नता और उल्लास से तरंगित हो गया।

इन दोनों को ईसा के शिष्य का संदेश और आख़िरी पंक्तियों के साथ बड़े डीकन की आवाज़ की गूंज सुनना, जिसकी पराये लोग बड़ी बेसब्री से राह देख रहे थे, बड़ा अच्छा लगा। चपटे प्याले से पानी में मिली गुनगुनी लाल सुरा पीना बहुत रुचा और इससे भी ज़्यादा मज़ा तब आया, जब पादरी ने अपने चोग़े को पीछे हटाकर उनके हाथों को अपने हाथ में लिया और भारी आवाज़ में गायी जानेवाली इस पंक्ति "ईसाया ख़ुशी मनाओ" के साथ इन्हें डेस्क के गिर्द चक्कर

दिलवाने लगा। सेहरे उठाये हुए श्चेर्बात्स्की और चीरिकोव दुल्हन के लटकते दामन में उलझते और किसी कारणवश मुस्कराते तथा खुश होते हुए कभी पीछे रह जाते और कभी पादरी के रुक जाने पर वर-वधू से टकरा जाते। खुशी की लौ ने, जो कीटी के अन्तर में जल उठी थी, गिरजे में उपस्थित सभी लोगों को खुशी का यह रंग प्रदान कर दिया। लेविन को लगा कि उसकी भांति पादरी और डीकन भी मुस्कराना चाहते हैं।

इन दोनों के सिरों पर से सेहरे उतारकर पादरी ने अन्तिम प्रार्थना पढ़ी और युवा दम्पति को बधाई दी। लेविन ने कीटी की ओर देखा। आज तक कभी भी उसे वह ऐसी नहीं लगी थी। सौभाग्य की उस कान्ति से, जो उसके चेहरे पर झलक रही थी, वह बहुत सुन्दर लग रही थी। लेविन का उससे कुछ कहने को मन हुआ, मगर उसे मालूम नहीं था कि रस्म पूरी हो चुकी या नहीं। पादरी ने उसकी यह मुश्किल हल कर दी। अपने दयालु मुंह पर मुस्कान लाकर उसने धीमे-से कहा—"पत्नी को चूमिये और आप पति को," तथा उनके हाथों से मोमबत्तियां ले लीं।

लेविन ने कीटी के मुस्कराते होंठों को सावधानी से चूमा, उसकी ओर अपनी बांह बढ़ा दी और एक नयी तथा अजीब-सी निकटता अनुभव करते हुए गिरजे से बाहर चल दिया। उसे विश्वास नहीं हो रहा था, वह विश्वास करने में असमर्थ था कि यह सब सत्य है। उनकी चकित और झेंपती नज़रों के मिलने पर ही उसे इसका विश्वास हुआ, क्योंकि उसने अनुभव किया कि वे दोनों एक हो चुके हैं।

रात के खाने के बाद ये दोनों गांव के लिये रवाना हो गये।

(७)

आन्ना और व्रोन्स्की तीन महीनों से यूरोप-यात्रा कर रहे थे। वे वेनिस, रोम और नेपल्स हो आये थे और कुछ समय पहले इटली के एक छोटे-से शहर में पहुंचे, जहां कुछ अर्से तक रहना चाहते थे।

बहुत सुन्दर-सा मैनेजर, जिसके तेल लगे घने बालों की मांग गुद्दी से शुरू होती थी, जो फ़ाक कोट तथा चौड़ी, सफ़ेद लॉन क़मीज़

पहने था और जिसके गोल पेट पर सजावटी कुण्डल सहित ज़ंजीर लटक रही थी, जेबों में हाथ डाले अपने सामने खड़े हुए महाशय को तिरस्कार-पूर्वक आंखें सिकोड़कर और कड़ाई से जवाब दे रहा था। प्रवेश-द्वार के दूसरी ओर ज़ीने के पास से पैरों की आहट पाकर बड़ा वेटर उधर मुड़ा और अपने होटल के सबसे अच्छे कमरे किराये पर लेनेवाले रूसी काउंट को देखकर आदरपूर्वक जेब से हाथ बाहर निकाल लिये और सिर झुकाकर यह बताया कि सन्देशवाहक आ चुका है और मकान किराये पर लेने का मामला तय हो गया है। दलाल क़रारनामे पर हस्ताक्षर करने को तैयार था।

"अच्छा! मैं बहुत ख़ुश हूं," व्रोन्स्की ने कहा। "श्रीमती कमरे में हैं या नहीं?"

"वे घूमने गयी थीं, मगर अब लौट आयी हैं," मैनेजर ने जवाब दिया।

व्रोन्स्की ने बड़े किनारों वाला नरम-सा टोप सिर पर से उतारा और पसीने से तर माथे तथा आधे कानों को ढकते, पीछे को संवारे हुए और इस तरह उसकी चांद को छिपानेवाले बालों को रूमाल से पोंछा। अभी तक वहां खड़े और उसकी ओर देखते हुए महाशय पर बेख़्याली से नज़र डालकर उसने जाना चाहा।

"ये सज्जन रूसी हैं और आपके बारे में पूछ रहे थे," मैनेजर ने कहा।

परिचितों से कहीं भी चैन नहीं मिलता, इस झल्लाहट तथा एक ही ढर्रे की ज़िन्दगी में कुछ दिलचस्पी लाने की मिली-जुली भावना से व्रोन्स्की ने कुछ दूर हटकर खड़े हो गये महाशय को एक बार फिर ग़ौर से देखा और एक साथ ही दोनों की आंखें चमक उठीं।

"गोलेनीश्चेव!"

"व्रोन्स्की!"

सचमुच ही यह शाही सैनिक स्कूल के ज़माने का व्रोन्स्की का साथी गोलेनीश्चेव था। स्कूल के दिनों में गोलेनीश्चेव उदारतावादी था, कोई नागरिक पद लेकर उसने स्कूल छोड़ दिया और कहीं भी काम नहीं करता था। स्कूल छोड़ने के बाद दोनों साथी एक-दूसरे से बिल्कुल बिछुड़ गये और बाद में केवल एक बार ही उनकी मुलाक़ात हुई।

उस मुलाक़ात के वक़्त व्रोन्स्की यह समझ गया कि गोलेनीश्चेव ने अपने लिये कोई उच्च बौद्धिक उदारतावादी गतिविधि चुन ली है और इसके परिणामस्वरूप वह व्रोन्स्की के कार्य-कलापों तथा व्यवसाय को तिरस्कार की दृष्टि से देखना चाहता था। इसलिये व्रोन्स्की ने भेंट के समय गोलेनीश्चेव के प्रति वह रूखा और गर्वीला रुख अपनाया, जो वह अपनाने में समर्थ था और जिसका भाव यह था – "आपको मेरा जीवन-ढंग पसन्द है या नहीं, मुझे इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। अगर आप मुझसे वास्ता रखना चाहते हैं, तो आपको मेरा आदर करना होगा।" व्रोन्स्की के इस अन्दाज़ के प्रति गोलेनीश्चेव तिरस्कार-पूर्वक उदासीन रहा। इसलिये ऐसा प्रतीत हो सकता था कि इस भेंट से उनके बीच की दूरी और बढ़ जायेगी। किन्तु अब एक-दूसरे को पहचानकर वे दोनों ख़ुशी से खिल और चिल्ला उठे। व्रोन्स्की को कभी यह आशा नहीं थी कि गोलेनीश्चेव से मिलने पर उसे इतनी अधिक ख़ुशी होगी, किन्तु सम्भवतः वह ख़ुद यह नहीं जानता था कि उसे कितनी अधिक ऊब महसूस हो रही थी। वह पिछली भेंट की अप्रिय अनुभूति को भूल गया और निश्छलता तथा ख़ुशी से चमकते चेहरे के साथ उसने अपने इस भूतपूर्व साथी की तरफ़ हाथ बढ़ा दिया। गोलेनीश्चेव के पहले के चिन्तातुर चेहरे पर भी ख़ुशी का ऐसा ही भाव आ गया।

"कितनी ख़ुशी हुई है मुझे तुमसे मिलकर!" व्रोन्स्की ने मैत्रीपूर्ण ढंग से मुस्कराते और अपने मज़बूत सफ़ेद दांत दिखाते हुए कहा।

"मैंने सुना कि व्रोन्स्की यहां आया है, लेकिन कौन-सा – नहीं जानता था। बहुत, बहुत ही ख़ुश हूं मैं!"

"आओ, भीतर चलें। तो तुम क्या कर रहे हो?"

"मुझे दूसरा साल चल रहा है यहां रहते हुए। काम कर रहा हूं।"

"ओह!" व्रोन्स्की ने दिलचस्पी से कहा। "आओ, भीतर चलें।"

रूसी व्यक्ति जब नौकर से कुछ छिपाना चाहता है, तो वह फ़्रांसीसी बोलता है। इस आम आदत के मुताबिक़ व्रोन्स्की ने रूसी में बात करने के बजाय फ़्रांसीसी में बोलना शुरू कर दिया।

"तुम कारेनिना से परिचित हो? हम दोनों साथ-साथ यात्रा कर रहे हैं। मैं उसी के पास जा रहा हूं," गोलेनीश्चेव के चेहरे को ग़ौर से देखते हुए उसने फ़्रांसीसी में कहा।

"अच्छा। मुझे मालूम नहीं था" (यद्यपि वह जानता था), गोलेनीश्चेव ने उदासीनता से उत्तर दिया। "बहुत दिन हो गये क्या तुम्हें यहां आये हुए?" उसने इतना और पूछ लिया।

"मुझे? चौथा दिन है," अपने साथी के चेहरे को एक बार फिर ध्यान से देखते हुए व्रोन्स्की ने उत्तर दिया।

"हां, वह सलीके का आदमी है और इस मामले के प्रति उसका वैसा ही रवैया है जैसा होना चाहिये," गोलेनीश्चेव के चेहरे के भाव और उसके बात बदलने के महत्त्व को समझते हुए व्रोन्स्की ने अपने आपसे कहा। "आन्ना से उसका परिचय कराया जा सकता है, इस मामले की ओर उसका वैसा ही रवैया है, जैसा होना चाहिये।"

आन्ना के साथ विदेश-यात्रा के इन तीन महीनों के दौरान नये लोगों के साथ भेंट होने पर व्रोन्स्की हमेशा अपने से यह सवाल करता था कि आन्ना के साथ उसके सम्बन्धों के बारे में इस नये व्यक्ति का क्या रवैया है और मर्दों में अक्सर वैसी ही समझ-बूझ का परिचय मिलता था, जैसा कि होना चाहिये था। किन्तु यदि उससे और उनसे, जिनका इस मामले के प्रति सही रवैया था, यह पूछा जाता कि इस सही रवैये का वे क्या अर्थ समझते हैं, तो उन्हें इसका जवाब देने में बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ता।

व्रोन्स्की जिन लोगों को यह श्रेय देता था कि वे इस मामले को "सही ढंग" से समझते हैं, वे वास्तव में इसे नहीं समझते थे और कुल मिलाकर शिष्ट लोगों जैसा वही व्यवहार करते थे, जो वे जीवन के सभी जटिल और हल न होनेवाले प्रश्नों के मामले में करते हैं। वे किसी भी तरह के संकेतों और अप्रिय प्रश्नों से बचते हुए शिष्ट व्यवहार का परिचय देते। वे ऐसा दिखावा करते कि बहुत अच्छी तरह इस स्थिति का महत्त्व और अर्थ समझते हैं, इसे स्वीकार और इसका अनुमोदन भी करते हैं, किन्तु यह सब स्पष्ट करना अनुचित और बेकार मानते हैं।

व्रोन्स्की ने तत्काल यह अनुमान लगा लिया कि गोलेनीश्चेव ऐसे ही लोगों में से है और इसलिये उसके मिलने पर उसे दुगुनी खुशी हुई। व्रोन्स्की जब उसे कारेनिना के पास ले गया, तो गोलेनीश्चेव ने वैसा ही व्यवहार किया, जैसा कि व्रोन्स्की चाहता था। किसी भी तरह

के प्रयास के बिना वह ऐसी बातचीत से बचता रहा, जिससे झेंप महसूस हो सकती हो।

गोलेनीश्चेव पहले से आन्ना को नहीं जानता था और उसकी सुन्दरता तथा उसकी उस सहजता से और भी चकित रह गया, जिससे वह अपनी स्थिति को स्वीकार करती थी। व्रोन्स्की उसे साथ लेकर जब उसके कमरे में गया, तो उसके चेहरे पर लाली दौड़ गयी और उसके निश्छल तथा सुन्दर चेहरे की यह लालिमा उसे बहुत रुची। किन्तु उसे सबसे ज़्यादा यह बात अच्छी लगी कि उसने उसी क्षण, मानो जान-बूझकर कि पराये व्यक्ति के सामने किसी प्रकार की ग़लतफ़हमी न हो, व्रोन्स्की को केवल अलेक्सेई कहकर सम्बोधित किया और यह बताया कि वे किराये पर लिये हुए एक घर में, जिसे यहां पालाज़्ज़ो कहा जाता है, जाकर रहनेवाले हैं। अपनी परिस्थिति के बारे में यह सीधा-सादा रवैया गोलेनीश्चेव को अच्छा लगा। आन्ना के ख़ुशमिज़ाजी के इस उत्साहपूर्ण रंग-ढंग को देखते, कारेनिन और व्रोन्स्की से परिचित होने के कारण उसे लगा कि वह आन्ना को अच्छी तरह समझता है। उसे लगा कि वह उस चीज़ को समझता है, जिसे आन्ना किसी तरह नहीं समझती थी, यानी पति को दुख देकर, उसे और बेटे को छोड़कर तथा अपनी नेकनामी गंवाकर वह कैसे इतनी उत्साहपूर्ण, ख़ुश और सौभाग्यशालिनी हो सकती थी।

"गाइड में उसका ज़िक्र है," गोलेनीश्चेव ने इस मकान के बारे में कहा। "वहां बढ़िया तिन्तोरेत्तो है। अपने अन्तिम दिनों का।"

"एक बात कहूं? मौसम बड़ा सुहाना है, आइये एक बार फिर वहां चलकर उसे देख लें," व्रोन्स्की ने आन्ना को सम्बोधित करते हुए कहा।

"बड़ी ख़ुशी से, मैं अभी टोपी पहनकर आती हूं। आपका कहना है कि गर्मी है?" आन्ना ने दरवाज़े के क़रीब रुककर व्रोन्स्की को प्रश्नसूचक दृष्टि से देखते हुए कहा। फिर से उसके चेहरे पर सुर्ख़ी दौड़ गयी।

आन्ना की दृष्टि से व्रोन्स्की समझ गया कि वह यह नहीं जानती कि गोलेनीश्चेव के साथ उसका कैसे सम्बन्ध रखने का इरादा है और चिन्तित है कि उसने वैसा ही व्यवहार किया है या नहीं, जैसा वह चाहता था।

व्रोन्स्की ने देर तक प्यार भरी नज़र से उसकी तरफ़ देखा।

"नहीं, बहुत गर्मी नहीं है," उसने जवाब दिया।

आन्ना को लगा कि वह सब कुछ समझ गयी है और मुख्य बात यह है कि व्रोन्स्की उससे खुश है। वह उसकी ओर देखकर मुस्कराई और तेज़ क़दमों से बाहर चली गयी।

दोनों मित्रों ने एक-दूसरे की आंखों में झांका और दोनों झेंप गये, मानो गोलेनीश्चेव स्पष्टतः आन्ना की प्रशंसा करते हुए कुछ कहना चाहता था, मगर नहीं जानता था कि क्या कहे, जबकि व्रोन्स्की भी ऐसा चाहता था और इसी चीज़ से डरता था।

"तो यह मामला है," व्रोन्स्की ने कोई बात शुरू करने के लिये कहना आरम्भ किया। "तो तुम यहां बस गये हो? तो तुम अपना पहले वाला काम कर रहे हो?" उसने यह याद करते हुए कि उसे बताया गया था कि गोलेनीश्चेव कुछ लिखता है, कहा।

"हां, मैं 'दो सिद्धान्त' पुस्तक का दूसरा भाग लिख रहा हूं," ऐसा पूछा जाने पर खुशी से फड़कते हुए गोलेनीश्चेव ने उत्तर दिया, "मेरा मतलब है कि अगर सही तौर पर कहा जाये, तो मैं अभी लिख नहीं रहा हूं, बल्कि तैयारी कर रहा हूं, सामग्री जुटा रहा हूं। यह पुस्तक कहीं अधिक विस्तृत होगी, लगभग सभी पक्षों को समेट लेगी। हमारे यहां रूस में लोग यह नहीं समझना चाहते कि हम बेज़नतीनी सभ्यता के उत्तराधिकारी हैं," उसने लम्बा और जोशीला स्पष्टीकरण शुरू कर दिया।

व्रोन्स्की को शुरू में इस कारण अटपटापन महसूस हुआ कि वह 'दो सिद्धान्त' के पहले भाग के बारे में भी कुछ नहीं जानता था और लेखक उसकी विख्यात रचना के रूप में चर्चा कर रहा था। किन्तु बाद में गोलेनीश्चेव जब अपने विचार प्रस्तुत करने और व्रोन्स्की उन्हें समझने लगा, तो उसे दिलचस्पी अनुभव होने लगी, क्योंकि गोलेनीश्चेव अच्छे ढंग से बोल रहा था। किन्तु व्रोन्स्की को उस खीझ भरी उत्तेजना के कारण, जिससे वह अपने विषय की चर्चा कर रहा था, आश्चर्य तथा दुख हो रहा था। वह जितना अधिक आगे बढ़ता जाता था, उसकी आंखों में गुस्से की आग उतनी ही बढ़ती जाती थी, उतनी अधिक बेचैनी से वह काल्पनिक प्रतिद्वन्द्वियों का विरोध करता था,

उसके चेहरे का भाव उतना ही अधिक चिन्तापूर्ण और चोट खाया-सा होता जाता था। दुबले-पतले, ज़िन्दादिल, दयालु और दूसरों की भलाई करनेवाले लड़के के रूप में गोलेनीश्चेव की याद करते हुए, जो हमेशा शाही सैनिक स्कूल की पढ़ाई में सबसे आगे रहता था, व्रोन्स्की किसी तरह उसकी इस झल्लाहट का कारण नहीं समझ पा रहा था और उसे यह अच्छी भी नहीं लग रही थी। उसे ख़ास तौर पर यह पसन्द नहीं था कि ऊंचे समाज और अच्छे वातावरण में जन्मा-पला गोलेनीश्चेव मामूली से क़लम घसीटनेवालों की क़तार में जा खड़ा हुआ था, जो उसमें खीझ पैदा करते थे और वह उनपर झल्लाता था। क्या यह इस लायक़ था? व्रोन्स्की को यह पसन्द नहीं था, मगर इसके बावजूद यह महसूस करते हुए कि गोलेनीश्चेव दुखी है, उसे उसपर दया आई। उसके भावपूर्ण और ख़ासे सुन्दर चेहरे पर दुख, लगभग पागलपन की सी हालत तब भी नज़र आ रही थी, जब आन्ना के कमरे में वापस आने की ओर भी उसका ध्यान नहीं गया और वह जल्दी-जल्दी तथा जोश में अपने विचारों को व्यक्त करता रहा।

आन्ना जब टोपी और झब्बा पहने और अपने सुन्दर हाथ की फुर्तीली गतिविधि से छतरी से खिलवाड़ करती हुई व्रोन्स्की के पास आकर रुकी, तो उसने राहत की सांस लेते हुए अपने चेहरे पर जमी तथा शिकायत करती हुई गोलेनीश्चेव की नज़रों से अपनी नज़रें हटायीं और अपनी अतीव सुन्दर तथा जीवन और ख़ुशी से भरपूर सहेली की तरफ़ नूतन प्यार की दृष्टि से देखा। गोलेनीश्चेव कठिनाई से सम्भला और शुरू में उदास तथा मुरझाया-सा रहा, किन्तु सभी के प्रति स्नेहपूर्ण आन्ना (जैसी कि वह इस समय थी) अपने सीधे-सरल और प्रसन्नतापूर्ण व्यवहार से उसे रंग में ले आई। विभिन्न विषयों पर बातचीत चलाने की कोशिश करने के बाद आख़िर आन्ना ने चित्रकारी की चर्चा शुरू की, जिसके बारे में वह बहुत अच्छे ढंग से बोलता था, और आन्ना ध्यान से उसकी बातें सुनती रही। वे पैदल ही किराये पर लिये जानेवाले घर तक पहुंच गये और उन्होंने उसे अच्छी तरह देखा।

"मुझे एक बात की बड़ी ख़ुशी है," आन्ना ने वापस जाते समय गोलेनीश्चेव से कहा।

"अलेक्सेई का atelier* अच्छा होगा। तुम अवश्य ही वह कमरा ले लेना," उसने व्रोन्स्की से रूसी में और जान-बूझकर "तुम" कहा, क्योंकि वह समझ चुकी थी कि उनके एकान्त जीवन में गोलेनीश्चेव निकट का व्यक्ति हो जायेगा और उसके सामने कुछ छिपाने की ज़रूरत नहीं रहेगी।

"तुम क्या चित्रकारी करते हो?" गोलेनीश्चेव ने जल्दी से व्रोन्स्की को सम्बोधित करते हुए पूछा।

"हां, मैं बहुत पहले ऐसा करता था और अब फिर से उसे शुरू कर दिया है," व्रोन्स्की ने शर्म से लाल होते हुए कहा।

"बहुत प्रतिभा है उसमें," आन्ना ने ख़ुशी भरी मुस्कान के साथ कहा। "ज़ाहिर है कि मैं इस मामले में पारखी नहीं हूं, किन्तु परख रखनेवालों ने भी ऐसा ही ख़्याल ज़ाहिर किया है।"

(८)

अपनी स्वतन्त्रता और तीव्र स्वास्थ्यलाभ के पहले समय में आन्ना ने अपने को अक्षम्य रूप से सुखी और जीवन की ख़ुशी से ओत-प्रोत अनुभव किया। पति के दुर्भाग्य की स्मृति उसके सौभाग्य को विषाक्त नहीं करती थी। यह स्मृति एक ओर तो इतनी भयानक थी कि उसके बारे में सोचा ही नहीं जा सकता था और दूसरी ओर, पति के दुर्भाग्य ने उसे इतना सौभाग्य प्रदान किया था कि पश्चात्ताप नहीं हो सकता था। बीमारी के बाद उसके साथ जो कुछ हुआ – पति के साथ सुलह, सम्बन्ध-विच्छेद, व्रोन्स्की के घायल होने का समाचार, उसका घर पर आना, तलाक़ की तैयारी, पति का घर छोड़ना, बेटे से विदा लेना – उसे ये सभी बातें तेज़ ज्वर की भयानक नींद-सी प्रतीत हुईं और व्रोन्स्की के साथ विदेश में अकेली रह जाने पर ही मानो वह जागी। पति के साथ की गयी बुराई की याद उसके दिल में ऐसी घृणा-सी पैदा करती, जैसी डूबता हुआ वह आदमी अनुभव करता है, जो अपने साथ चिपक जानेवाले आदमी को झकझोर कर अपने से अलग कर देता है। वह

---

* स्टूडियो। (फ़्रांसीसी)

आदमी डूब गया। निश्चय ही यह बहुत बुरा काम था, किन्तु अपने बचाव का यही एक साधन था और इन भयानक तफ़सीलों को याद न करना ही बेहतर था।

पति को छोड़ने के फ़ौरन बाद ही अपने व्यवहार के सम्बन्ध में दिल को तसल्ली देनेवाला एक विचार आन्ना के मन में आया था, और अब जब वह बीती हुई सभी बातों को याद कर रही थी, तो यह विचार भी उसे याद हो आया। "मैंने निश्चय ही उस व्यक्ति को दुख दिया है, किन्तु मैं उसके दुर्भाग्य से लाभ नहीं उठाना चाहती हूं," वह सोचती थी। "मैं भी दुखी हूं और दुखी रहूंगी। मैं उससे वंचित हो रही हूं, जो मुझे सबसे अधिक प्रिय था – अपने नेक नाम और बेटे से वंचित हो गयी हूं। मैंने बुराई की है और इसलिये सुख नहीं चाहती, तलाक़ नहीं चाहती और लोक-अपमान तथा बेटे से जुदाई की पीड़ा सहूंगी।" किन्तु आन्ना ने चाहे कितने भी सच्चे मन से पीड़ित होना चाहा, वह पीड़ित नहीं हो पायी। बेइज़्ज़ती किसी तरह की नहीं हुई। विदेश में वे रूसी महिलाओं से दूर रहते थे, उस सूझ-बूझ से, जो इन दोनों के पास पर्याप्त मात्रा में थी, वे कभी भी अपने को अटपटी स्थिति में नहीं डालते थे और हर जगह ऐसे लोगों से मिलते थे, जो यह दिखावा करते थे कि जितना वे ख़ुद समझते हैं, उससे भी ज़्यादा अच्छी तरह वे उनकी आपसी स्थिति को समझते हैं। शुरू में बेटे की जुदाई ने भी, जिसे वह प्यार करती थी, उसे परेशान नहीं किया। बच्ची, व्रोन्स्की से हुई बेटी, बहुत प्यारी थी, और चूंकि उसके पास सिर्फ़ यही बच्ची रह गयी थी, इसलिये उसके साथ आन्ना को इतना अधिक लगाव हो गया था कि बेटे की उसे बहुत कम याद आती थी।

जीने की इच्छा, जो उसके स्वस्थ होने से बढ़ गयी थी, इतनी अधिक तीव्र थी और जीवन की परिस्थितियां इतनी नयी और मधुर थीं कि आन्ना अपने को अक्षम्य रूप से सुखी अनुभव करती थी। वह व्रोन्स्की को जितना अधिक जानती जा रही थी, उसे उतना ही अधिक प्यार करती थी। वह उसे ख़ुद उसके लिये और अपने प्रति उसके प्यार के लिये भी प्यार करती थी। उसपर पूर्णाधिकार उसकी स्थायी ख़ुशी का स्रोत था। उसकी निकटता आन्ना को सदा सुखद लगती। व्रोन्स्की के

चरित्र के सभी लक्षण, जिन्हें वह अधिकाधिक जानती जा रही थी, उसे इतने अधिक प्यारे लगते थे कि बयान से बाहर। उसकी शक्ल-सूरत, जो असैनिक पोशाक में कुछ बदल गयी थी, उसके लिये वैसे ही आकर्षक थी, जैसे किसी प्रेम-दीवानी नवयुवती के लिये हो सकती है। वह जो कुछ भी कहता, सोचता और करता, आन्ना को उस सबमें कुछ महानता और उदात्तता की अनुभूति होती। व्रोन्स्की के प्रति अपने प्रशंसाभाव से वह बहुधा स्वयं भय अनुभव करती – वह उसमें कुछ असुन्दर ढूंढ़ती, मगर ढूंढ़ न पाती। उसके सम्मुख अपनी तुच्छता की चेतना प्रदर्शित करने का वह साहस नहीं कर सकती थी। आन्ना को लगता था कि ऐसा जान जाने पर वह जल्द ही उसे प्यार करना छोड़ देगा, और आन्ना उसका प्यार खोने से अधिक अन्य किसी चीज़ से नहीं डरती थी, यद्यपि उसके ऐसे भय के लिये कोई कारण नहीं था। किन्तु वह अपने प्रति उसके व्यवहार के लिये आभारी हुए बिना तथा यह ज़ाहिर किये बिना नहीं रह सकती थी कि वह इसे कितना मूल्यवान मानती है। उसके मतानुसार राजकीय क्षेत्र में प्रमुख भूमिका अदा कर सकने की क्षमता रखनेवाले व्रोन्स्की ने उसकी ख़ातिर अपनी महत्त्वाकांक्षा को त्याग दिया था और इसके लिये कभी ज़रा-सा अफ़सोस ज़ाहिर नहीं किया था। वह पहले की तुलना में आन्ना के साथ अधिक प्यार और आदर से पेश आता था और उसे हर समय इस बात का ध्यान रहता था कि आन्ना अपनी स्थिति के अटपटेपन को कभी महसूस न करे। वह, जो इतना दबंग व्यक्ति था, न केवल आन्ना की बात को कभी नहीं काटता था, बल्कि अपनी मनमर्ज़ी भी नहीं करता था तथा ऐसे लगता था कि आन्ना की इच्छा का अनुमान लगाने का ही यत्न करता रहता था। आन्ना इसको ऊंचा आंके बिना नहीं रह सकती थी, यद्यपि उसके प्रति उसके इतना अधिक ध्यान देने का तनाव, उसके द्वारा इतनी अधिक चिन्ता करने का वातावरण, उसके लिये कभी-कभी बोझिल हो जाता था।

इसी बीच व्रोन्स्की उस चाह की पूर्ण तृप्ति के बावजूद, जिसके लिये वह इतने अधिक समय से इच्छुक रहा था, पूरी तरह सुखी नहीं था। उसने जल्द ही यह महसूस किया कि उसकी इच्छा की पूर्ति से उसे सुख के उस पर्वत की, जिसकी उसने आशा की थी, एक कणिका

ही प्राप्त हुई है। इस इच्छा-पूर्त्ति ने उसे लोगों की यह शाश्वत भूल स्पष्ट कर दी, जो यह मानते हैं कि इच्छाओं की पूर्त्ति में ही सुख निहित है। आन्ना के साथ अपना भाग्य जोड़ लेने और असैनिक पोशाक पहनने पर शुरू में उसने आज़ादी के उस सारे मज़े को अनुभव किया, जिससे वह पहले अपरिचित था, और प्यार की स्वतन्त्रता को भी। उसने ख़ुशी महसूस की, मगर कुछ देर को ही। जल्द ही उसने अनुभव किया कि उसकी आत्मा में इच्छाओं की इच्छा ने, ऊब ने सिर उठा लिया है। अपनी इच्छा के विरुद्ध वह हर क्षणिक सनक को चाह और लक्ष्य मानने लगा। हर दिन के सोलह घण्टों को किसी न किसी चीज़ में लगाना ज़रूरी था, चूंकि वे विदेश में पूरी आज़ादी का जीवन बिताते थे और उस सामाजिक जीवन के घेरे से बाहर थे, जो पीटर्सबर्ग में उन्हें व्यस्त रखता था। विदेश में अकेले यात्रायें करते हुए उसने पहले जो मज़े लूटे थें, अब उनका तो ख़्याल तक भी दिमाग़ में नहीं लाया जा सकता था। कारण कि कुछ परिचितों के साथ रात को देर तक भोजन करने के ऐसे एक प्रयास के फलस्वरूप आन्ना अप्रत्याशित रूप से इस अपराध की तुलना में कहीं अधिक उदास और दुखी हुई थी। उन दोनों की स्थिति की अनिश्चितता के कारण स्थानीय लोगों और रूसियों के साथ भी मिला-जुला नहीं जा सकता था। जहां तक दर्शनीय स्थानों-वस्तुओं का सम्बन्ध था, तो न केवल वह उन्हें पहले देख चुका था, बल्कि रूसी और समझदार व्यक्ति होने के नाते उन्हें वह महत्त्व नहीं दे सकता था, जो अंग्रेज़ लोग देते हैं और जिसे समझना आसान नहीं।

जैसे भूखा पशु चारा पाने की उम्मीद से हर चीज़ पर झपटता है, वैसे ही व्रोन्स्की भी किसी तरह की सजगता के बिना कभी तो राजनीति, कभी किताबों और कभी तस्वीरों की तरफ़ लपकता।

चूंकि जवानी के दिनों से चित्रकारी की तरफ़ उसका रुझान था और चूंकि वह यह नहीं जानता था कि अपना पैसा कहां ख़र्च करे, उसने रेखाचित्र एकत्रित करना आरम्भ कर दिया था और इस तरह चित्रकारी को चुना तथा उसी पर अपनी अतृप्त इच्छाओं का वह भण्डार ख़र्च करने लगा, जो तृप्ति की मांग करती थीं।

व्रोन्स्की में कला को समझने और उसकी बिल्कुल सही तथा सुरुचिपूर्ण नक़ल करने की क्षमता थी, और इसलिये उसने सोचा कि

उसमें चित्रकार के लिये अपेक्षित गुण विद्यमान हैं। कुछ समय तक इस मामले में डांवांडोल रहकर कि वह चित्रकारी की धार्मिक, ऐतिहासिक या यथार्थवादी शैली चुने, उसने चित्रकारी शुरू कर दी। वह इन सभी शैलियों को समझता था और किसी से भी प्रेरित हो सकता था, किन्तु यह कल्पना तक करने में असमर्थ था कि चित्रकारी की शैलियों को जाने बिना प्रत्यक्षतः उसी से प्रेरणा पा सकता था, जो उसकी आत्मा में था और उसे इस बात की चिन्ता करने की ज़रूरत नहीं थी कि उसकी चित्रकारी किसी शैली के अन्तर्गत आती है या नहीं। पर चूंकि वह यह नहीं जानता था और जीवन से सीधे प्रेरणा न लेकर कला के रूप में मूर्त्त हुए जीवन से अप्रत्यक्ष प्रेरणा पाता था, इसलिये बहुत जल्दी और आसानी से प्रेरित हो जाता था तथा जो चित्रित करता था उसे ऐसी ही तीव्रता और सुगमता से पूरा कर लेता था और जिस शैली की नक़ल करना चाहता था, उसके चित्र उससे मिलते-जुलते होते थे।

अन्य सभी शैलियों की तुलना में उसे सजीली और प्रभावपूर्ण फ़ांसीसी शैली ज़्यादा पसन्द थी, और उसने इसी शैली में इतालवी पोशाक पहने हुए आन्ना का छविचित्र बनाना शुरू किया। ख़ुद उसे और अन्य सभी को, जिन्होंने यह छविचित्र देखा, यह बहुत सफल प्रतीत हुआ।

(९)

पलस्तर की ऊंची छतों, दीवारों पर चित्रकारी, फ़र्शों पर पच्चीकारी, ऊंची-ऊंची खिड़कियों पर पीले रंग के भारी-भारी रेशमी पर्दों, ताकों और अंगीठियों पर फूलदानों, नक़्क़ाशीदार दरवाज़ों और चित्रों से सजे अंधेरे-उदास हॉलों वाले इस पुराने और उपेक्षित पालाज़्ज़ो में आने के बाद से यह मकान ही अपने बाहरी रंग-रूप से व्रोन्स्की के दिल में यह मधुर ग़लतफ़हमी पैदा करता था कि वह रूसी जागीरदार और नौकरी के बिना ऊंचे पद के दरबारी होने की तुलना में कहीं अधिक प्रबुद्ध कला-प्रेमी और कला-संरक्षक तथा ख़ुद एक मामूली-सा चित्रकार है, जिसने अपनी प्रेमका के लिये दुनिया, सम्बन्ध-सम्पर्कों और महत्त्वाकांक्षाओं से मुंह फ़ेर लिया है।

पालाज़्ज़ो में आने के बाद व्रोन्स्की ने जो भूमिका अपनाई थी, वह पूरी तरह सफल रही और गोलेनीश्चेव के ज़रिये कुछ दिलचस्प लोगों से जान-पहचान हो जाने पर शुरू में उसने अपने को शान्त अनुभव किया। चित्रकारी के इतालवी प्रोफ़ेसर की देख-रेख में वह प्रकृति-चित्रण और मध्ययुगीन इतालवी जीवन का अध्ययन करता था। पिछले कुछ अर्से में मध्ययुगीन जीवन में व्रोन्स्की की रुचि इतनी अधिक बढ़ गयी थी कि वह उस ज़माने के मुताबिक़ टोपी पहनने और कंधे के पीछे झब्बा लटकाने लगा और ये दोनों चीज़ें उसे बहुत जंचती थीं।

"हम यहां रहते हैं और हमें कुछ भी ख़बर नहीं," व्रोन्स्की ने एक दिन सुबह के समय अपने यहां गोलेनीश्चेव के आने पर उससे कहा। "तुमने मिख़ाइलोव का चित्र देखा है?" उसने सुबह ही प्राप्त हुआ रूसी अख़बार उसे देते और उसी शहर में रहनेवाले रूसी चित्रकार के बारे में लेख की ओर इंगित करते हुए कहा। इस चित्रकार ने वह चित्र पूरा कर लिया था, जिसकी बहुत पहले से चर्चा हो रही थी और जिसे पहले से ही ख़रीदा जा चुका था। लेख में सरकार और अकादमी की इस बात के लिये भर्त्सना की गयी थी कि इतने अच्छे चित्रकार को किसी भी तरह का प्रोत्साहन और सहायता नहीं दी गयी थी।

"उसका चित्र देखा है," गोलेनीश्चेव ने उत्तर दिया। "ज़ाहिर है कि उसमें प्रतिभा है, मगर उसकी कला-दिशा बिल्कुल ग़लत है। ईसा और धार्मिक चित्रकला के प्रति उसका वही इवानोव-श्त्राउस-रेनान वाला रवैया है।"

"चित्र का विषय क्या है?" आन्ना ने पूछा।

"पीलातुस के सम्मुख ईसा। ईसा को नई कला-शैली के पूरे यथार्थवाद से यहूदी के तौर पर प्रस्तुत किया गया है।"

चित्र की विषय-वस्तु के प्रश्न से गोलेनीश्चेव अपने मनपसन्द क्षेत्र में आ गया और अपने विचार प्रकट करने लगा –

"मेरी समझ में नहीं आता कि कैसे ये लोग ऐसी भयानक भूल कर सकते हैं। पुराने महान चित्रकारों की कृतियों में ईसा पहले ही एक निश्चित रूप पा चुके हैं। इसलिये अगर वे भगवान को नहीं, बल्कि एक क्रान्तिकारी या बुद्धिमान व्यक्ति को चित्रित करना चाहते

हैं, तो इतिहास से सुकरात, फ़्रैंकलिन या शार्लोते कोर्दे को ले सकते हैं, लेकिन ईसा को नहीं। वे उसी व्यक्ति को कला के लिये चुनते हैं, जिसे कलाकृति के हेतु नहीं चुनना चाहिये और फिर ..."

"क्या यह सच है कि मिख़ाइलोव अत्यधिक ग़रीबी की ज़िन्दगी बिता रहा है?" व्रोन्स्की ने यह सोचते हुए पूछा कि रूसी कला-संरक्षक के नाते उसे चित्रकार की मदद करनी चाहिये, चाहे उसका चित्र अच्छा हो या बुरा।

"शायद ही। वह बहुत बढ़िया छविचित्रकार है। आपने उसके द्वारा बनाया गया वासीलचिकोवा का चित्र देखा है न? किन्तु लगता है कि वह और अधिक छविचित्र नहीं बनाना चाहता और इसलिये सम्भव हो सकता है कि तंगदस्ती में हो। मैं कहता हूं कि ..."

"क्या उससे आन्ना अर्कादयेव्ना का छविचित्र बनाने के लिये अनुरोध नहीं किया जा सकता?" व्रोन्स्की ने पूछा।

"मेरा छविचित्र किसलिये?" आन्ना ने पूछा। "तुम्हारे द्वारा बनाये गये मेरे छविचित्र के बाद मैं अपना और छविचित्र नहीं चाहती। आनी" (अपनी बिटिया को वह ऐसे ही बुलाती थी) "का छविचित्र बनवाना बेहतर होगा। वह रही हमारी बिटिया," उसने खिड़की में से सुन्दर इतालवी धाय की ओर देखते हुए कहा, जो बच्ची को बाग़ में ले जा रही थी, और उसी समय उसने व्रोन्स्की पर चोरी-छिपे नज़र डाली। सुन्दर इतालवी धाय, व्रोन्स्की जिसके सिर का चित्र बना रहा था, आन्ना के जीवन की एकमात्र गुप्त कसक थी। उसका चित्र बनाते हुए व्रोन्स्की ने उसकी सुन्दरता और मध्ययुगीनता की प्रशंसा की थी। आन्ना अपने आपसे यह स्वीकार करने का साहस नहीं कर पा रही थी कि वह इस धाय से ईर्ष्या करने से डरती थी और इसीलिये उसके साथ विशेष दयालुता से पेश आती थी तथा उसे और उसके छोटे-से बेटे को लाड़ से बिगाड़ती थी।

व्रोन्स्की ने भी खिड़की से बाहर और आन्ना की आंखों में झांका और उसी क्षण गोलेनीश्चेव को सम्बोधित करते हुए पूछा –

"तुम मिख़ाइलोव को जानते हो?"

"मैं उससे मिला हूं। वह सनकी और बिल्कुल अनपढ़ आदमी है। उन नये, उजड्ड लोगों में से है, जो आजकल देखने को मिलते

हैं, उन स्वतन्त्र विचार वालों में से है, जो d'emblée* अनास्था, नास्तिकवाद और भौतिकवाद की धारणाओं से शिक्षित हैं। पहले ऐसा होता था," गोलेनीश्चेव इस बात की ओर ध्यान दिये बिना अथवा ध्यान न देना चाहकर कि आन्ना और व्रोन्स्की भी कुछ कहना चाहते हैं, कहता गया, "पहले स्वतन्त्र विचारों वाला व्यक्ति वह होता था, जो धर्म, क़ानून और नैतिकता की भावनाओं के अनुरूप शिक्षा पाता था और आन्तरिक संघर्ष तथा श्रम से स्वतन्त्र विचारों की सीमा तक पहुंचता था। किन्तु अब नये ढंग के जन्मजात स्वतन्त्र विचारों वाले लोग सामने आते हैं, जो इतना सुने बिना ही ऐसे बन जाते हैं कि धार्मिक नैतिकता के नियम भी होते थे, कि अधिकारी भी होते थे, बल्कि जो सभी कुछ से इन्कार करने की धारणाओं से यानी जंगलियों की तरह बड़े होते हैं। वह भी ऐसा ही है। लगता है कि वह मास्को के किसी दरबारी नौकर-चाकर का बेटा है और उसे किसी तरह की तालीम नहीं मिली। अकादमी में आने और ख्याति पाने के बाद एक समझदार आदमी के नाते उसने शिक्षित होना चाहा। इसके लिये उसने उस चीज़ की तरफ़ ध्यान दिया, जो उसे शिक्षा-स्रोत प्रतीत हुआ यानी पत्र-पत्रिकाओं की तरफ़। पुराने ज़माने में शिक्षित होने का इच्छुक व्यक्ति, मान लो कोई फ़्रांसीसी, यदि ऐसा करना चाहता, तो सारे क्लासिकल लेखकों, धर्मशास्त्रियों , त्रासदी-लेखकों, इतिहासज्ञों और दर्शनशास्त्रियों को पढ़ता और इसके लिये उसे कितना अधिक मानसिक श्रम करना पड़ता। लेकिन अब उसने नास्तिकवादी साहित्य को उठा लिया, नास्तिकवाद के पूरे सार को जल्दी से समझ लिया और बस, शिक्षित हो गया। इतना ही नहीं – बीस साल पहले उसे इस साहित्य में अधिकारियों और सदियों पुराने दृष्टिकोणों के साथ संघर्ष के चिह्न दिखाई देते और उसने इस संघर्ष से समझ लिया होता कि कभी कोई दूसरा दृष्टिकोण भी था। किन्तु अब तो उसका सीधे ऐसे साहित्य से वास्ता पड़ता है, जो पुराने विचारों का खण्डन भी नहीं करता और साफ़-साफ़ यही कहता है – évolution,** प्राकृतिक चयन और अस्तित्व

* एकदम। (फ़्रांसीसी)

** विकासक्रम। (फ़्रांसीसी)

के लिये संघर्ष के सिवा कुछ भी नहीं। मैंने अपने लेख में..."

"एक बात कहूं," आन्ना ने उसे टोका, जो काफ़ी देर से बड़ी सावधानी से व्रोन्स्की की आंखों में झांक रही थी और यह जानती थी कि व्रोन्स्की को इस चित्रकार की शिक्षा में कोई दिलचस्पी नहीं है और वह केवल उसकी मदद करने के लिये उससे छविचित्र बनवाना चाहता है। "एक बात कहूं?" आन्ना ने गोलेनीश्चेव को दृढ़तापूर्वक टोक दिया। "आइये, उसके यहां चलें!"

गोलेनीश्चेव चौंका और ख़ुशी से राज़ी हो गया। पर चूंकि चित्रकार का घर दूर था, इसलिये सवारी से जाने का निर्णय किया गया।

बग्घी, जिसमें आन्ना और गोलेनीश्चेव तथा व्रोन्स्की आमने-सामने बैठे थे, एक घण्टे बाद दूरी पर स्थित, सुन्दर और नये मकान के सामने पहुंची। घर की देखभाल करनेवाले की बीवी से यह मालूम होने पर कि मिख़ाइलोव लोगों को अपने स्टूडियो में आने देता है, मगर इस समय वह कुछ क़दमों की दूरी पर अपने फ़्लैट में है, उन्होंने उसे अपने परिचय-कार्ड देकर इस अनुरोध के साथ वहां भेजा कि वह उन्हें उसके चित्र देखने की अनुमति दें।

(१०)

चित्रकार मिख़ाइलोव को जब काउंट व्रोन्स्की और गोलेनीश्चेव के परिचय-कार्ड दिये गये, तो वह हमेशा की भांति अपने काम में लगा हुआ था। सुबह के वक़्त वह एक बड़े चित्र पर अपने स्टूडियो में काम करता रहा था। घर आने पर वह पत्नी से इस कारण नाराज़ हो गया था कि वह मकान का किराया मांगनेवाली मालिकिन को टाल नहीं पाई थी।

"बीसियों बार तुमसे कह चुका हूं कि उससे बहस मत किया करो। तुम वैसे ही मूर्ख हो और जब बहस करने लगती हो, तो तीन गुना मूर्ख हो जाती हो," लम्बे झगड़े के बाद उसने उससे कहा।

"तो तुम किराया देने में देर न किया करो, मेरा क़सूर नहीं है। अगर मेरे पास पैसे होते, तो..."

"भगवान के लिये मुझे मेरे हाल पर छोड़ दो।" मिख़ाइलोव

ने रुआंसी आवाज़ में कहा और कान बन्द करके विभाजन-दीवार के पीछे अपने कार्य-कक्ष में जाकर उसने दरवाज़ा बन्द कर लिया। "बुद्धू कहीं की!" उसने अपने आपसे कहा, मेज़ पर बैठ गया, फ़ाइल खोलकर आरम्भ किये हुए रेखाचित्र पर बड़े जोश से काम करने लगा।

उसके जीवन की गाड़ी जब बुरे ढंग से चलती थी और ख़ास तौर पर जब पत्नी से उसका झगड़ा हो जाता था, तो वह जितने जोश और कामयाबी से काम करता था, उतना और कभी नहीं कर पाता था। "ओह, कहीं ग़ारत हो जाता!" वह काम करते हुए सोच रहा था। वह ग़ुस्से के दौरे का शिकार हुए आदमी की आकृति का ख़ाका बना रहा था। ख़ाका पहले से बनाया जा चुका था, मगर वह उससे असन्तुष्ट था। "नहीं, वह बेहतर था... वह कहां है?" वह पत्नी के पास गया, माथे पर बल डाले और उसकी तरफ़ देखे बिना उसने बड़ी बेटी से यह पूछा कि वह काग़ज़ कहां है, जो उसने उन्हें दिया था। फेंक दिये गये ख़ाके वाला क़ाग़ज़ मिल गया, मगर उसपर धब्बे पड़े हुए थे और चिकनाई लग गयी थी। फिर भी उसने वह ख़ाका ले लिया, मेज़ पर रखा तथा कुछ हटकर आंखें सिकोड़ते हुए उसे देखने लगा। वह अचानक मुस्कराया और उसने ख़ुशी से हाथ लहराये।

"हां, हां!" वह कह उठा और उसी क्षण पेंसिल लेकर जल्दी-जल्दी रेखाचित्र बनाने लगा। चिकनाई के धब्बे ने व्यक्ति को एक नई मुद्रा प्रदान कर दी थी।

वह यह नई मुद्रा बना रहा था कि अचानक उसे बड़ी ठोड़ी वाले उस व्यापारी के उत्साहपूर्ण चेहरे का ध्यान हो आया, जिससे वह सिगार ख़रीदता था। उसने इसी चेहरे और इसी ठोड़ी वाली आकृति बना दी। वह ख़ुशी से हंस पड़ा। निर्जीव और काल्पनिक आकृति की जगह वह सजीव और ऐसी बन गयी, जिसे बदला नहीं जा सकता था। इस आकृति में सजीवता थी और वह एक सुनिश्चित रूप रखती थी। इस ख़ाके को इस आकृति की मांगों के अनुरूप ठीक-ठाक किया जा सकता था। टांगों को दूसरे ढंग से दिखाया जा सकता था और दिखाना चाहिये था, बायें हाथ की स्थिति को पूरी तरह बदला जा सकता था और बालों को पीछे की ओर किया जा सकता था। किन्तु ऐसे सुधार करते हुए उसने आकृति को नहीं बदला, बल्कि उन्हीं चीज़ों को हटा

दिया, जो आकृति को छिपा रही थीं। उसने मानो वे आवरण हटा दिये, जिनके कारण वह पूरी तरह से नज़र नहीं आ रही थी। उसकी पेंसिल की हर गतिविधि से पूरी आकृति अपनी सारी शक्ति से उभरती आ रही थी, ऐसी बनती जा रही थी, जैसी चिकनाई के धब्बे से अचानक वह उसके सामने प्रकट हुई थी। जब उसे परिचय-कार्ड लाकर दिये गये, तो वह इस आकृति को सावधानी से समाप्त कर रहा था।

"अभी, अभी!"

वह बीवी के पास गया।

"बस, काफ़ी है, नाराज़ नहीं होओ, साशा!" उसने सहमी-सी आवाज़ में प्यार से मुस्कराकर कहा। "तुम दोषी थीं। मैं दोषी था। मैं सब कुछ ठीक-ठाक कर दूंगा।" और पत्नी से सुलह करके मख़मली कालर वाला ज़ैतूनी रंग का ओवरकोट तथा टोप पहनकर स्टूडियो में चला गया। सफल आकृति के बारे में वह भूल चुका था। इस समय बग्घी में बैठकर आनेवाले और उसके स्टूडियो को देखने के इच्छुक इन महत्त्वपूर्ण रूसियों के कारण उसे उत्तेजना और ख़ुशी महसूस हो रही थी।

उस चित्र के बारे में, जो इस समय उसके चित्राधार पर रखा था, उसके दिल की गहराई में यह विचार विद्यमान था कि ऐसा चित्र कभी किसी ने नहीं बनाया है। वह ऐसा नहीं समझता था कि उसका चित्र राफ़ायल के सभी चित्रों से बढ़-चढ़कर है, किन्तु इतना जानता था कि इस चित्र में वह जो भाव व्यक्त करना चाहता था और कर पाया है, कभी किसी ने उसे व्यक्त नहीं किया है। वह यक़ीनी तौर पर यह जानता था, बहुत पहले से, तब से जानता था, जब उसने यह चित्र बनाना शुरू किया था। किन्तु लोगों के विचार, वे चाहे किसी के भी क्यों न हों, उसके लिये बहुत महत्त्व रखते थे और उसके दिल की गहराई तक को छू लेते थे। हर टीका-टिप्पणी, बहुत मामूली-सी भी, जो यह ज़ाहिर करती कि आलोचक इस चित्र में उस चीज़ का ज़रा-सा अंश भी देख पाता है, जो वह ख़ुद देखता था, उसकी आत्मा की गहराई को विह्वल कर देती थी। अपने आलोचकों को वह हमेशा अपने से ज़्यादा गहरी समझ रखनेवाला मानता था और उनसे सदैव कुछ ऐसा देख पाने की आशा रखता था, जो ख़ुद वह अपने चित्र में

नहीं देख पाता था। उसे लगता था कि दर्शकों की टीका-टिप्पणियों में उसे अक्सर कुछ ऐसा मिल जाता है।

वह तेज़ क़दमों से अपने स्टूडियो के दरवाज़े की तरफ़ आ रहा था और उत्तेजना के बावजूद प्रवेशद्वार की छाया में खड़ी और बड़े जोश से कुछ कह रहे गोलेनीश्चेव की बातें सुनती तथा स्पष्टत: साथ ही निकट आते चित्रकार को देखने की इच्छुक आन्ना की आकृति की कोमल चमक ने उसे आश्चर्यचकित कर दिया। चित्रकार को ख़ुद यह नहीं पता चला कि कैसे इनके क़रीब आने पर उसने इस प्रभाव को ग्रहण कर लिया और सिगार बेचनेवाले दुकानदार की ठोड़ी की तरह उसे कहीं अपने भीतर छिपा लिया, जहां से वह ज़रूरत होने पर उसे बाहर निकाल लेगा। व्रोन्स्की और आन्ना चित्रकार के बारे में गोलेनीश्चेव के वर्णन से पहले से ही निराश हो चुके थे और उसके बाहरी रंग-रूप ने उन्हें और भी अधिक निराश कर दिया। मंझोले क़द, स्थूल काय और ढीली-ढाली चाल वाले मिख़ाइलोव ने, जो कत्थई रंग का टोप तथा ज़ैतूनी हरे रंग का ओवरकोट तथा तंग पायंचों का पतलून पहने था, जबकि बहुत समय से चौड़े पायंचों का चलन था, और ख़ास तौर पर उसके साधारण, चौड़े-से चेहरे और भीरुता के भाव तथा अपनी गरिमा बनाये रखने को उत्सुक इस व्यक्ति ने अप्रिय छाप छोड़ी।

"कृपया पधारिये," उसने उदासीनता-सी दिखाने का यत्न करते हुए कहा, ड्योढ़ी में जाकर जेब से चाबी निकाली और दरवाज़ा खोला।

(११)

स्टूडियो में दाख़िल होने पर मिख़ाइलोव ने फिर से मेहमानों पर नज़र डाली और अपनी कल्पना में व्रोन्स्की के चेहरे, विशेषकर उसके जबड़ों को, फिर से अंकित कर लिया। उसकी चित्रकार की चेतना बेशक लगातार काम करती हुई सामग्री जुटा रही थी, बेशक उसकी कला की आलोचना के क्षण के निकट आने के कारण वह बेचैनी अनुभव कर रहा था, फिर भी वह बड़ी तेज़ी और सूक्ष्मता से, बड़ी मुश्किल से लक्षित होनेवाले चिह्नों के आधार पर इन तीनों व्यक्तियों के

बारे में अपनी धारण बनाता जा रहा था। वह (गोलेनीश्चेव) यहीं रहनेवाला रूसी था। मिख़ाइलोव को न तो उसका कुलनाम याद था, न यह कि कहां उससे उसकी मुलाक़ात हुई थी और उसके साथ उसने क्या बातचीत की थी। उन सभी चेहरों की भांति, जो उसने कभी देखे थे, उसे केवल उसका चेहरा ही याद था, मगर उसे यह भी स्मरण था कि यह उन चेहरों में से था, जो उसकी कल्पना में दिखावटी महत्त्व और अभिव्यक्ति की हीनता वाले बहुत बड़े विभाग में एक ओर को रख दिये गये थे। बड़े-बड़े बाल और बहुत चौड़ा माथा चेहरे को बाहरी महत्त्व प्रदान करते थे, और चेहरे पर एक छोटा-सा बचकाना, चंचल भाव था, जो संकरे-से नासिका-पुल पर केन्द्रित था। मिख़ाइलोव के अनुमानानुसार व्रोन्स्की तथा आन्ना जाने-माने और अमीर रूसी होने चाहिये थे, जो सभी धनी रूसियों की भांति कला के बारे में कुछ नहीं समझते होंगे, मगर जो अपने को कला-प्रेमी और कला-पारखी ज़ाहिर करते हैं। "निश्चय ही इन्होंने सारी पुरानी कला को देख लिया होगा और अब नये चित्रकारों के स्टूडियो के चक्कर लगा रहे हैं, ढोंगी जर्मन और राफ़ायल-पूर्व शैली के उल्लू अंग्रेज़ के यहां जाने के बाद अपना पूरा धारणा-चित्र बनाने के लिये मेरे यहां आये हैं," वह सोच रहा था। वह ऐसे कला-प्रेमियों के इस अन्दाज़ को बहुत अच्छी तरह से जानता था (वे जितने अधिक समझदार थे, उतना ही बुरा था) कि वे केवल यह कहने का अधिकार पाने के उद्देश्य से ही आधुनिक चित्रकारों के स्टूडियो देखते थे कि कला का स्तर गिर गया है और जितना अधिक नयी कला को देखते हैं, उतना अधिक यह स्पष्ट होता जाता है कि प्राचीन महान चित्रकारों की कला की कोई बराबरी नहीं हो सकती। वह इस सब की आशा कर रहा था, उनके चेहरों पर यह सब देख रहा था, उस उदासीनतापूर्ण उपेक्षा भाव को अनुभव कर रहा था, जिससे वे आपस में बातचीत कर रहे थे, पुतलों और आवक्ष मूर्त्तियों को देख रहे थे तथा लापरवाही से इधर-उधर आते-जाते हुए यह प्रतीक्षा कर रहे थे कि वह चित्र पर से पर्दा हटाये। जब वह अपने रेखाचित्रों को उलट-पलट रहा था, पर्दे ऊपर उठा रहा था और चादर को अलग कर रहा था, तो बड़ी विह्वलता अनुभव कर रहा था। उसकी यह उत्तेजना इसलिये और भी अधिक थी कि उसकी इस धारणा

के बावजूद कि सभी जाने-माने और धनी रूसी पशु तथा उल्लू होने चाहिये, उसे व्रोन्स्की और ख़ास तौर पर आन्ना बहुत अच्छे लग रहे थे।

"इसे देखियेगा?" ढीली-ढाली चाल से एक ओर को हटते और चित्र की तरफ़ संकेत करते हुए उसने पूछा। "यह पीलातुस का सम्बोधन है, मत्ती, २७ वां अध्याय," उसने यह अनुभव करते हुए कि उसके होंठ उत्तेजना से कांप रहे हैं, कहा। वह कुछ हटकर उनके पीछे खड़ा हो गया।

इन कुछ क्षणों के दौरान, जब मेहमान चित्र को देख रहे थे, ख़ुद मिख़ाइलोव भी उसे देख रहा था और सो भी उदासीनता तथा एक पराये व्यक्ति की नज़र से। इन कुछ क्षणों में वह पहले से ही ऐसा मान रहा था कि यही, यही दर्शक, जिन्हें एक मिनट पहले वह तिरस्कार की दृष्टि से देख रहा था, उसके चित्र के बारे में उच्चतम और अधिकतम न्यायपूर्ण राय ज़ाहिर करेंगे। वह भूल गया कि उन तीन सालों के दौरान, जब वह इस चित्र पर काम करता रहा था, उसके बारे में क्या सोचता था। वह उसकी उन सारी ख़ूबियों को भूल गया, जिनके बारे में उसे कोई सन्देह नहीं था। वह इन दर्शकों की उदासीन, परायी और नई दृष्टि से अपने चित्र को देख रहा था और उसे उसमें कुछ भी अच्छा नज़र नहीं आ रहा था। चित्र के अग्र भाग में उसे पीलातुस का खिन्न और ईसा का शान्त चेहरा दिखाई दे रहा था और पीछे की तरफ़ पीलातुस के नौकर तथा जो कुछ हो रहा था, उसे देखते हुए यूहन्ना का चेहरा नज़र आ रहा था। हर चेहरा, जो इतनी खोज, इतनी भूलों और सुधारों के बाद अपने विशेष चरित्र के साथ उसके अन्तर में बना था, जिसने इतनी यातना और ख़ुशी प्रदान की थी और ये सभी चेहरे, जिनके समूचे रूप के सन्तुलित प्रभाव को बनाये रखने के लिये बार-बार स्थानान्तरित करके बड़ी मुश्किल से उनके अन्दाज़ों और रंगाभासों को प्राप्त किया गया था — यह सब इन पराये लोगों की नज़रों से देखे जाने पर बहुत घटिया और हज़ारों बार दोहराया हुआ सा प्रतीत हो रहा था। उसके लिये सबसे प्यारा, ईसा मसीह का चेहरा भी, जो चित्र का केन्द्र-बिन्दु था और जिसकी खोज कर लेने पर उसे इतनी अधिक ख़ुशी हुई थी, इन लोगों की नज़र से देखने पर महत्त्वहीन-सा हो गया था। उसे अच्छे ढंग से चित्रित (अच्छे ढंग से

चित्रित भी नहीं था, क्योंकि उसे इसमें बहुत से दोष नज़र आ रहे थे) उन्हीं सैनिकों और उसी पीलातुस के साथ तित्सियान, राफ़ायल, रूबेन्स के अनगिनत रूप से दोहराये हुए ईसा नज़र आ रहे थे। यह सब कुछ तुच्छ, घटिया और पुराने ढंग से चित्रित – अत्यधिक रंगीन और प्रभावहीन प्रतीत हो रहा था। उनका चित्रकार की उपस्थिति में कुछ झूठी और नम्र बातें कहना और अकेले रह जाने पर उसका मज़ाक़ उड़ाना तथा उसके प्रति दया दिखाना बिल्कुल उचित होगा।

यह ख़ामोशी (यद्यपि यह एक मिनट से अधिक नहीं थी) उसके लिये बहुत बोझिल हो गयी। इसे भंग करने और यह दिखाने के लिये कि वह उत्तेजित नहीं है, उसने अपने पर क़ाबू पाते हुए गोलेनीश्चेव को सम्बोधित किया।

"ऐसा लगता है कि मुझे आपसे मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है," उसने बेचैनी से कभी आन्ना और कभी व्रोन्स्की की ओर देखते हुए कहा, ताकि उनके चेहरों का एक भी भाव उसकी नज़र से न बच सके।

"मिले कैसे नहीं! हम रोस्सी के यहां मिले थे, जहां उस इतालवी लड़की – नयी राशेल – ने कविता-पाठ किया था," गोलेनीश्चेव ने किसी भी तरह के अफ़सोस के बिना चित्र से दृष्टि हटाते हुए कहना आरम्भ किया।

फिर भी यह देखकर कि मिख़ाइलोव अपने चित्र के बारे में राय जानने को उत्सुक है, उसने कहा –

"पिछली बार जब मैंने आपका यह चित्र देखा था, तब से वह काफ़ी आगे बढ़ चुका है। जैसे तब, वैसे ही अब भी मुझे पीलातुस की आकृति आश्चर्यचकित कर रही है। यह दयालु और भला आदमी, जो दिल की गहराई तक नौकरशाह है तथा यह नहीं समझता कि क्या कर रहा है, बिल्कुल अच्छी तरह से समझा जा सकता है। किन्तु मुझे लगता है कि ..."

मिख़ाइलोव का भावनापूर्ण चेहरा अचानक खिल उठा, आंखों में चमक आ गयी। उसने कुछ कहना चाहा, मगर भावावेश के कारण कुछ भी न कह पाया और उसने ऐसे ज़ाहिर किया मानो खांसकर गला साफ़ किया हो। कला को समझने-परखने की गोलेनीश्चेव की क्षमता का चाहे वह कितना कम मूल्यांकन क्यों नहीं करता था, नौकरशाह

के रूप में पीलातुस के चेहरे के भाव के बारे में उसकी न्यायपूर्ण टिप्पणी चाहे कितनी ही मामूली क्यों न थी, सबसे महत्त्वपूर्ण चीज़ों का उल्लेख करने के पहले ऐसी मामूली टिप्पणी की चर्चा करने से उसे चाहे कितनी भी ठेस क्यों न लगी, इस टिप्पणी से मिख़ाइलोव की बाछें खिल गयीं। पीलातुस की आकृति के बारे में खुद उसका भी वही विचार था, जो गोलेनीश्चेव ने व्यक्त किया था। यह उन लाखों-करोड़ों अन्य सम्मतियों में से एक थी, जो मिख़ाइलोव निश्चित रूप से जानता था कि ऐसे ही सही होंगी, फिर भी इससे गोलेनीश्चेव की सम्मति का उसके लिये महत्त्व कम नहीं हो जाता था। इस टिप्पणी से उसके मन में गोलेनीश्चेव के लिये स्नेह उमड़ पड़ा और उदासी की जगह वह अचानक ख़ुशी की तरंग में आ गया। इसी क्षण उसका सारा चित्र समूचे सप्राण जगत की अवर्णनीय जटिलता के साथ सजीव हो उठा। मिख़ाइलोव ने फिर से यह कहने की कोशिश की कि पीलातुस को उसने इसी रूप में समझा है, किन्तु उसके होंठ वश में न रहते हुए कांप रहे थे और वह कुछ भी न कह पाया। व्रोन्स्की और आन्ना भी ऐसी धीमी आवाज़ में कुछ कह रहे थे, जो किसी हद तक इसलिये धीमी थी कि चित्रकार का किसी तरह अपमान न हो जाये और किसी हद तक इसलिये कि ऊंची आवाज़ में कोई बेवक़ूफ़ी की बात न कह दें, जो कला की चर्चा करते हुए आसानी से कही जा सकती है और जो चित्र-प्रदर्शनियों में सामान्यतः कही जाती है। मिख़ाइलोव को लगा कि चित्र ने उन्हें भी प्रभावित किया है। वह उनके पास गया।

"ईसा के चेहरे का भाव कितना अद्भुत है!" आन्ना ने कहा। उसने जो कुछ देखा, उसमें यह भाव ही उसे सबसे अधिक अच्छा लगा था। उसने अनुभव किया कि यही चित्र का केन्द्र-बिन्दु है और इसलिये यह प्रशंसा चित्रकार को अच्छी लगेगी। "साफ़ नज़र आ रहा है कि उसे पीलातुस पर दया आ रही है।"

यह भी उन लाखों-करोड़ों सही विचारों में से था, जो उसके चित्र और ईसा की आकृति के बारे में व्यक्त किये जा सकते थे। आन्ना ने कहा था कि ईसा को पीलातुस पर दया आ रही है। ईसा के भाव में दया का होना तो लाज़िमी था, क्योंकि उसमें प्रेम का भाव है, अलौकिक शान्ति है, मृत्यु की तत्परता और शब्दों की निस्सारता की

चेतना है। ज़ाहिर है कि पीलातुस में नौकरशाह और ईसा में दया का भाव है, क्योंकि एक दैहिक और दूसरा आत्मिक जीवन का मूर्त्त रूप है। यह सब और अन्य बहुत कुछ मिख़ाइलोव के मस्तिष्क में कौंध गया और फिर से उसका चेहरा ख़ुशी से चमक उठा।

"हां, और कितने अच्छे ढंग से बनायी गयी है यह आकृति, इसमें कितनी हवा विद्यमान है। इसके गिर्द चक्कर लगाया जा सकता है," गोलेनीश्चेव ने कहा और अपनी इस टिप्पणी से उसने स्पष्टतः यह प्रकट करना चाहा कि वह आकृति के विषय और भावों का अनुमोदन नहीं करता है।

"हां, अद्भुत कला-पारंगतता है!" व्रोन्स्की ने कहा। "पीछे वाली आकृतियां कितनी स्पष्टता से उभरी हुई हैं! इसे कहते हैं तकनीक," उसने गोलेनीश्चेव को सम्बोधित करते हुए कहा और इस तरह उनके बीच हुई उस बातचीत की ओर संकेत किया कि व्रोन्स्की शायद ही कभी ऐसी पारंगतता प्राप्त कर सकेगा।

"हां, हां, अद्भुत है!" गोलेनीश्चेव और आन्ना ने पुष्टि की। इस चीज़ के बावजूद कि मिख़ाइलोव ख़ुशी से उत्तेजित था, तकनीक-सम्बन्धी टिप्पणी से उसके दिल को ठेस लगी और व्रोन्स्की की तरफ़ ग़ुस्से से देखकर उसने नाक-भौंह सिकोड़ ली। उसने यह तकनीक शब्द अक्सर सुना था और निश्चित रूप से यह नहीं जानता था कि इसका क्या अर्थ है। वह जानता था कि इस शब्द के अन्तर्गत विषय की तनिक भी परवाह न करते हुए यन्त्रवत चित्रकारी करने का भाव निहित है। इस समय की गयी व्रोन्स्की की प्रशंसा की तरह ही उसका अनेक बार इस बात की तरफ़ ध्यान गया था कि तकनीक को आन्तरिक गुण के मुक़ाबले में रखा जाता था, मानो जो बुरा था, उसका अच्छा चित्रण सम्भव था। वह जानता था कि विचारों को अनावृत्त करने और रूप देने के लिये बहुत ध्यान और सावधानी अपेक्षित थी, किन्तु जहां तक चित्रण कला या तकनीक का सम्बन्ध था, तो वह यहां बिल्कुल नहीं थी। अगर कोई बच्चा या उसकी बावर्चिन वह देख पाती, जो उसे दिखाई देता था, तो वह भी उसे अनावृत्त करने में समर्थ रहती। बहुत ही अनुभवी और कुशल चित्रकार भी, यदि विषय की सीमा-रेखायें उसे पहले से स्पष्ट न हों, यांत्रिक क्षमता के आधार पर कुछ

भी चित्रित नहीं कर सकता। इसके अलावा वह साफ़ तौर पर यह देख रहा था कि अगर तकनीक की चर्चा करनी हो, तो उसकी इसके लिये प्रशंसा नहीं की जा सकती थी। उसने जो कुछ चित्रित किया था और कर रहा था, उस सबमें उसे आंखों को अखरने वाली त्रुटियां दिखाई दे रही थीं, जो असावधानी का नतीजा थीं, जिससे उसने विचारों को अनावृत्त किया था और जिन्हें अब वह पूरी रचना को बिगाड़े बिना ठीक नहीं कर सकता था। सभी आकृतियों और चेहरों पर उसे ऐसे दोष दिखाई दे रहे थे, जो चित्र को बिगाड़ते थे।

"अगर आप अनुमति दें, तो मैं एक बात कहना चाहूंगा," गोलेनीश्चेव ने कहा।

"बड़ी खुशी से, कृपया कहिये," बनावटी मुस्कान लाते हुए मिखाइलोव ने जवाब दिया।

"यह कि आपके चित्र में मानवरूपी भगवान है, न कि भगवानरूपी मानव। वैसे मैं यह जानता हूं कि आप ऐसा ही चाहते थे।"

"मैं ऐसा ईसा चित्रित नहीं कर सकता था, जो मेरी आत्मा में नहीं है," मिखाइलोव ने उदासी से जवाब दिया।

"हां, लेकिन उस हालत में, अगर अपना विचार प्रकट करने की अनुमति दें... आपका चित्र इतना अच्छा है कि मेरी टिप्पणी से इसको कोई हानि नहीं पहुंच सकती और इसके अलावा यह मेरी व्यक्तिगत राय है। आपके मामले में दूसरी बात है। आपका विषय ही दूसरा है। किन्तु हम उदाहरण के लिये इवानोव को ले सकते हैं। मैं समझता हूं कि अगर ईसा को ऐतिहासिक व्यक्ति के स्तर तक उतार दिया गया है, तो इवानोव के लिये कोई दूसरा, ताज़ा और अछूता ऐतिहासिक विषय चुनना ज़्यादा अच्छा रहता।"

"किन्तु यदि यही कला के लिये महानतम विषय हो, तो?"

"अगर ढूंढ़े जायें, तो अन्य विषय भी मिल जायेंगे। लेकिन बात यह है कि कला विवाद और टीका-टिप्पणी को सहन नहीं करती। मगर इवानोव के चित्र के मामले में आस्तिकों और नास्तिकों के सामने यह सवाल पैदा होता है — वह भगवान है या नहीं? और इस तरह प्रभाव की एकरूपता नष्ट हो जाती है।"

"मगर क्यों? मुझे लगता है कि पढ़े-लिखे लोगों के लिये ऐसा विवाद हो ही नहीं सकता," मिख़ाइलोव ने कहा।

गोलेनीश्चेव इस बात से सहमत नहीं हुआ और कला के लिये आवश्यक प्रभाव की एकरूपता के अपने पहले विचार से चिपके रहकर उसने मिख़ाइलोव को पराजित कर दिया।

मिख़ाइलोव उत्तेजित था, मगर अपने विचार के पक्ष में कुछ नहीं कह पाया।

(१२)

आन्ना और व्रोन्स्की अपने मित्र की बुद्धिमत्तापूर्ण वाचालता के कारण खिन्न होते हुए देर से एक-दूसरे की ओर देख रहे थे और आख़िर चित्रकार के आगे बढ़ने की प्रतीक्षा किये बिना व्रोन्स्की एक अन्य, छोटे चित्र के सामने जा खड़ा हुआ।

"अहा, क्या ख़ूब है, क्या कमाल है! अजूबा है! कितना बढ़िया चित्र है!" दोनों एक स्वर में कह उठे।

"इन्हें ऐसा क्या पसन्द आ गया?" मिख़ाइलोव ने सोचा। वह तीन वर्ष पहले बनाये गये इस चित्र के बारे में भूल ही चुका था। वह उन सभी यातनाओं और परम हर्ष के उन क्षणों को भूल चुका था, जो उसने उन कई महीनों के दौरान अनुभव किये थे, जब वह दिन-रात इसी चित्र में डूबा रहा था। वह ऐसे ही भूल गया था, जैसे समाप्त किये हुए सभी चित्रों के बारे में भूल जाता था। उसे इस चित्र को देखना भी पसन्द नहीं था और केवल इसीलिये इसे लटका दिया था कि एक अंग्रेज़ ग्राहक के आने की सम्भावना थी।

"यह तो योंही बहुत पहले बनाया गया चित्र है," उसने कहा।

"कैसा कमाल है!" गोलेनीश्चेव ने भी स्पष्टतः चित्र के सौन्दर्य से प्रभावित होते हुए सच्चे मन से कहा।

विल्लो वृक्ष की छाया में दो लड़के बंसियों से मछलियां पकड़ रहे थे। उनमें से बड़े लड़के ने कुछ ही देर पहले बंसी पानी में डाली थी और पूरी तरह इसी काम में खोया हुआ बड़ी कोशिश से झाड़ियों के पीछे से कार्क को सामने ला रहा था। दूसरा, जो उससे छोटा था,

कोहनियों के बल घास पर लेटा था, अस्त-व्यस्त सुनहरे बालों वाला सिर हाथों पर टिकाये था और सोच में डूबी नीली आंखों से पानी को ताक रहा था। किस चीज़ के बारे में सोच रहा था वह?

उसके इस चित्र की अत्यधिक प्रशंसा से मिखाइलोव के दिल में पहले वाली उत्तेजना सिहरी, किन्तु वह अतीत की कृति के प्रति ऐसी व्यर्थ की भावना से डरता था और वह उसे पसन्द नहीं थी। इसीलिये कि बेशक उसे इन प्रशंसाओं से ख़ुशी हो रही थी, फिर भी उसने तीसरे चित्र की ओर दर्शकों का ध्यान आकृष्ट करना चाहा।

किन्तु व्रोन्स्की ने पूछा कि चित्र बिकाऊ है या नहीं? मिखाइलोव के लिये, जो दर्शकों के कारण बहुत उत्तेजित था, इस समय पैसों की चर्चा सर्वथा अप्रिय थी।

"इसे बेचने के लिये ही लटकाया गया है," उसने माथे पर बल डालते हुए उदासी से उत्तर दिया।

दर्शकों के जाने के बाद मिखाइलोव पीलातुस और ईसा के चित्र के सामने बैठ गया और मन ही मन वह सब दोहराया जो उन्होंने कहा था या जो शब्दों में नहीं कहा गया था, मगर जो उनका अभिप्राय था। और अजीब बात यह थी कि जब दर्शक यहां थे और जब वह मन ही मन उनके दृष्टिकोण से सहमत हो गया था, उसके लिये अब अचानक उसका कोई महत्त्व न रहा। वह इस चित्र को अपनी चित्रकार की पूरी अबाध दृष्टि से देखने लगा और उसने अपने को त्रुटिहीनता की उस अवस्था और इसलिये अपने चित्र की महत्ता की उस अवस्था में पाया, जो शेष सभी रुचियों की अवहेलना करनेवाले उस तनाव के लिये ज़रूरी थी, केवल जिसके अन्तर्गत ही वह काम कर सकता था।

फिर भी ईसा के पांव को आगे की ओर छोटा दिखाना ठीक नहीं था। उसने रंग-पट्टिका ली और काम करने लगा। पांव को ठीक करते हुए वह लगातार पीछे की ओर बनी यूहन्ना की आकृति को देखता जाता था, जिसकी ओर दर्शकों का ध्यान नहीं गया था, मगर उसे मालूम था कि वह उसके फ़न का कमाल है। पांव को ठीक करने के बाद उसने यूहन्ना की आकृति पर काम करना चाहा, किन्तु अनुभव किया कि ऐसा नहीं कर सकता, क्योंकि बहुत ही अधिक भाव-विह्वल है। वह उदासीन होने पर तथा इसी प्रकार तब भी कांम नहीं कर

सकता था, जब बहुत ही द्रवित मनःस्थिति में होता था और सब कुछ बहुत स्पष्ट रूप से देख पाता था। उदासीनता से प्रेरणा की ओर संक्रमण के बीच केवल एक ही पैड़ी थी जब वह काम कर सकता था। इस समय वह बहुत ही विह्वल था। उसने चित्र को ढक देना चाहा, मगर चादर को हाथ से थामे हुए रुका रहा, हर्ष-मगन होकर मुस्कराता और देर तक यूहन्ना की आकृति को देखता रहा। आख़िर, मानो उदास मन से उसने चित्र से अपनी दृष्टि हटाई और थका-हारा, किन्तु बहुत ही ख़ुश-ख़ुश अपने घर को चल दिया।

व्रोन्स्की, आन्ना और गोलेनीश्चेव लौटते हुए अपने को विशेष रूप से सजीव और प्रसन्न अनुभव कर रहे थे। वे मिख़ाइलोव और उसके चित्रों की चर्चा कर रहे थे। "प्रतिभा" शब्द, जिससे उनका अभिप्राय जन्मजात, लगभग शारीरिक क्षमता थी, जो मन और मस्तिष्क पर निर्भर नहीं थी और जिसका नाम वे चित्रकार द्वारा अनुभूत हर चीज़ को देना चाहते थे, अक्सर उनकी बातचीत में सुनाई दे रहा था, क्योंकि यह शब्द उस चीज़ को अभिव्यक्ति देने के लिये ज़रूरी था, जिसे वे बिल्कुल नहीं समझते थे, मगर जिसका उपयोग करना चाहते थे। वे कह रहे थे कि उसमें प्रतिभा तो है, किन्तु शिक्षा के अभाव के कारण, जो हमारे सभी रूसी चित्रकारों का दुर्भाग्य है, उसकी प्रतिभा का विकास नहीं हो पाया है। किन्तु लड़कों के चित्र ने उनके दिल में घर कर लिया था और वे रह-रहकर उसी को याद करते थे।

"क्या कमाल का है वह चित्र! कितनी सफलता और कितनी सहजता से बनाया है उसने उसे! उसे इस बात की चेतना ही नहीं है कि कितना बढ़िया है वह। हां, उसे हाथ से निकलने नहीं देना चाहिये, ख़रीद लेना चाहिये," व्रोन्स्की ने कहा।

(१३)

मिख़ाइलोव ने अपना चित्र व्रोन्स्की को बेच दिया और आन्ना का छविचित्र बनाने को राज़ी हो गया। नियत दिन आकर उसने काम शुरू कर दिया।

पांच बैठकों के बाद छविचित्र ने सभी को, विशेषतः व्रोन्स्की को,

सो भी केवल समानता से नहीं बल्कि विशेष सौन्दर्य से आश्चर्यचकित कर दिया। "उसका यह सबसे अधिक प्यारा आत्मिक लक्षण ढूंढ़ पाने के लिये उसे उसी तरह से जानना और प्यार करना ज़रूरी था, जैसे मैं प्यार करता था," व्रोन्स्की सोच रहा था, यद्यपि इस छविचित्र की बदौलत ही वह उसके इस सबसे प्यारे आत्मिक लक्षण को जान पाया था। किन्तु यह लक्षण इतना सत्यानुरूप था कि उसे तथा अन्य लोगों को भी ऐसा प्रतीत हुआ मानो वे बहुत पहले से ही उससे परिचित थे।

"मैं कितने समय से कोशिश कर रहा हूं, मगर कुछ नहीं कर पाया," उसने अपने छविचित्र के बारे में कहा, "किन्तु उसने देखा और चित्र बना डाला। इसे कहते हैं तकनीक।"

"यह आ जायेगी," गोलेनीश्चेव ने उसे तसल्ली दी, जिसके मतानुसार व्रोन्स्की प्रतिभासम्पन्न और इससे भी बढ़कर, शिक्षित है, जो कला के प्रति ऊंचा दृष्टिकोण प्रदान करता है। व्रोन्स्की की प्रतिभा के बारे में गोलेनीश्चेव के इस विश्वास को इस बात से भी बल मिलता था कि उसे अपने लेखों और विचारों के लिये व्रोन्स्की की प्रशंसा की आवश्यकता थी और वह यह अनुभव करता था कि प्रशंसा और समर्थन पारस्परिक होने चाहिये।

पराये घर और विशेषतः व्रोन्स्की के पालाज़्ज़ो में मिख़ाइलोव अपने स्टूडियो की तुलना में बिल्कुल दूसरा आदमी था। वह औपचारिक आदर से पेश आता था, मानो ऐसे लोगों के निकट होने से डरता हो, जिनकी इज़्ज़त नहीं करता था। वह व्रोन्स्की को "हुज़ूर" कहकर सम्बोधित करता और आन्ना तथा व्रोन्स्की के आमंत्रित करने पर भी भोजन करने के लिये न रुकता तथा चित्रण की बैठकों के सिवा कभी इनके यहां न आता। आन्ना दूसरों की तुलना में उसके प्रति अधिक स्नेह दिखाती और अपने छविचित्र के लिये आभारी थी। व्रोन्स्की उसके साथ कहीं अधिक नम्रता का व्यवहार करता और स्पष्टतः अपने चित्र के बारे में चित्रकार की राय जानने को उत्सुक था। गोलेनीश्चेव उसे कला का सही अर्थ समझाने का एक भी अवसर हाथ से न जाने देता। किन्तु मिख़ाइलोव इन सभी लोगों के प्रति समान रूप से उदासीन रहा। आन्ना महसूस करती कि मिख़ाइलोव को उसकी तरफ़ देखना अच्छा लगता है, मगर वह उसके साथ बातचीत करने से कतराता है। अपनी

चित्रकारी के बारे में व्रोन्स्की की चर्चा के समय वह मौन साधे रहा और जब उसे व्रोन्स्की द्वारा बनाया गया चित्र दिखाया गया, वह ख़ामोश रहा। गोलेनीश्चेव की बातों से वह स्पष्टतः ऊब गया था और उसकी किसी बात को नहीं काटता था।

कुल मिलाकर, जब इन लोगों ने मिख़ाइलोव को निकटता से जाना, तो उसके संयत, अप्रिय, यहां तक कि शत्रुतापूर्ण रवैये के कारण वह उन्हें अच्छा नहीं लगा। जब चित्र बनाने की बैठकें समाप्त हो गयीं, उनके हाथों में बहुत ही सुन्दर छविचित्र रह गया और उसने आना बन्द कर दिया, तो उन्हें ख़ुशी हुई।

गोलेनीश्चेव ने ही सबसे पहले उस विचार को व्यक्त किया, जो उन सभी के दिल में था, यानी यह कि मिख़ाइलोव व्रोन्स्की से ईर्ष्या करता है।

"चलो, मान लें कि वह ईर्ष्या नहीं करता, क्योंकि उसमें प्रतिभा है, मगर उसे इस बात से चिढ़ महसूस होती है कि एक कुलीन और अमीर आदमी, सो भी काउंट (इन सबको यह फूटी आंखों नहीं सुहाता), किसी विशेष श्रम के बिना वही कुछ, यदि उससे बेहतर नहीं, करता है, जिसे उसने अपना सारा जीवन अर्पित कर दिया है। मुख्य बात तो शिक्षा है, जिससे वह वंचित है।"

व्रोन्स्की मिख़ाइलोव का पक्ष लेता था, मगर अपने दिल की गहराई में वह इस पर विश्वास करता था, क्योंकि उसके मतानुसार दूसरी, नीची दुनिया के आदमी का ईर्ष्या करना लाज़िमी था।

आन्ना के छविचित्रों को, जिन्हें उन दोनों ने आन्ना को सामने बिठाकर बनाया था, व्रोन्स्की को अपने और मिख़ाइलोव के बीच का अन्तर स्पष्ट कर देना चाहिये था। किन्तु वह इस अन्तर को नहीं देख पाया। उसने तो मिख़ाइलोव के बाद केवल यह मानते हुए कि अब उसके चित्र की आवश्यकता नहीं थी, उसे बनाना बन्द कर दिया। मध्ययुगीन जीवन का अपना चित्र वह बनाता रहा। ख़ुद उसे, गोलेनीश्चेव और विशेषतः आन्ना को वह चित्र बहुत अच्छा लगता था, क्योंकि मिख़ाइलोव के चित्र की तुलना में प्रसिद्ध चित्रों से कहीं अधिक मिलता-जुलता था।

आन्ना के छविचित्र में मिख़ाइलोव का मन बेशक बहुत रम गया

था, फिर भी छविचित्र की समाप्ति पर वह इन लोगों से भी ज़्यादा ख़ुश हुआ क्योंकि उसे अब कला के बारे में गोलेनीश्चेव का विवेचन नहीं सुनना पड़ेगा तथा व्रोन्स्की की चित्रकला के बारे में वह भूल जा सकेगा। वह जानता था कि व्रोन्स्की को चित्रकारी से खिलवाड़ करने से नहीं रोका जा सकता, वह जानता था कि व्रोन्स्की और उसी तरह के दूसरे अधकचरे चित्रकार जैसे भी चाहें चित्र बना सकते हैं, मगर उसे यह अच्छा नहीं लगा। किसी आदमी को मोम की बड़ी-सी पुतली बनाने और उसे चूमने से नहीं रोका जा सकता। किन्तु यदि यह व्यक्ति अपनी पुतली लेकर किसी प्रेमी के सामने जा बैठे और उस पुतली को वैसे ही सहलाने, गले लगाने लगे, जैसे प्रेमी अपनी प्रेमिका को सहलाता है, तो प्रेमी को ज़रूर बुरा लगेगा। व्रोन्स्की की चित्रकारी देखकर मिख़ाइलोव को ऐसी ही अप्रिय अनुभूति हुई – उसे हंसी, खीझ और दया भी आई तथा बुरा भी लगा।

चित्रकला और मध्यकालीन युग में व्रोन्स्की की दिलचस्पी बहुत दिन नहीं चली। चित्रकला के प्रति उसकी ऐसी निखरी रुचि थी कि वह अपने चित्र को पूरा नहीं कर पाया। चित्र रुक गया। उसे धुंधला-सा आभास हो रहा था कि उसके चित्र की त्रुटियां, जो शुरू में कम दिखाई दे रही थीं, चित्र को जारी रखने पर बहुत ही साफ़ दिखाई देने लगेंगी। उसके साथ गोलेनीश्चेव जैसी बात हुई, जो यह महसूस करता था कि उसके पास कहने को कुछ नहीं है और लगातार यह कहकर अपने को धोखा देता रहता था कि उसका विचार परिपक्व नहीं हुआ, कि वह उसे पका रहा है और सामग्री तैयार कर रहा है। किन्तु गोलेनीश्चेव को इससे कटुता और यातना अनुभव होती थी, जबकि व्रोन्स्की अपने को धोखे तथा यातना का और विशेषतः कटुता का शिकार नहीं होने दे सकता था। उसने अपने चरित्र की दृढ़ता के अनुसार किसी तरह का स्पष्टीकरण और कोई सफ़ाई दिये बिना चित्र बनाना बन्द कर दिया।

किन्तु इस दिलचस्पी के बिना उसे अपनी और आन्ना की ज़िन्दगी, जो उसकी इस निराशा को समझने में असमर्थ थी, इस इतालवी शहर में इतनी ऊब भरी प्रतीत हुई, पालाज़्ज़ो अचानक इतना पुराना और गन्दा लगने लगा, पर्दों के धब्बे, फ़र्श की दरारें और कारनिसों

का टूटा हुआ पलस्तर इतना अखरने लगा तथा हर दिन गोलेर्नीश्चेव, इतालवी प्रोफ़ेसर और जर्मन यात्री की संगत इतनी खटकने लगी कि जीवन को बदलना ज़रूरी हो गया। उन्होंने रूस, अपने गांव जाने का निर्णय किया। व्रोन्स्की पीटर्सबर्ग में भाई के साथ सम्पत्ति का बंटवारा करना चाहता था और आन्ना बेटे से मिलना चाहती थी। उन्होंने व्रोन्स्की की बड़ी पैतृक जागीर पर गर्मी बिताने का इरादा बनाया।

(१४)

लेविन की शादी हुए तीन महीने हो चुके थे। वह सुखी था, किन्तु तनिक भी वैसे नहीं, जैसे उसने आशा की थी। हर क़दम पर उसे अपने पहले सपनों के बारे में निराशा होती थी और नये, अप्रत्याशित आकर्षण उसके सामने आते थे। लेविन सुखी था, मगर पारिवारिक जीवन में प्रवेश करने के बाद वह हर क़दम पर यह अनुभव करता था कि सब कुछ वैसा ही नहीं था, जैसी उसने कल्पना की थी। वह हर क़दम पर वैसा ही अनुभव करता था, जैसा झील में नाव को बड़े अच्छे और सुखद ढंग से तैरते हुए देखकर मुग्ध होनेवाला व्यक्ति खुद उस नाव में बैठने पर महसूस करता है। वह देख रहा था कि इधर-उधर हिले-डुले बिना टिककर बैठना ही काफ़ी नहीं है, क्षण भर को भी यह भूले बिना कि किस दिशा में जाना है, उसे अपने दिमाग़ से काम भी लेना चाहिये, कि उसके पैरों के नीचे पानी है और उसे नाव को खेना भी है, कि नाव को तैरते हुए देखना तो आसान था, मगर ऐसा करना बहुत सुखद होते हुए भी कठिन है।

जब वह अविवाहित था, तो दूसरों के दाम्पत्य जीवन, पति-पत्नी की छोटी-छोटी चिन्ताओं, कलहों और ईर्ष्या को देखकर वह तिरस्कार-पूर्वक मुसकरा ही देता था। उसे विश्वास था कि उसके भावी दाम्पत्य जीवन में न केवल ऐसा कुछ नहीं होगा, बल्कि उसे लगता था कि उसके बाहरी रूप भी दूसरों के जीवन से सर्वथा भिन्न होंगे। किन्तु ऐसा नहीं हुआ। पत्नी के साथ उसके जीवन ने न केवल विशेष रूप धारण नहीं किया, बल्कि, इसके विपरीत, सब कुछ उन तुच्छ चीज़ों पर ही आधारित हो गया, जिन्हें वह पहले इतने तिरस्कार से देखता

था और जिन्होंने अब उसकी इच्छा के विरुद्ध ऐसा असाधारण और निर्विवाद महत्त्व ग्रहण कर लिया था। लेविन अनुभव करता था कि इन छोटी-मोटी चीज़ों को व्यवस्थित करना उतना आसान नहीं था, जितना उसे पहले प्रतीत होता था। बेशक लेविन ऐसा मानता था कि पारिवारिक जीवन के बारे में उसके बहुत ही स्पष्ट विचार हैं, पर वास्तव में सभी पुरुषों की भांति वह भी अनजाने में पारिवारिक जीवन को केवल प्रणय-सुख ही समझता था, जिसमें किसी भी चीज़ को बाधा नहीं बनना चाहिये और छोटी-मोटी चिन्ताओं को जिसकी ओर से ध्यान नहीं बंटाना चाहिये। लेविन के मतानुसार उसे अपना काम करना और फिर प्रणय-सुख में उससे विश्राम पाना चाहिये। पत्नी को केवल प्रेम-पात्री होना चाहिये, बस। किन्तु सभी अन्य पुरुषों की भांति वह यह भूल जाता था कि पत्नी को भी काम करना चाहिये। उसे इस बात से हैरानी हो रही थी कि यह काव्यमयी और प्यारी कीटी दाम्पत्य जीवन के पहले सप्ताहों में ही नहीं, बल्कि पहले दिनों में ही मेज़पोशों, फ़र्नीचर, मेहमानों के लिये पलंगों, ट्रे, बावर्ची, दोपहर के भोजन, आदि के बारे में सोच सकती थी, याद रख सकती थी और चिन्ता कर सकती थी। विवाह के पहले ही वह कीटी के उस दृढ़ निश्चय से चकित रह गया था, जिससे उसने विवाह के बाद विदेश जाने से इन्कार और गांव जाने का निर्णय किया था, मानो जानती हो कि उसे क्या करना चाहिये और अपने प्यार के सिवा वह किसी और चीज़ के बारे में सोच सकती हो। लेविन को तब इससे दुख हुआ था और अब उसकी छोटी-छोटी चिन्ताओं और परेशानियों से उसके दिल को ठेस लगी। किन्तु उसने देखा कि कीटी के लिये यह सब ज़रूरी है। और उसे प्यार करने के कारण, यद्यपि वह यह नहीं समझ पाता था, कि उसे इन चिन्ताओं की क्या ज़रूरत है, यद्यपि वह इनपर हंसता भी था, फिर भी मुग्ध हुए बिना नहीं रह पाता था। उसे यह देखकर हंसी आई कि कैसे उसने मास्को से लाया गया फ़र्नीचर सजाया, कैसे उसके और अपने कमरे को नये ढंग से व्यवस्थित किया, कैसे पर्दे लटकाये, कैसे भावी मेहमानों और डौली के लिये जगह निश्चित की, अपनी नौकरानी के रहने की जगह तय की, कैसे बूढ़े बावर्ची को दोपहर का खाना बनाने की हिदायतें दीं और कैसे अगाफ़्या

मिख़ाइलोव्ना से रसद का प्रबन्ध छीनने के लिये उससे उलझी। उसने देखा कि कैसे बूढ़ा बावर्ची कीटी को मुग्ध भाव से देखते और उसकी अनुभवहीन तथा असम्भव हिदायतें सुनते हुए मुस्कराया था, कैसे रसदख़ाने में नवयुवती मालिकिन के नये प्रबन्ध के बारे में अगाफ़्या मिख़ाइलोव्ना ने सोच में डूबते हुए स्नेह से सिर हिलाया था, कि कीटी उस समय असाधारण रूप से प्यारी लगती थी, जब वह हंसते-रोते हुए उसके पास आकर यह कहती थी कि नौकरानी माशा उसे छोकरी मानने की ही आदी हो चुकी है और इसलिये कोई भी उसकी बात पर कान नहीं देता है। उसे यह प्रिय, किन्तु अजीब लगता और वह सोचता कि इसके बिना ही बेहतर होता।

लेविन कीटी की स्थिति में हुए परिवर्तन के उस भाव से अनजान था, जो वह यहां आकर अनुभव कर रही थी। मां-बाप के यहां कभी-कभी उसका क्वास के साथ पत्तागोभी खाने को मन होता या वह टॉफ़ी खाना चाहती और दोनों में से कोई भी चीज़ उसे नहीं मिलती थी। किन्तु अब वह जो भी चाहती मंगवा सकती थी, ढेर सारी टॉफ़ियां ख़रीद सकती थी, अपने पास जितने भी चाहती पैसे रख सकती थी और मनपसन्द पेस्ट्री मंगवा सकती थी।

वह अब बहुत ख़ुश होते हुए बच्चों के साथ डौली के अपने यहां आने की कल्पना कर रही थी। ख़ास तौर पर इसलिये कि वह उसके हर बच्चे के लिये उसकी मनपसन्द मिठाई मंगवायेगी और डौली उसकी नयी गृहव्यवस्था का मूल्यांकन कर सकेगी। कीटी ख़ुद नहीं जानती थी कि क्यों और किसलिये, मगर गिरस्ती की झंझटें उसे अदम्य रूप से अपनी ओर खींचती थीं। वह सहजज्ञान से वसन्त की निकटता को अनुभव कर रही थी और यह जानते हुए कि बुरे मौसम के दिन भी आयेंगे, अपने घोंसले को बना रही थी, उसे बनाने और साथ ही यह सीखने की उतावली कर रही थी कि इसे कैसे बनाया जाये।

कीटी की छुटफुट चीज़ों की यह चिन्ता, जो लेविन के प्रारम्भिक समय के ऊंचे सुख-आदर्श के इतनी प्रतिकूल थी, उसकी निराशाओं में से एक थी। यही प्यारी चिन्ता, जिसका अर्थ समझने में वह असमर्थ था, किन्तु वह जिसे पसन्द किये बिना नहीं रह सकता था, उसका एक नया आकर्षण भी थी।

उन दोनों के आपसी झगड़े दूसरी निराशा और आकर्षण थे। लेविन कभी यह कल्पना भी नहीं कर सकता था कि उसके और उसकी पत्नी के बीच बड़े नाजुक, आपसी आदर और प्रेम के अतिरिक्त कोई अन्य सम्बन्ध भी हो सकते हैं, और अचानक पहले ही दिनों में उनके बीच ऐसा मन-मुटाव हो गया कि कीटी ने लेविन से कहा कि वह उसे प्यार नहीं करता, सिर्फ़ अपने को ही प्यार करता है, वह रो पड़ी और हाथ झटककर उसे दूर हटा दिया।

उनके बीच पहला झगड़ा इस बात से हुआ कि लेविन घोड़े पर सवार होकर नया फ़ार्म देखने गया था और वहां उसे आध घण्टा ज़्यादा लग गया, क्योंकि वह छोटे रास्ते से घर लौटना चाहता था और रास्ते में भटक गया। वह केवल कीटी के बारे में, उसके प्यार और सुख के बारे में सोचता हुआ घर लौट रहा था और ज्यों-ज्यों घर के अधिक निकट आता जा रहा था, कीटी के प्रति उसकी प्रेम-भावना और अधिक तीव्र होती जा रही थी। जिस भावना के साथ वह श्चेर्बात्स्की के यहां कीटी के सामने विवाह-प्रस्ताव करने गया था, वह वैसी ही, उससे भी अधिक तीव्र भावना के साथ भागता हुआ कीटी के कमरे में दाखिल हुआ। अचानक उसे अपने सामने बहुत ही उदास, ऐसा भाव लिये हुआ चेहरा दिखाई दिया, जैसा उसने पहले कभी नहीं देखा था। लेविन ने कीटी को चूमना चाहा, मगर उसने उसे परे हटा दिया।

"क्या बात है?"

"तुम मज़े करते हो..." कीटी ने शान्त रहते, किन्तु ज़हरीला तीर छोड़ना चाहते हुए कहना शुरू किया।

किन्तु उसने मुंह खोला ही था कि बेमानी ईर्ष्या से प्रेरित भर्त्सना के शब्द और वह सभी कुछ फूट पड़ा, जो आध घण्टे तक खिड़की में निश्चल बैठे रहने पर उसे व्यथित करता रहा था। केवल इसी समय पहली बार वह बात स्पष्ट रूप से उसकी समझ में आई, जिसे शादी के बाद गिरजे से उसे घर लाते समय वह नहीं समझ पाया था। वह समझ गया कि कीटी न केवल उसके निकट थी, बल्कि यह कि अब उसे यह मालूम नहीं कि कीटी कहां समाप्त होती है और वह खुद कहां शुरू होता है। उसने दो भागों में विभाजित होने की जो यातनापूर्ण

भावना इस क्षण अनुभव की, उसी से वह यह समझ पाया। पहले क्षण में तो उसने कीटी के व्यवहार का बुरा माना, किन्तु उसी समय उसने यह अनुभव किया कि उससे नाराज़ नहीं हो सकता, क्योंकि कीटी वह ख़ुद है। पहले क्षण में उसे उस व्यक्ति जैसी अनुभूति हुई, जो पीछे से ज़ोरदार प्रहार होने पर आगबबूला होकर अपराधी से बदला लेने के लिये मुड़ता है और फिर जिसे यह विश्वास हो जाता है कि भूल से ख़ुद उसने ही अपने को चोट लगा ली है, कि वह किसी पर अपना ग़ुस्सा नहीं निकाल सकता और उसे चोट को सहन तथा अपने को शान्त करना चाहिये।

बाद में उसने इतने ज़ोर से इस चीज़ को कभी महसूस नहीं किया, किन्तु इस बार वह देर तक नहीं सम्भल पाया। उसकी सहज प्रकृति ने उससे यह मांग की कि वह अपनी सफ़ाई दे, कीटी के सामने उसकी भूल प्रमाणित करे, किन्तु उसका अपराध सिद्ध करने का यह मतलब होता कि उसे और चिढ़ाये और उस खाई को और चौड़ा कर दे, जो इस दुख का कारण थी। एक अभ्यस्त भावना उसे इस ओर आकर्षित करती थी कि अपने को अपराध-मुक्त करके कीटी को अपराधी ठहराये, किन्तु एक दूसरी, अधिक प्रबल भावना इस ओर खींचती थी कि जल्दी से, जितनी भी जल्दी हो सके, पैदा हो जानेवाली खाई को बढ़ने न देकर पाट दिया जाये। ऐसे अनुचित अपराध को चुपचाप सहना यातना-पूर्ण था, किन्तु अपनी सफ़ाई देकर कीटी को ठेस लगाना और भी अधिक बुरा था। अर्धनिद्रा में दर्द से छटपटाते व्यक्ति की भांति उसने अपनी दुखती जगह को काटकर दूर फेंक देना चाहा, किन्तु होश में आने पर उसने अनुभव किया कि कसकती जगह तो वह ख़ुद है। उसे केवल यही कोशिश करनी चाहिये थी कि दुखती जगह को दर्द सहन करने में सहायता दे और उसने यही करने की कोशिश की।

इन दोनों के बीच सुलह हो गयी। कीटी ने यह महसूस कर लिया कि क़सूर उसी का है, मगर उसे स्वीकार न करते हुए वह लेविन के प्रति अधिक स्नेहशील हो गयी और उन्होंने प्यार की एक नयी, दुगुनी ख़ुशी अनुभव की। किन्तु इससे ऐसे झगड़ों के भविष्य में दोहराये जाने और सो भी बहुत अप्रत्याशित तथा तुच्छ कारणों से ऐसा होने में कोई अन्तर नहीं पड़ा। ये झगड़े इसलिये भी अक्सर होते थे कि वे दोनों

अभी यह नहीं जानते थे कि एक-दूसरे के लिये क्या महत्त्वपूर्ण है तथा इस कारण भी कि शुरू के इस वक़्त में अक्सर दोनों का मूड ख़राब होता था। जब एक का मूड अच्छा और दूसरे का बुरा होता, तो शान्ति बनी रहती, किन्तु जब दोनों का मूड ख़राब होता, तो समझ में न आनेवाले ऐसे तुच्छ कारणों से झगड़े होते कि बाद में यह याद भी न कर पाते कि किस कारण उनके बीच झगड़ा हुआ था। यह सच है कि जब वे दोनों अच्छे मूड में होते, तो उनके जीवन की ख़ुशी दुगुनी हो जाती। फिर भी इनके जीवन का यह पहला समय बहुत बोझिल था।

शुरू के इस सारे वक़्त में वह ज़ंजीर, जिससे वे दोनों बंधे थे, कभी एक तो कभी दूसरी दिशा में खिंची हुई सी प्रतीत होती रही। कुल मिलाकर, शादी के बाद का वह मधुमास, जिससे सुनी-सुनायी बातों के आधार पर लेविन ने बहुत कुछ की उम्मीद की थी, न केवल मधुर ही नहीं था, बल्कि उन दोनों की स्मृति में उनके जीवन का सबसे बोझिल और लज्जाजनक मास बनकर रह गया। अपने बाद के जीवन में इन दोनों ने अपने स्मृति-पट से इस अटपटे समय की सभी घिनौनी और लज्जाजनक स्थितियों की, जब वे कभी-कभार ही अच्छे मूड में, बहुत कम ही अपने रंग में होते थे, स्मृतियां मिटाने की कोशिश की।

दाम्पत्य जीवन के तीसरे महीने में ही, जब वे एक महीना मास्को में रहकर लौटे, उनका जीवन ढंग से चलने लगा।

(१५)

लेविन और कीटी मास्को से लौटे ही थे तथा अकेले होने पर ख़ुश थे। लेविन अपने अध्ययन-कक्ष में मेज़ पर बैठा लिख रहा था। कीटी गहरे बैंगनी रंग का फ़्राक पहने हुए, जो शादी के फ़ौरन बाद के दिनों में पहनती थी और जो लेविन के लिये विशेष रूप से स्मरणीय तथा प्रिय था, चमड़े के उसी पुराने सोफ़े पर बैठी कशीदाकारी कर रही थी, जो लेविन के बाप और दादा के अध्ययन-कक्ष में रखा रहा था। कीटी की उपस्थिति की चेतना से ख़ुश होता हुआ लेविन सोचता और लिखता जा रहा था। खेतीबारी और किताब लिखने का काम,

जिसमें उसे खेतीबारी के नये ढंग के मूलभूत सिद्धान्त स्पष्ट करने थे, उसने नहीं छोड़ा था। किन्तु जिस तरह पहले उसे ये काम और विचार अपने पूरे जीवन पर छाये अन्धकार की तुलना में महत्त्वहीन और तुच्छ प्रतीत होते थे, उसी प्रकार अब भावी जीवन के उज्ज्वल प्रकाश से चमचमाते सुख की तुलना में भी नगन्य और महत्त्वहीन लग रहे थे। वह अपना काम जारी रख रहा था, किन्तु अब यह महसूस करता था कि उसके ध्यान का केन्द्र-बिन्दु बदल गया है और इसके फलस्वरूप अपने काम को दूसरी तथा अधिक स्पष्ट दृष्टि से देखता है। पहले यह काम उसके लिये जीवन से बचने का साधन था। पहले वह यह अनुभव करता था कि इस काम के बिना उसकी ज़िन्दगी बहुत उदास हो जायेगी। अब उसे इसलिये इस काम की ज़रूरत थी कि उसकी ज़िन्दगी एक ही ढंग से सुखी न रहे। अपनी पाण्डुलिपि को पढ़ने के बाद उसे लगा कि यह काम करने लायक़ है। यह नया और उपयोगी काम था। पहले के बहुत-से विचार उसे फालतू और अतिवादी लगे, किन्तु जब उसने सारी समस्याओं को अपनी स्मृति में ताज़ा किया, तो बहुत-सी भूलें-चूकें उसे स्पष्ट हो गयीं। अब वह रूस में बिना नफ़े की खेतीबारी की स्थिति के बारे में एक नया अध्याय लिख रहा था। वह यह सिद्ध कर रहा था कि न केवल भू-सम्पत्ति का ग़लत विभाजन और ग़लत कृषि-नीति ही रूस की ग़रीबी के कारण हैं, बल्कि पिछले कुछ समय में रूस पर कृत्रिम रूप से लादी गयी विदेशी सभ्यता, विशेषतः यातायात के साधनों, रेलवे ने भी योग दिया है, जिसके फलस्वरूप नगरों में संकेंद्रण तथा ऐश्वर्य का विकास हुआ है और जिसके नतीजे के तौर पर खेती को हानि पहुंचाते हुए फ़ैक्टरी-उद्योग, ऋण-व्यवस्था और उसके अनुगामी शेयर बाज़ार की सट्टेबाज़ी का विकास हुआ है। उसे लगता था कि किसी राज्य में धन के सामान्य विकास की स्थिति में ये सभी चीज़ें तभी होंगी, जब कृषि में काफ़ी श्रम लग चुका हो, जब कृषि सही, कम से कम एक निश्चित स्थिति प्राप्त कर चुकी हो, कि देश के धन का सन्तुलित तथा विशेषतः ऐसे ढंग से विकास होना चाहिये कि धन की दूसरी शाखायें कृषि से आगे न निकल जायें, कि कृषि की स्थिति के अनुरूप ही यातायात के साधनों का विकास करना चाहिये और हमारे यहां भूमि के ग़लत उपयोग के कारण रेलवे, जिसकी

आर्थिक के बजाय राजनीतिक आवश्यकता की वजह से व्यवस्था की गयी, समय से पहले आ गयी और वह खेतीबारी में सहायक होने के स्थान पर, जैसी कि उससे आशा की गयी थी, कृषि को पीछे छोड़ गयी तथा उद्योग और ऋण का विकास करके उसने उसकी प्रगति को रोक दिया। इसलिये, जिस तरह किसी शरीर में किसी एक अंग के एकांगी और समय से पूर्व विकास से सामान्य विकास में बाधा पड़ सकती है, उसी प्रकार रूस में धन के सामान्य विकास के लिये ऋण-व्यवस्था, यातायात के साधनों और फ़ैक्टरी-उद्योगों की वृद्धि ने, जो यूरोप के लिये निश्चय ही आवश्यक हैं, क्योंकि ठीक समय पर पनपे हैं, यहां हानि ही पहुंचाई है, क्योंकि कृषि की सुव्यवस्था के मुख्य प्रश्न को एक ओर को हटा दिया है।

इसी बीच, जब लेविन अपने विचार लिख रहा था, कीटी यह सोच रही थी कि मेरा पति नौजवान प्रिंस चार्स्की के साथ कितनी अस्वाभाविक नम्रता से पेश आया था, जो मास्को से रवाना होने की पूर्ववेला में नादानी दिखाते हुए मेरी प्रशंसा करने लगा था। "यह मेरे कारण ईर्ष्या करता है," वह सोच रही थी। "हे भगवान! कितना प्यारा और कितना बुद्धू है मेरा पति! यह मेरे कारण ईर्ष्या करता है! काश इसे मालूम होता कि मेरे लिये ये सब ऐसे ही हैं, जैसे प्योत्र बावर्ची," कीटी निजी सम्पत्ति की एक अजीब भावना से लेविन की गुद्दी और संवलायी गर्दन को देखते हुए सोच रही थी। "बेशक उसे काम से हटाते हुए दया आ रही है (लेकिन कोई बात नहीं, बाद में कर लेगा!), फिर भी उसका चेहरा देखना चाहिये। वह यह महसूस करेगा या नहीं कि मैं उसकी ओर देख रही हूं? मैं चाहती हूं कि वह मुड़कर देखे! हां, चाहती हूं!" और उसने दृष्टि के प्रभाव को तीव्र करने की इच्छा से आंखों को बहुत अधिक खोल लिया।

"हां, ये सारा रस चूस लेते हैं और झूठी चमक प्रदान करते हैं," लेविन लिखना बन्द करते हुए बुदबुदाया और यह महसूग करके कि कीटी उसकी ओर देखती हुई मुस्करा रही है, उसने मुड़कर देखा।

"क्या बात है?" लेविन ने मुस्कराते और खड़ा होते हुए पूछा।

"मुड़कर देख ही लिया," कीटी ने सोचा।

"कोई बात नहीं, मैं चाहती थी कि तुम मुड़कर देखो," कीटी ने

उसको ग़ौर से देखते और यह अनुमान लगाते हुए कहा कि उसके काम में खलल डालने के कारण उसे बुरा तो नहीं महसूस हुआ।

"कितना अच्छा लगता है हमें जब हम दोनों ही होते हैं! मेरा मतलब, मुझे," कीटी के क़रीब आते और ख़ुशी से मुस्कराते हुए उसने कहा।

"मैं बहुत ख़ुश हूं! मैं अब कहीं भी नहीं जाऊंगी, ख़ासकर मास्को!"

"तुम क्या सोच रही थीं?"

"मैं? मैं सोच रही थी... नहीं, नहीं, जाओ लिखो, दूसरी बातों की तरफ़ ध्यान नहीं दो," उसने होंठों पर बल डालते हुए कहा, "और मुझे अब इन सूराखों को काटना है, देखते हो न?"

कीटी ने कैंची लेकर उन्हें काटना शुरू कर दिया।

"नहीं, बताओ तो, क्या सोच रही थीं?" लेविन ने उसके पास बैठते और छोटी-सी कैंची की चक्राकार गतिविधि को देखते हुए कहा।

"ओह, तो क्या सोच रही थी मैं? मैं मास्को के बारे में, तुम्हारी गुद्दी के बारे में सोच रही थी।"

"किसलिये मुझे ऐसा सौभाग्य मिला है? यह अस्वाभाविक-सा है। सच नहीं प्रतीत होता," उसने कीटी का हाथ चूमते हुए कहा।

"मेरे लिये इसके उलट बात है, जितना अधिक सुख मिलता है, उतना ही अधिक स्वाभाविक लगता है।"

"तुम्हारी एक लट बिखरी हुई है," उसने सावधानी से उसका सिर अपनी ओर मोड़ते हुए कहा। "लट। देखती हो, यह रही। नहीं, नहीं, हमें अपना-अपना काम करना है।"

काम जारी नहीं रहा और जब नौकर कुज़्मा यह कहने के लिये आया कि चाय मेज़ पर रख दी गयी है, तो वे अपराधियों की भांति उछलकर एक-दूसरे से अलग हो गये।

"शहर से लोग वापस आ गये हैं?" लेविन ने कुज़्मा से पूछा।

"अभी-अभी आये हैं, सामान खोल रहे हैं।"

"जल्दी से आ जाओ," कीटी ने अध्ययन-कक्ष से बाहर जाते हुए कहा, "नहीं तो तुम्हारे बिना ही चिट्ठियां पढ़ लूंगी। इसके बाद हम दोनों मिलकर पियानो बजायेंगे।"

अकेला रह जाने और कीटी द्वारा ख़रीदे गये नये थैले में अपनी कापी रखने के बाद वह नयी चिलमची में नयी और शानदार क़िस्म की चीज़ों से, जो कीटी के आने के बाद ही इस घर में आयी थीं, हाथ धोने लगा। लेविन अपने विचारों पर मुस्करा रहा था और मानो भर्त्सना करता हुआ सिर हिला रहा था। पश्चाताप जैसा भाव उसे यातना दे रहा था। उसकी इस समय की ज़िन्दगी में उसे कुछ लज्जाजनक, पुरुषत्व के कुछ प्रतिकूल, कुछ ज़नानापन-सा, जैसी कि उसने इसे संज्ञा दी, अनुभव हो रहा था। "ऐसे जीना ठीक नहीं," वह सोच रहा था। "जल्द ही तीन महीने हो जायेंगे और मैं लगभग कुछ नहीं कर रहा हूं। आज ही मैंने पहली बार गम्भीरता से कुछ काम करना शुरू किया था और क्या नतीजा निकला? शुरू करते ही छोड़ दिया। इतना ही नहीं, अपने सामान्य काम-काज की भी मैं लगभग अवहेलना कर रहा हूं। खेतीबारी की देखभाल के लिये भी मैं लगभग नहीं जाता हूं। या तो कीटी को अकेली छोड़ते हुए मेरे दिल को कुछ होता है या फिर देखता हूं कि उसे ऊब महसूस हो रही है। लेकिन मैं तो यह सोचता था कि शादी के पहले की ज़िन्दगी यों ही होती है, उसकी कोई गिनती नहीं की जाती और शादी के बाद ही असली ज़िन्दगी शुरू होती है। अब जल्द ही तीन महीने हो जायेंगे और मैंने पहले कभी ऐसी काहिली में और इतना अनुपयोगी समय नहीं बिताया था। नहीं, यह ठीक नहीं, मुझे काम शुरू करना चाहिये। ज़ाहिर है कि कीटी का उसमें कोई दोष नहीं। उसकी किसी भी चीज़ के लिये भर्त्सना नहीं की जा सकती। ख़ुद मुझे ही अधिक दृढ़ होना चाहिये, पुरुषोचित स्वतन्त्रता की रक्षा करनी चाहिये। नहीं तो मैं ख़ुद भी इसका आदी हो जाऊंगा और उसे भी इसका आदी बना दूंगा... ज़ाहिर है कि उसका कोई दोष नहीं," उसने अपने आपसे कहा।

किन्तु असन्तुष्ट व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति की, उसी की, जो उसके सबसे अधिक निकट होता है, अपने असन्तोष के लिये भर्त्सना किये बिना नहीं रह सकता। लेविन के दिमाग़ में धुंधला-सा यह विचार आता था कि कीटी ख़ुद तो दोषी नहीं (वह किसी बात के लिये भी दोषी नहीं हो सकती थी), मगर उसका पालन-शिक्षण, जो बहुत सतही और बेमानी था, इसके लिये ज़िम्मेदार था ("उस उल्लू चार्स्की

को ही ले लो – मैं जानता हूं कि कीटी उसे रोकना चाहती थी, किन्तु ऐसा नहीं कर सकी")। "हां, घर में दिलचस्पी लेने के अलावा (यह तो उसमें थी), अपनी पोशाकों और कशीदाकारी के सिवा उसकी कुछ भी गम्भीर रुचियां नहीं हैं। उसे मेरे काम, खेतीबारी, किसानों, संगीत, जिसमें वह काफ़ी प्रवीण है, और किताबों में भी रुचि नहीं है। वह कुछ नहीं करती और बिल्कुल सन्तुष्ट है।" लेविन मन ही मन इसकी भर्त्सना करता था और अभी यह नहीं समझता था कि कीटी अपने को क्रियाशीलता के उस समय के लिये तैयार कर रही थी, जब वह एक साथ ही अपने पति की पत्नी और गृह-स्वामिनी होगी, बच्चों को जन्म देगी, उन्हें अपना दूध पिलायेगी और उनका पालन-शिक्षण करेगी। उसने यह नहीं सोचा कि कीटी सहज ज्ञान से यह जानती है और अपने को इस भयानक श्रम के लिये तैयार करते हुए मस्ती और प्रणय-सुख के उन क्षणों के लिये अपनी भर्त्सना नहीं करती है, जिनसे उल्लासपूर्वक भावी घोंसला बनाते हुए वह इस समय आनन्दित होती है।

(१६)

लेविन जब ऊपर वाले कमरे में दाख़िल हुआ, तो उसकी बीवी चांदी के नये समोवार और चाय के नये बर्तनों के पास बैठी थी। बूढ़ी अगाफ़्या मिख़ाइलोव्ना को चाय का प्याला देकर उसने उसे छोटी मेज़ पर बिठा दिया था और ख़ुद डौली का ख़त पढ़ रही थी, जिसके साथ उसका लगातार और अक्सर पत्रव्यवहार होता रहता था।

"देखिये, आपकी श्रीमती जी ने मुझे यहां बिठा दिया है, अपने साथ बैठने को कहा है," अगाफ़्या मिख़ाइलोव्ना ने स्नेहपूर्ण मुस्कान से कीटी की ओर देखते हुए कहा।

अगाफ़्या मिख़ाइलोव्ना के इन शब्दों से लेविन को उस नाटक के अन्त की अनुभूति हुई, जो पिछले कुछ अर्से से अगाफ़्या मिख़ाइलोव्ना और कीटी के बीच खेला जा रहा था। उसने महसूस किया कि नयी गृह-स्वामिनी यानी कीटी ने गृह-प्रबन्ध की बागडोर छीनकर अगाफ़्या मिख़ाइलोव्ना के दिल को जो ठेस लगायी थी, उसके बावजूद कीटी

ने उसका मन जीत लिया है और उसे अपने को प्यार करने के लिये विवश कर दिया है।

"तो मैंने तुम्हारा ख़त पढ़ लिया," लेविन को गंवारू ढंग से लिखा पत्र देते हुए कीटी ने कहा। "लगता है उसी, तुम्हारे भाई वाली औरत का है..." कीटी ने कहा। "मैंने इसे पढ़ा नहीं। यह पत्र घर से आया है और यह डौली का है। तुम कल्पना करो! डौली ग्रीशा और तान्या को सारमात्स्की परिवार में आयोजित बच्चों के बॉल में ले गयी थी। तान्या फ़्रांसीसी मार्कीज़ बनकर वहां गयी थी।"

किन्तु लेविन उसकी बात नहीं सुन रहा था। उसने लज्जारुण होते हुए अपने भाई निकोलाई की भूतपूर्व प्रेमिका मारीया निकोलायेव्ना का पत्र लेकर उसे पढ़ना शुरू कर दिया। मारीया निकोलायेव्ना का यह दूसरा पत्र था। अपने पहले पत्र में उसने लिखा था कि लेविन के भाई ने किसी अपराध के बिना ही उसे अपने से दूर भगा दिया था और मर्मस्पर्शी भोलेपन से इतना और जोड़ दिया था कि यद्यपि वह फिर से तंगदस्ती का शिकार है, तो भी कोई मदद और कुछ भी नहीं चाहती तथा यही एक विचार उसे खाये जा रहा है कि बेहद बुरी सेहत की वजह से उसके बिना निकोलाई द्मीत्रियेविच की जान नहीं बच पायेगी। उसने लेविन से भाई की चिन्ता करने का अनुरोध किया था। इस बार उसने दूसरी ही बात लिखी थी। उसने निकोलाई द्मीत्रियेविच को ढूंढ़ लिया था, फिर से मास्को में उसकी संगिनी बन गयी थी और गुबेर्निया के एक शहर में, जहां निकोलाई को नौकरी मिल गयी थी, उसके साथ गयी थी। किन्तु निकोलाई का वहां अपने संचालक से झगड़ा हो गया और वे मास्को लौट चले। किन्तु रास्ते में वह इतना सख़्त बीमार हो गया कि अब शायद ही कभी बिस्तर से उठ पाये। "आपको ही याद करते रहते हैं और अब पैसे भी नहीं हैं।"

"लो पढ़ो, डौली ने तुम्हारे बारे में लिखा है," कीटी ने मुस्कराते हुए कहना शुरू किया, मगर पति के चेहरे का भाव-परिवर्तन देखकर अचानक चुप हो गयी।

"क्या बात है? क्या लिखा है इस ख़त में?"

"उसने लिखा है कि मेरा भाई निकोलाई मरनेवाला है। मैं जाऊंगा।"

कीटी के चेहरे का भाव एकदम बदल गया। तान्या के मार्कीज़ बनने तथा डौली के बारे में आनेवाला विचार तुरंत लुप्त हो गया।

"कब जाओगे?" कीटी ने पूछा।

"कल।"

"मैं भी तुम्हारे साथ चल सकती हूं?" उसने पूछा।

"कीटी! यह क्या क़िस्सा है?" लेविन ने धिक्कारते हुए कहा।

"क्या कहना चाहते हो तुम?" कीटी ने इस बात का बुरा माना कि लेविन उसके प्रस्ताव के प्रति अनिच्छा और खीझ प्रकट कर रहा है। "मैं क्यों नहीं चल सकती? मैं तुम्हारे आड़े नहीं आऊंगी। मैं ..."

"मैं इसलिये जा रहा हूं कि मेरा भाई मर रहा है," लेविन ने कहा। "मगर तुम किसलिये ..."

"किसलिये? उसीलिये, जिसलिये तुम।"

"मेरे लिये इतने गम्भीर क्षण में भी वह यही सोच रही है कि उसे अकेली रहने पर ऊब महसूस होगी," लेविन ने सोचा। ऐसे गम्भीर मामले में कीटी के ऐसे रवैये पर वह झल्ला उठा।

"यह सम्भव नहीं," उसने कड़ाई से कहा।

अगाफ़्या मिख़ाइलोव्ना ने यह देखकर कि मामला झगड़े की हद तक पहुंच रहा है, धीरे से प्याला मेज़ पर रख दिया और बाहर चली गयी। कीटी का तो उसकी ओर ध्यान भी नहीं गया। पति ने जिस अन्दाज़ में अन्तिम शब्द कहे थे, उससे उसको ख़ास तौर पर इसलिये ठेस लगी थी कि वह स्पष्टतः उस बात का विश्वास नहीं कर रहा था, जो उसने कही थी।

"और मैं तुमसे यह कह रही हूं कि अगर तुम जाओगे, तो मैं भी तुम्हारे साथ जाऊंगी, ज़रूर जाऊंगी," कीटी ने जल्दी-जल्दी और ग़ुस्से से कहा। "क्यों यह सम्भव नहीं? तुम क्यों कहते हो कि सम्भव नहीं?"

"क्योंकि ख़ुदा ही जानता है कि कहां-कहां और किन-किन रास्तों से, कैसे-कैसे होटलों में जाना होगा। तुम मेरे लिये परेशानी बनी रहोगी," लेविन ने शान्त रहने की कोशिश करते हुए कहा।

"ज़रा भी परेशान नहीं करूंगी तुम्हें। मुझे कुछ भी नहीं चाहिये। जहां तुम हो सकते हो, वहीं मैं भी ..."

"केवल इस एक कारण से ही कि वहां वह औरत होगी, जिसकी निकटता तुम्हें अच्छी नहीं लगेगी।"

"मैं कुछ नहीं जानती और जानना नहीं चाहती कि वहां कौन और क्या है। मैं जानती हूं कि मेरे पति का भाई मर रहा है, पति उसके पास जा रहा है और मैं पति के साथ जा रही हूं, ताकि..."

"कीटी! बुरा नहीं मानो। लेकिन तुम सोचो, यह इतना गम्भीर मामला है और मुझे इस ख़्याल से दुख हो रहा है कि तुम अपनी कमज़ोरी को बीच में ला रही हो, अकेली नहीं रहना चाहती हो। तुम्हें अकेली रह जाने पर ऊब अनुभव होगी, तो तुम मास्को चली जाओ।"

"तुम हमेशा बुरे और कमीने विचारों को मेरे साथ जोड़ देते हो," कीटी अपमान और क्रोध के आंसू छलकाते हुए कह उठी। "ऐसी कोई बात नहीं है, कोई कमज़ोरी, कुछ नहीं है... मैं अनुभव करती हूं कि दुख-मुसीबत के वक़्त पति के साथ होना मेरा कर्त्तव्य है। लेकिन तुम जान-बूझकर मेरा दिल दुखाना चाहते हो, जान-बूझकर यह समझना नहीं चाहते..."

"नहीं, यह बड़ी भयानक बात है! किसी का ग़ुलाम होना!" लेविन उठते हुए चिल्ला पड़ा। वह अब अपने ग़ुस्से को वश में रखने में असमर्थ था। किन्तु इसी क्षण उसने अनुभव किया कि ख़ुद अपने पर चोट कर रहा है।

"तो तुमने शादी क्यों की? आज़ाद रहते। अगर तुम्हें पश्चाताप हो रहा है, तो शादी क्यों की?" कीटी ने कहा, उछलकर खड़ी हुई और मेहमानख़ाने की तरफ़ भाग गयी।

लेविन जब मेहमानख़ाने में उसके पास गया, तो आंसुओं से कीटी का गला रुंधा जा रहा था।

लेविन ने ऐसे शब्द खोजने की कोशिश करते हुए बोलना शुरू किया, जिनसे कीटी अपनी राय बदलने के बजाय शान्त हो जाये। किन्तु वह उसकी बात नहीं सुन रही थी और किसी भी चीज़ से सहमत नहीं हो रही थी। लेविन ने कीटी की ओर झुककर उसका विरोध करता हुआ हाथ अपने हाथ में ले लिया। उसने उसका हाथ चूमा, बाल चूमे, फिर से उसका हाथ चूमा – कीटी ख़ामोश ही रही। किन्तु

जब लेविन ने दोनों हाथों से उसका चेहरा साधकर "कीटी" कहा, तो वह अचानक सम्भली, रो पड़ी और उसने उससे सुलह कर ली।

यह तय हुआ कि अगले दिन वे दोनों एक साथ जायेंगे। लेविन ने पत्नी से कहा कि वह ऐसा मानता है कि उपयोगी सिद्ध होने के लिये ही वह उसके साथ चल रही है और सहमत हो गया कि मारीया निकोलायेव्ना का उसके भाई के निकट उपस्थित रहना कोई अशिष्ट बात नहीं है। किन्तु दिल की गहराई में वह कीटी और ख़ुद अपने से असन्तुष्ट था। कीटी से वह इसलिये असन्तुष्ट था कि जब ऐसा करना ज़रूरी था, तब भी वह उसे जाने देने के लिये अपने को राज़ी नहीं कर सकी (और यह सोचना कितना अजीब था कि कुछ ही समय पहले वह ऐसे सौभाग्य पर विश्वास नहीं कर सकता था कि कीटी उसे प्यार कर सकती है और अब इसलिये दुखी था कि वह उसे कुछ अधिक ही प्यार करती है!)। और अपने से इसलिये असन्तुष्ट था कि चरित्र की दृढ़ता नहीं दिखा सका। इसके अलावा वह अपनी आत्मा में इस बात से भी सहमत नहीं था कि भाई के साथ रहनेवाली औरत की उपस्थिति से उसे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता और यह कल्पना करके उसका दिल कांप उठा कि उनके बीच कैसी ज़ोरदार झड़पें हो सकती हैं। केवल यही ख़्याल कि उसकी पत्नी, उसकी कीटी एक वेश्या के साथ एक ही कमरे में रहेगी, उसे घृणा तथा भय से कांपने के लिये विवश करता था।

(१७)

निकोलाई लेविन गुबेर्निया के मुख्य नगर के जिस होटल में बिस्तर पर पड़ा था, गुबेर्निया के ऐसे होटलों में से था, जो नवीनतम सुधारों के आधार पर सफ़ाई, सुविधा, यहां तक कि सुन्दरता से बनाये जाते हैं, मगर जो उनमें रहनेवाले लोगों के कारण बहुत् जल्दी से आधुनिक सुधारों का दावा करनेवाली गन्दी सरायों में बदल जाते हैं और आधुनिकता के ऐसे दावों के कारण ही पुराने, गन्दे होटलों से भी बुरे हो जाते हैं। यह होटल ऐसी ही अवस्था को पहुंच चुका था। गन्दी वर्दी पहने हुए फ़ौजी, जो दरवाज़े पर खड़ा सिगरेट पी रहा था और द्वारपाल

का काम पूरा करता था, कच्चे लोहे की भोंडी सजावटवाली उदास और अप्रिय-सी सीढ़ी, मैले फ़्राक-कोट में गुस्ताख़-सा वेटर, सामान्य हॉल की मेज़ पर रखा और धूल से ढका हुआ मोम के फूलों का गुलदस्ता, सभी जगह पर नज़र आ रही गन्दगी, धूल और गड़बड़ी, तथा इसके साथ ही रेलवे स्टेशन जैसी आधुनिक और आत्मतुष्ट चहल-पहल – इन सभी चीज़ों ने लेविन दम्पति पर ताज़ा घरेलू जीवन के बाद बहुत बुरा प्रभाव डाला, विशेषतः इसलिये कि होटल द्वारा पैदा किया गया झूठा प्रभाव उससे बिल्कुल मेल नहीं खाता था, जो उनकी राह देख रहा था।

जैसा कि हमेशा होता है, यह पूछे जाने के बाद कि उन्हें कितने किराये का कमरा चाहिये, यह पता चला कि एक भी अच्छा कमरा ख़ाली नहीं है। एक अच्छे कमरे में रेलवे का इन्स्पेक्टर ठहरा हुआ था, दूसरे में मास्को से आया हुआ वकील और तीसरे में गांव से आई हुई प्रिंसेस आस्ताफ़्येवा। एक गन्दा-सा कमरा ख़ाली था, जिसकी बग़ल में शाम तक एक और कमरा ख़ाली हो जाने का विश्वास दिलाया गया। इस बात के लिये बीवी पर क्रुद्ध होते हुए कि उसने जैसी आशा की थी, वही हो रहा है, यानी यहां आने पर जब उसका हृदय इसलिये अत्यधिक विह्वल है कि भाई की कैसी हालत है, फ़ौरन भाई के पास भाग जाने के बजाय उसे पत्नी की चिन्ता करनी पड़ रही है, लेविन पत्नी को उस कमरे में ले गया, जो उन्हें दिया गया था।

"तुम जाओ, भाई के पास जाओ!" कीटी ने सहमी-सहमी और अपराधी की सी दृष्टि से लेविन की ओर देखते हुए कहा।

लेविन चुपचाप कमरे से बाहर निकला और दरवाज़े पर ही मारीया निकोलायेव्ना से उसकी भेंट हो गयी, जिसे उसके आने की ख़बर मिल गयी थी और जो उसके कमरे में दाख़िल होने की हिम्मत नहीं कर पा रही थी। मारीया निकोलायेव्ना बिल्कुल वैसी ही थी, जैसी लेविन ने उसे मास्को में देखा था। वह कफ़-कालरों के बिना वही ऊनी फ़्राक पहने थी और उसके कुछ कुछ भर गये चेचकरू चेहरे पर वही सौजन्यपूर्ण तथा जड़ता का सा भाव था।

"तो? कैसा है मेरा भाई? कैसा है?"

"बहुत बुरी हालत है। उठ नहीं पाते। लगातार आपकी ही

राह देख रहे हैं। वे भी... आप... पत्नी के साथ आये हैं।"

लेविन शुरू में यह समझ नहीं पाया कि उसे किस चीज़ से परेशानी हो रही है, किन्तु मारीया निकोलायेव्ना ने तत्काल बात स्पष्ट कर दी।

"मैं चली जाऊंगी, मैं रसोईघर में चली जाऊंगी," उसने कहा। "आपके भाई खुश होंगे। उन्होंने उनके आने के बारे में सुना है, उन्हें जानते हैं और उनसे विदेश में हुई भेंट याद है।"

लेविन समझ गया कि उसका अभिप्राय कीटी से है और नहीं समझ पा रहा था कि क्या जवाब दे।

"आइये चलें, वहां चलें!" लेविन ने कहा।

किन्तु उसने क़दम बढ़ाया ही था कि उसके कमरे का दरवाज़ा खुला और कीटी ने बाहर झांका। लेविन अपनी बीवी के कारण, जिसने अपने को और उसे ऐसी अटपटी स्थिति में डाल दिया था, शर्म और गुस्से से लाल हो उठा। किन्तु मारीया निकोलायेव्ना की और भी अधिक बुरी हालत थी। वह सिमटती-सिकुड़ती जा रही थी, शर्म से लाल हो गयी थी और उसकी आंखें तक डबडबा आईं। यह न जानते हुए कि क्या कहे तथा क्या करे, वह दोनों हाथों से रूमाल के सिरे पकड़कर अपनी लाल उंगलियों से उन्हें घुमाने लगी।

पहले क्षण में लेविन को कीटी की उस दृष्टि में, जिससे वह इस समझ में न आनेवाली और भयानक नारी को देख रही थी, अत्यधिक जिज्ञासा की झलक मिली। किन्तु यह केवल एक क्षण तक ही बनी रही।

"तो? कैसे हैं वे?" उसने पति और फिर मारीया निकोलायेव्ना को सम्बोधित किया।

"यह बात करने की जगह नहीं है!" लेविन ने झल्लाहट से उस महाशय की ओर मुड़कर देखते हुए कहा, जो इसी समय टांगों को डोलाते हुए मानो अपने काम से गलियारे में से जा रहा था।

"तो भीतर आ जाइये," कीटी ने अब तक सम्भल चुकी मारीया निकोलायेव्ना से कहा, किन्तु पति का डरा-सा चेहरा देखकर बोली – "या फिर जाइये, वहां जाइये और मुझे बुलवा भेजिये," और अपने कमरे में लौट गयी। लेविन भाई की ओर चल दिया।

भाई के कमरे में जाकर उसने जो कुछ देखा और अनुभव किया, लेविन ने उसकी कभी आशा नहीं की थी। उसे उम्मीद थी कि वह

आत्म-प्रवंचना की वही स्थिति पायेगा, जो, जैसा कि उसने सुना था, तपेदिक़ के मरीज़ों में अक्सर पायी जाती है और जिससे वह पतझर में भाई के अपने यहां आने पर बहुत चकित हुआ था। उसने आशा की थी कि मृत्यु की निकटता के शारीरिक लक्षण – बड़ी कमज़ोरी, बेहद दुबलापन – नज़र आयेंगे, किन्तु फिर भी वही पहले जैसी अवस्था होगी। उसने उम्मीद की थी कि वह ख़ुद प्यारे भाई के न ज़िन्दा रहने और मौत के उसी भय को अनुभव करेगा, जो उसने तब अनुभव किया था, किन्तु यह अनुभूति कुछ अधिक तीव्र होगी। वह इसके लिये अपने को तैयार करता रहा था, मगर वहां उसने बिल्कुल दूसरी ही चीज़ पायी।

एक छोटे-से गन्दे कमरे में, जिसकी दीवारों के रंगीन खण्ड थूकने से ख़राब हो गये थे, जिसकी हवा गन्दी और सड़ी हुई थी और जिसे पतली-सी विभाजन-दीवार द्वारा दूसरे कमरे से अलग किया गया था तथा जहां से लोगों की आवाज़ें सुनाई दे रही थीं, दीवार से हटे हुए पलंग पर कम्बल से ढका हुआ एक शरीर था। इस शरीर की एक बांह कम्बल के ऊपर थी और इस बांह का पांचे जैसा बड़ा हाथ समझ में न आनेवाले ढंग से पतले, आरम्भ से कोहनी तक सामान आकार के और लम्बे तकुए के साथ जुड़ा हुआ था। सिर एक ओर को तकिये पर टिका हुआ था। लेविन को कनपटियों पर पसीने से तर विरले बाल और पतली, मानो पारदर्शी त्वचा वाला माथा दिखाई दे रहा था।

"ऐसा नहीं हो सकता कि यह भयानक शरीर मेरा भाई निकोलाई ही है," लेविन ने सोचा। किन्तु वह निकट गया, उसने चेहरे को देखा और सन्देह की कोई गुंजाइश नहीं रही। चेहरे के भयानक परिवर्तन के बावजूद लेविन के लिये उसके भीतर आने पर ऊपर उठनेवाली सजीव आंखों को देखना, चिपचिपी मूंछों के नीचे मुंह की हल्की-सी हरकत की तरफ़ ध्यान देना ही इस भयानक सत्य को समझने के हेतु पर्याप्त था कि यह मृत शरीर उसका जीवित भाई है।

निकोलाई की चमकती आंखों ने कमरे में दाख़िल होते भाई को भर्त्सना और कठोरता से देखा। इस नज़र से फ़ौरन जीवितों के बीच जीवित सम्बन्ध स्थापित हो गया। लेविन ने अपने पर टिकी हुई नज़र में तत्काल भर्त्सना और अपने सुख-सौभाग्य के लिये पश्चाताप अनुभव किया।

लेविन ने जब उसका हाथ अपने हाथ में लिया, तो निकोलाई मुस्करा दिया। यह मुस्कान हल्की, तनिक दिखाई देनेवाली थी, मगर मुस्कान के बावजूद आंखों के कठोर भाव में कोई परिवर्तन नहीं हुआ।

"तुमने मुझे इस रूप में पाने की आशा नहीं की होगी," निकोलाई ने बड़ी मुश्किल से कहा।

"हां... नहीं," लेविन ने शब्दों को गड़बड़ाते हुए उत्तर दिया। "तुमने पहले ही यानी मेरी शादी के वक़्त अपने बारे में सूचना क्यों नहीं दी? मैंने हर जगह तुम्हारे बारे में जानकारी पाने की कोशिश की।"

मौन न रहा जाये, इसलिये कुछ कहना ज़रूरी था, मगर लेविन समझ नहीं पा रहा था कि क्या कहे, ख़ास तौर पर इसलिये कि भाई कोई जवाब दिये बिना सिर्फ़ टकटकी बांधकर देखता जा रहा था और स्पष्टतः हर शब्द के अर्थ को समझने का यत्न कर रहा था। लेविन ने भाई को बताया कि उसकी पत्नी भी साथ आई है। निकोलाई ने ख़ुशी ज़ाहिर की, मगर कहा कि अपनी ऐसी स्थिति से वह उसे डराते हुए घबराता है। इसके बाद ख़ामोशी छा गयी। निकोलाई अचानक हिला-डुला और कुछ कहने लगा। लेविन ने भाई के चेहरे के भाव से कुछ बहुत ही अर्थपूर्ण और महत्त्वपूर्ण बात की आशा की, किन्तु निको-लाई ने अपने स्वस्थ्य की चर्चा की। उसने डाक्टर को दोष दिया, अफ़सोस ज़ाहिर किया कि मास्को का नामी डाक्टर उसके इलाज के लिये यहां नहीं है और लेविन समझ गया कि वह अभी भी ज़िन्दा रह पाने की उम्मीद कर रहा है।

ख़ामोशी के पहले क्षण का ही लाभ उठाते हुए लेविन उठकर खड़ा हो गया, ताकि बेशक घड़ी भर को ही यातनापूर्ण भावना से मुक्ति पा सके और उसने भाई से कहा कि अपनी पत्नी को लेकर आता है।

"अच्छी बात है और मैं यहां सफ़ाई करने को कह देता हूं। मेरे ख़्याल में तो यहां बहुत गन्दगी है और बदबू आती है। माशा! यहां सफ़ाई कर दो," रोगी ने बड़ी मुश्किल से कहा। "और सफ़ाई करते ही ख़ुद भी यहां से चली जाओ," उसने प्रश्नसूचक दृष्टि से भाई की ओर देखते हुए इतना और जोड़ दिया।

लेविन ने कोई जवाब नहीं दिया। गलियारे में आकर वह रुक

गया। उसने कहा था कि पत्नी को लेकर आ रहा है, किन्तु अब उस भावना का विश्लेषण करने पर, जो वह अनुभव कर रहा था, उसने तय किया कि उल्टे पत्नी को रोगी के निकट न आने के लिये राज़ी करने की कोशिश करेगा। "मेरी तरह भला वह क्यों यातना सहे?" उसने सोचा।

"कहो? कैसी तबीयत है?" कीटी ने, जिसके चेहरे पर भय अंकित था, पूछा।

"ओह, बहुत भयानक, बहुत भयानक! तुम क्यों यहां आई हो?" लेविन ने कहा।

कीटी कुछ क्षण तक सहमी और दयापूर्ण दृष्टि से पति की ओर देखती हुई चुप रही, इसके बाद उसके क़रीब गयी और दोनों हाथों से उसकी कोहनी थाम ली।

"कोस्त्या! मुझे उसके पास ले चलो, हम दोनों के लिये यह सहन करना अधिक आसान होगा। तुम केवल मुझे वहां ले चलो, कृपया ले चलो और चले जाओ," उसने कहा। "तुम इस बात को समझो कि मेरे लिये तुम्हें देखना और उसे न देखना कहीं अधिक कष्टप्रद है। सम्भव है कि वहां मैं तुम्हारे और तुम्हारे भाई के लिये कुछ उपयोगी सिद्ध हो सकूं। कृपया, मुझे ले चलो!" वह पति की ऐसे मिन्नत-समाजत कर रही थी मानो इसी पर उसके जीवन का सुख-सौभाग्य निर्भर हो।

लेविन को राज़ी होना पड़ा और सम्भल कर तथा मारीया निकोलायेव्ना के बारे में पूरी तरह भूलकर वह कीटी को साथ लिये हुए फिर से भाई की तरफ़ चल दिया।

फुर्ती से क़दम उठाती और पति को एकटक देखती तथा अपने चेहरे पर दिलेरी और सहानुभूति से ओत-प्रोत भाव लाते हुए उसने रोगी के कमरे में प्रवेश किया और धीरे से घूमकर आहट किये बिना दरवाज़ा बन्द कर दिया। वह दबे पांव तेज़ी से रोगी के बिस्तर के क़रीब ऐसे गयी कि उसे अपना सिर न मोड़ना पड़े, उसके बहुत बड़े हड़ीले हाथ को उसने अपने ताज़ा और जवान हाथ में ले लिया, धीरे से दबाया और केवल नारियों के लिये ही सम्भव, नाराज़ न करनेवाले, सहानुभूतिपूर्ण और हल्की सजीवतावाले अन्दाज़ में उससे बात करने लगी।

"हम सोडेन में मिले थे, मगर तब हमारा परिचय नहीं हुआ था," कीटी ने कहा। "आपने सोचा भी नहीं होगा कि मैं आपकी छोटी भाभी बन जाऊंगी।"

"आप तो मुझे पहचान न पातीं," निकोलाई ने कीटी के आने पर अपनी खिली मुस्कान के साथ कहा।

"नहीं, मैंने पहचान लिया होता। आपने कितना अच्छा किया कि हमें ख़बर भिजवा दी। कोस्त्या हर दिन ही आपको याद और आपके बारे में चिन्ता करता था।"

किन्तु रोगी की सजीवता कुछ ही देर तक बनी रही।

कीटी ने अपनी बात ख़त्म भी नहीं की थी कि निकोलाई के चेहरे पर जीवित के प्रति मरते हुए व्यक्ति की ईर्ष्या का कठोर और भर्त्सनापूर्ण भाव फिर से झलक उठा।

"मुझे लगता है कि यह कमरा आपके लिये काफ़ी अच्छा नहीं है," कीटी ने निकोलाई की बेधती दृष्टि से बचते और कमरे में नज़र घुमाते हुए कहा। "होटल के मालिक से दूसरे कमरे के लिये कहना होगा," कीटी ने पति से कहा, "सो भी हमारे नज़दीक ही।"

(१८)

लेविन शान्त भाव से भाई की ओर नहीं देख सकता था, उसकी उपस्थिति में ख़ुद भी शान्त नहीं रह सकता था। जब वह रोगी के कमरे में जाता, तो अनजाने ही उसकी आंखों और उसके ध्यान पर पर्दा-सा पड़ जाता और वह भाई की स्थिति की तफ़सीलों को नहीं देख पाता था। वह भयानक बदबू महसूस करता, गन्दगी, गड़बड़, यातनापूर्ण स्थिति देखता और आह-कराह सुनता तथा महसूस करता कि इस मामले में कुछ नहीं किया जा सकता। उसके दिमाग़ में यह ख़्याल तक नहीं आया कि रोगी की स्थिति की तफ़सीलों का विश्लेषण करे, यह सोचे कि कम्बल के नीचे यह शरीर किस स्थिति में है, उसकी सूखी हुई टांगें, कमर और पीठ कैसी टेढ़ी-मेढ़ी हालत में हैं और क्या उनको कुछ बेहतर ढंग से नहीं टिकाया जा सकता, कुछ तो ऐसा किया जाये कि अगर स्थिति बहुत बेहतर न हो सके, तो इतनी बुरी भी न रहे।

वह जब इन सभी तफ़सीलों के बारे में सोचने लगता, तो उसके रोंगटे खड़े हो जाते। उसे पूरी तरह से यक़ीन हो चुका था कि न तो भाई की ज़िन्दगी को बढ़ाने और न ही उसकी यातना को कम करने के लिये कुछ करना सम्भव है। किन्तु उसकी इस बात की चेतना को कि कुछ भी नहीं किया जा सकता, रोगी महसूस करता और उसे इस कारण झल्लाहट होती। इसलिये लेविन पर और भी भारी गुज़रती। उसके लिये रोगी के कमरे में होना यातना था और वहां न होना और भी अधिक यातनाप्रद था। और वह अकेला रहने में असमर्थ होने के कारण तरह-तरह के बहानों से लगातार इस कमरे में आता और बाहर जाता।

किन्तु कीटी न तो ऐसे सोचती, न ऐसे महसूस करती थी और उसकी गतिविधि भी ऐसी नहीं थी। रोगी को देखकर उसे उसपर दया आई। इस दया ने उसके नारी-हृदय में अरुचि और घिन का वह भाव पैदा नहीं किया, जो उसने उसके पति के हृदय में पैदा किया था, बल्कि क्रियाशीलता, उसकी स्थिति की सारी तफ़सीलें जानने और मदद करने के लिये प्रेरित किया। चूंकि उसके दिल में इस बात का तनिक भी सन्देह नहीं था कि उसे उसकी मदद करनी चाहिये, इसलिये उसे इस बात का भी सन्देह नहीं था कि ऐसा किया जा सकता है और वह फ़ौरन इस काम में जुट गयी। उसका पति जिन तफ़सीलों के बारे में सोचने भर से कांप उठता था, उसने फ़ौरन उनकी ओर ध्यान दिया। उसने डाक्टर को बुलवा भेजा, दवाफ़रोश के यहां किसी को भिजवाया और अपने साथ आनेवाली नौकरानी तथा मारीया निकोलायेव्ना को झाड़ने-बुहारने, धोने, सफ़ाई करने के काम में जुटाया, ख़ुद भी कुछ रगड़ा और धो डाला तथा कम्बल के नीचे कुछ लगा दिया। उसकी हिदायत के मुताबिक़ रोगी के कमरे में कुछ लाया और वहां से कुछ हटाया गया। वह सामने से आते हुए महानुभावों की कुछ परवाह न करते हुए कई बार अपने कमरे में गयी, वहां से चादरें, तकिये के गिलाफ़, तौलिये और कुरते, आदि लाई।

सामान्य हॉल में इंजीनियरों को भोजन करानेवाला नौकर कीटी के बुलाने पर कई बार झल्लायी हुई सी सूरत बनाये हुए आया और उसके आदेशों को पूरा करने से इन्कार नहीं कर सका, क्योंकि वह ऐसे स्नेहपूर्ण अनुरोध से ऐसा करती थी कि उन्हें टालना मुश्किल था।

लेविन इन सब बातों का अनुमोदन नहीं करता था, उसे यह विश्वास नहीं था कि इससे रोगी को कुछ लाभ हो सकता है। सबसे ज़्यादा उसे इस बात का डर था कि रोगी न झल्ला उठे। किन्तु यद्यपि ऐसा लगता था कि रोगी इन सब चीज़ों के प्रति उदासीन है, फिर भी खीझता नहीं, केवल लज्जित होता है, कुल मिलाकर, कीटी जो कुछ कर रही थी, उसमें दिलचस्पी लेता है। डाक्टर के यहां से लौटने पर, जहां कीटी ने उसे भेजा था, लेविन ने उसी वक़्त दरवाज़ा खोला, जब कीटी के आदेशानुसार रोगी की क़मीज़ बदली जा रही थी। बड़ी-बड़ी और उभरी हुई स्कंधास्थियों, सूखी पसलियों और रीढ़ की हड्डी वाली सफ़ेद पीठ का पंजर नग्न था और मारीया निकोलायेव्ना तथा नौकर रोगी की लम्बी और लटकती-सी बांह को आस्तीन में नहीं डाल पा रहे थे। कीटी ने लेविन के भीतर आ जाने पर जल्दी से दरवाज़ा बन्द कर दिया और उस तरफ़ नहीं देख रही थी। किन्तु रोगी कराह उठा और वह फुर्ती से उसकी तरफ़ बढ़ गयी।

"जल्दी करो," कीटी ने कहा।

"यहां नहीं आइये," रोगी झल्लाकर कह उठा। "मैं ख़ुद..."

"क्या कहा आपने?" मारीया निकोलायेव्ना ने पूछा।

किन्तु कीटी ने रोगी की बात सुन ली थी और वह समझ गयी थी कि उसे उसके सामने नग्न दिखते हुए शर्म आ रही है और बुरा लग रहा है।

"मैं नहीं देख रही हूं, नहीं देख रही हूं!" कीटी ने बांह को आस्तीन में डालते हुए कहा। "मारीया निकोलायेव्ना, आप उस तरफ़ से जाकर ठीक कर दीजिये," उसने इतना और जोड़ दिया।

"कृपया ज़रा जाकर मेरे छोटे थैले में से शीशी ले आओ," उसने पति को सम्बोधित किया, "बग़ल वाली छोटी-सी जेब में है। कृपया ले आओ और इसी बीच यहां पूरी तरह सब कुछ ठीक-ठाक कर दिया जायेगा।"

लेविन जब शीशी लेकर लौटा, तो उसने देखा कि रोगी को लिटा दिया गया है और उसके इर्द-गिर्द सब कुछ पूरी तरह से बदल चुका है। गन्दी हवा की जगह अब इत्र के साथ मिले सिरके की सुगन्ध फैली हुई थी, जिसे कीटी होंठों को आगे की ओर फैलाकर तथा लाल-लाल

गालों को फुलाकर नली से सभी ओर छिड़क रही थी। धूल-मिट्टी कहीं दिखाई नहीं दे रही थी और पलंग के नीचे चटाई बिछी हुई थी। मेज़ पर ढंग से शीशियां तथा सुराही, ज़रूरत के कपड़े और कीटी का कशीदाकारी का काम रखा हुआ था। रोगी के पलंग की बग़ल वाली मेज़ पर पेय, मोमबत्ती और दवाइयों की पुड़ियां रखी थीं। ख़ुद रोगी, जिसके हाथ-मुंह धुले और बाल संवरे हुए थे, धुली चादरों पर लेटा था और उसका सिर ऊंचे तकियों पर टिका था। वह सफ़ेद क़मीज़ पहने था, जिसका सफ़ेद कालर अस्वाभाविक रूप से पतली गर्दन के निकट दिख रहा था और वह आशा के नये भाव मे टकटकी बांधकर कीटी की तरफ़ देख रहा था।

लेविन जिस डाक्टर को क्लब में से ढूंढ़कर लाया था, वही नहीं था, जो अब निकोलाई का इलाज कर रहा था और जिससे वह असन्तुष्ट था। नये डाक्टर ने स्टेथास्कोप लगाकर रोगी के फेफड़े जांचे, सिर हिलाया, दवाई का नुसख़ा लिखा और ख़ास विस्तार से पहले यह बताया कि दवाई कैसे पी जाये और फिर यह कि क्या खाया-पिया जाये। उसने सलाह दी कि अंडा कच्चा या ज़रा उबला हुआ खाया जाये और विशेष ताप वाले कच्चे, ताज़ा दूध में खनिज-जल मिलाकर पिया जाये। डाक्टर के जाने के बाद रोगी ने भाई से कुछ कहा, मगर लेविन को केवल यही अन्तिम शब्द "तुम्हारी कात्या" सुनाई दिये, पर उस दृष्टि से, जिससे उसने कीटी की तरफ़ देखा, लेविन समझ गया कि वह उसकी प्रशंसा कर रहा है। उसने कात्या को, जैसे वह कीटी को बुलाता था, अपने पास बुलाया।

"मेरी तबीयत अभी काफ़ी अच्छी हो गयी है," उसने कहा। "आपके साथ होने पर तो मैं कभी का स्वस्थ हो गया होता। कितना अच्छा लग रहा है!" उसने कीटी का हाथ अपने हाथ में लेकर उसे होंठों तक बढ़ाया, किन्तु मानो डरते हुए कि उसे अच्छा नहीं लगेगा, अपना विचार बदल लिया, हाथ छोड़ा और उसे केवल सहला ही दिया। कीटी ने उसके हाथ को अपने दोनों हाथों में लेकर उसे स्नेह से दबाया।

"अब मुझे बायीं करवट लिटा दो और तुम लोग सोने जाओ," निकोलाई ने कहा।

कीटी के सिवा और कोई उसकी बात नहीं समझ पाया। वह इसलिये समझ गयी कि लगातार इस बात की चिन्ता करती थी कि उसे किस चीज़ की ज़रूरत हो सकती है।

"दूसरी ओर करवट दिला दो," उसने पति से कहा, "वे सदा उस करवट सोते हैं। तुम ही ऐसा कर दो, वेटर को बुलाना अच्छा नहीं होगा। मैं नहीं कर सकती। आप नहीं कर सकतीं?" उसने मारीया निकोलायेव्ना से पूछा।

"मुझे डर लगता है," मारीया निकोलायेव्ना ने कहा।

लेविन के लिये इस भयानक शरीर को बांहों में भरना, कम्बल के नीचे उन जगहों को हाथ लगाना, जिनके बारे में वह जानना नहीं चाहता था, चाहे कितना ही भयानक क्यों न था, फिर भी पत्नी का अनुरोध मानते हुए वह अपने चेहरे पर संकल्प का भाव लाया, जिससे उसकी पत्नी परिचित थी, और भाई के कम्बल के नीचे हाथ घुसेड़ दिये। किन्तु अपनी ताक़त के बावजूद वह भाई के सूखे हुए अंगों के असाधारण बोझ से चकित रह गया। अपनी गर्दन के गिर्द भाई की बड़ी, दुबली बांह का स्पर्श अनुभव करते हुए लेविन जब तक करवट बदलवाता रहा, कीटी ने इसी बीच आहट किये बिना जल्दी से तकिये को ठीक करके दूसरी ओर रख दिया और रोगी का सिर तथा उसके विरले बाल, जो फिर से कनपटियों पर चिपक गये थे, ठीक कर दिये।

रोगी छोटे भाई का हाथ अपने हाथ में थामे रहा। लेविन ने अनुभव किया कि वह उसके हाथ के साथ कुछ करना चाहता है और उसे किसी तरफ़ खींच रहा है। लेविन ने धड़कते दिल से हाथ को ढीला छोड़ दिया। हां, रोगी ने उसके हाथ को अपने मुंह तक ले जाकर चूम लिया। लेविन सिसकियों के कारण सिहरा और कुछ भी कहने में असमर्थ कमरे से बाहर चला गया।

(१९)

"बुद्धिमानों से रहस्य छिपाया और बच्चों तथा बेसमझों को बताया," – इस शाम को अपनी पत्नी से बातचीत करते हुए लेविन उसके बारे में ऐसा ही सोच रहा था।

इंजील की इस पंक्ति के बारे में लेविन इसलिये नहीं सोच रहा था कि वह अपने को बुद्धिमान मानता था। वह अपने को बुद्धिमान नहीं मानता था, किन्तु इस बात से भी अनजान नहीं था कि वह अपनी पत्नी और अगाफ़्या मिख़ाइलोव्ना से ज़्यादा समझदार है और यह भी जानता था कि वह जब मौत के बारे में सोचता है, तो अपनी पूरी बौद्धिक शक्ति से ऐसा करता है। वह यह भी जानता था कि अनेक बड़े बुद्धिमान पुरुष, मौत के बारे में जिनके विचार उसने पढ़े थे, इस बारे में सोचते थे और वे उसका सौवां भाग भी नहीं जानते थे, जो इस सम्बन्ध में उसकी बीवी और अगाफ़्या मिख़ाइलोव्ना जानती थीं। ये दो नारियां, अगाफ़्या मिख़ाइलोव्ना और कात्या, जैसे कीटी को उसका भाई निकोलाई बुलाता था और जैसे अब लेविन को भी इसी तरह उसे पुकारना अधिक अच्छा लगता था, इस मामले में बिल्कुल समान थीं। दोनों ही निस्सन्देह यह जानती थीं कि ज़िन्दगी क्या है और मौत क्या है तथा यद्यपि उन प्रश्नों को किसी तरह भी समझ न पातीं और उनके उत्तर न दे सकतीं, जो लेविन के सामने आते थे, तथापि उन दोनों को इस घटना के महत्त्व के बारे में कुछ भी सन्देह नहीं था और दुनिया के करोड़ों अन्य लोगों की तरह उन दोनों का इस बारे में समान दृष्टिकोण था। वे दोनों निश्चित रूप से यह जानती थीं कि मौत क्या चीज़ है, इसका प्रमाण यह था कि किसी भी तरह की दुविधा के बिना उन्हें यह मालूम था कि मौत के निकट पहुंचे हुए व्यक्ति के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिये और वे उससे डरती नहीं थीं। लेविन और ऐसे ही अन्य लोग भी, यद्यपि वे मौत के बारे में बहुत कुछ कह सकते थे, स्पष्टतः उसके बारे में नहीं जानते थे, क्योंकि मौत से डरते थे और निश्चय ही उन्हें यह नहीं मालूम था कि जब लोग मरते हैं, तो उन्हें क्या करना चाहिये। अपने भाई निकोलाई के साथ अगर लेविन अकेला होता, तो वह अत्यधिक भयग्रस्त होकर उसकी ओर देखता तथा इससे भी ज़्यादा डर के साथ उसकी मौत का इन्तज़ार करता और इसके अलावा कुछ भी न कर पाता।

इतना ही नहीं, वह यह भी नहीं जानता था कि क्या कहे, कैसे और किधर देखे, कैसे चले-फिरे। इधर-उधर की बातें करना उसे ठेस लगानेवाली बात और अनुचित प्रतीत होता था, मौत या किसी दुखद

बात की चर्चा करना भी ठीक नहीं था। चुप रहना भी बुरा था। "उसकी ओर देखूं तो वह सोच सकता है कि मैं उसको बहुत ग़ौर से ताक रहा हूं, उससे डरता हूं, न देखूं – तो वह यह सोचेगा कि मैं किसी दूसरी चीज़ के बारे में सोच रहा हूं। पंजों के बल चलूं तो उसे अच्छा नहीं लगेगा, पूरे ज़ोर से चलूं तो यह अटपटा होगा।" कीटी स्पष्टतः ऐसी बातों के बारे में नहीं सोचती थी और उसे अपने बारे में सोचने का समय ही नहीं था। वह निकोलाई के बारे में सोचती थी, क्योंकि कुछ जानती थी और सब कुछ ठीक हो रहा था। वह अपने बारे में बताती थी, अपनी शादी की चर्चा करती थी, मुस्कराती थी, उसपर तरस खाती और उसे सहलाती थी तथा लोगों के स्वस्थ हो जाने की घटनाओं का उल्लेख करती थी और सब कुछ ढंग से होता जा रहा था। तो ऐसा मानना चाहिये कि वह जानती थी। कीटी और अगाफ़्या मिख़ाइलोव्ना की गतिविधि नैसर्गिक प्रेरणा, ऐन्द्रिक या युक्तिहीन व्यवहार का परिणाम नहीं थी, इसका प्रमाण यह था कि शारीरिक देखभाल और रोगी की पीड़ा को कम करने के अलावा वे दोनों मरते हुए व्यक्ति के लिये शारीरिक टहल-सेवा से कुछ अधिक महत्वपूर्ण और कुछ ऐसी चीज़ की मांग करती थीं, जिसका शारीरिक स्थितियों से कोई सम्बन्ध नहीं था। अगाफ़्या मिख़ाइलोव्ना ने मरनेवाले बूढ़े के बारे में कहा था: "भला हो भगवान का, उसका धार्मिक अनुष्ठान और पवित्र विलेपन संस्कार भी हुआ। ईश्वर हर किसी को ऐसी मौत दें।" कात्या ने भी ठीक इसी तरह कपड़ों, शय्या-व्रण और पेय, आदि की चिन्ता करने के अलावा पहले ही दिन रोगी को धार्मिक अनुष्ठान और पवित्र विलेपन संस्कार के लिये राज़ी कर लिया।

रात बिताने के लिये रोगी के कमरे से अपने दो कमरों में लौटने पर लेविन सिर झुकाये बैठा था और नहीं जानता था कि क्या करे। भोजन और सोने की तैयारी करने तथा यह सोचने की बात तो दूर कि आगे उन्हें क्या करना है, वह तो पत्नी से बात भी नहीं कर पा रहा था – उसे शर्म आ रही थी। इसके विपरीत, कीटी सामान्य दिनों की तुलना में अधिक क्रियाशील थी। वह सामान्य की तुलना में अधिक सजीव भी थी। उसने भोजन लाने का आदेश दिया, ख़ुद ही सामान को ठीक-ठाक किया, बिस्तर लगाने में हाथ बंटाया और उनपर कीटाणु-

नाशक पाउडर छिड़कना भी नहीं भूली। उसमें ऐसा उत्साह और जल्दी से समझ-बूझकर काम करने की वह क्षमता आ गयी थी, जो मर्दों में लड़ाई, संघर्ष के पहले, जीवन के ख़तरनाक और निर्णायक क्षणों, ऐसे क्षणों में आती है, जब मर्द अपना जौहर दिखाता है और यह कि इन क्षणों के पहले की उसकी सारी ज़िन्दगी व्यर्थ ही नहीं, बल्कि इन क्षणों की तैयारी में ही बीती थी।

कीटी का हर काम फुर्ती से हो रहा था और अभी बारह भी नहीं बजे थे कि सारा सामान बहुत अच्छे और ऐसे विशेष ढंग से व्यवस्थित कर दिया गया था कि कमरा घर जैसा, घर के कमरों जैसा दिखने लगा था। बिस्तर लग गये थे, ब्रुश, कंघे और दर्पण सजा दिये गये थे और मेज़-नेप्किन बिछा दिये गये थे।

लेविन को ऐसा प्रतीत होता था कि अब खाना-पीना, सोना और बात तक करना अक्षम्य था। वह ऐसे महसूस करता था कि उसकी हर गतिविधि अशिष्टता की द्योतक थी। इसके उलट, कीटी ब्रुशों को ढंग से रख रही थी, मगर यह सब कुछ ऐसे करती थी कि कोई भी चीज़ दिल को ठेस लगानेवाली न हो।

फिर भी वे कुछ खा-पी नहीं सके, देर तक सो नहीं पाये और सोने के लिये देर तक बिस्तर पर भी नहीं जा सके।

"मुझे इस बात की बड़ी ख़ुशी है कि निकोलाई को कल पवित्र विलेपन संस्कार के लिये राज़ी करने में सफल हो गयी," ब्लाउज़ पहने, तह हो जानेवाले दर्पण के सामने बैठी और बढ़िया कंघे से अपने मुलायम और सुगन्धित बाल संवारती हुई कीटी ने कहा। "मैंने संस्कार सम्पन्न होते कभी नहीं देखा, मगर जानती हूं, अम्मां ने मुझे बताया था कि इसमें रोगी के स्वास्थ्य के लिये प्रार्थना होती है।"

"क्या तुम सचमुच ऐसा समझती हो कि वह स्वस्थ हो सकता है?" लेविन ने कीटी के कंघा आगे ले जाने पर उसके गोल सिर के पिछले भाग की लगातार लुप्त हो जानेवाली संकरी-सी मांग को देखते हुए कहा।

"मैंने डाक्टर से पूछा था – उसने कहा कि निकोलाई तीन दिन से अधिक जीवित नहीं रह सकता। मगर क्या डाक्टर यह सब जान सकते हैं? कुछ भी हो, मैं बहुत ख़ुश हूं कि मैंने निकोलाई को राज़ी कर लिया," बालों के पीछे से पति को कनखियों से देखते हुए उसने

कहा। "कुछ भी हो सकता है," उसने उस विशेष, कुछ चालाकी भरे भाव से कहा, जो हमेशा उसके चेहरे पर धर्म की बात करते समय होता था।

सगाई के बाद धर्म के बारे में उनके बीच हुई बातचीत के पश्चात इन दोनों में से किसी ने कभी इसकी चर्चा नहीं चलाई थी, किन्तु वह गिरजाघर जाने और प्रार्थना करने की रस्मों को इसी शान्त चेतना से करती रही कि ऐसा करना ही चाहिये। लेविन के प्रतिकूल विश्वास दिलाने पर भी कीटी को इस बात का पूरा यक़ीन था कि वह उसके जैसा और उससे भी बेहतर ईसाई है तथा इस मामले में वह जो कुछ कहता है, वह सब उसकी पुरुष-सुलभ वैसी ही हास्यास्पद सनक है, जैसी वह उसकी कशीदाकारी के बारे में यह कहकर व्यक्त करता है कि भले लोग सूराख़ों पर पैवन्द लगाते हैं और वह जान-बूझकर सूराख़ बनाती रहती है, आदि।

"हां, यह औरत मारीया निकोलायेव्ना, यह सब कुछ व्यवस्थित नहीं कर सकती थी," लेविन ने कहा। "और... मुझे यह मानना होगा, मैं बहुत ख़ुश हूं कि तुम मेरे साथ आ गयीं। तुम ऐसी पवित्रता का रूप हो कि..." उसने कीटी का हाथ अपने हाथ में लिया, मगर उसे चूमा नहीं (मृत्यु की निकटता के समय हाथ चूमना उसे उचित नहीं लगा) और कीटी की चमकती हुई आंखों में अपराधी की तरह देखा।

"तुम्हें अकेले को बहुत मुश्किल का सामना करना पड़ता," उसने कहा और हाथ ऊपर उठाकर, जिनसे ख़ुशी के मारे लाल हुए उसके गाल छिप गये, गुद्दी पर चोटियों का जूड़ा बनाकर उनमें पिन खोंस लिये। "नहीं," वह कहती गयी, "उसे यह सब मालूम नहीं है... सौभाग्य से मैंने सोडेन में बहुत कुछ सीख लिया था।"

"क्या वहां ऐसे रोगी थे?"

"इससे भी बुरी हालत में।"

"मेरे लिये सबसे भयानक बात यह है कि मैं उसे उस रूप में देखे बिना नहीं रह सकता, जैसा वह जवानी के दिनों में था... तुम तो यह विश्वास नहीं कर सकोगी कि वह कैसा सुन्दर नौजवान था, मगर तब मैं उसे नहीं समझता था।"

"बहुत, बहुत विश्वास करती हूं। मुझे अनुभव होता है कि मैं और निकोलाई बहुत ही अच्छे मित्र हो सकते थे," कीटी ने कहा, अपने शब्दों से भयभीत होकर पति की ओर देखा तथा उसकी आंखों में आंसू आ गये।

"हां, हो सकते थे," उसने उदासी से कहा। "वह वास्तव में ही ऐसे लोगों में से है, जिनके बारे में यह कहा जाता है कि वे इस दुनिया के लिये नहीं बने हैं।"

"ख़ैर, हमारे सामने अभी बहुत-से कठिन दिन हैं, हमें सोना चाहिये," कीटी ने अपनी छोटी-सी घड़ी पर नज़र डालते हुए कहा।

(२०)

मृत्यु

अगले दिन रोगी के लिये धार्मिक अनुष्ठान और पवित्र विलेपन संस्कार हुआ। इस समय निकोलाई लेविन ने बड़े जोश से प्रार्थना की। रंगीन मेज़पोश से ढकी मेज़ पर रखी देंव-प्रतिमा पर टिकी हुई उसकी बड़ी-बड़ी आंखों में ऐसा उत्साह और आशा की ऐसी झलक थी कि लेविन को इसे देखते हुए भय की अनुभूति हो रही थी। लेविन जानता था कि ऐसी उत्साहपूर्ण प्रार्थना और यह आशा उसके लिये जीवन से विदा लेना, जिसे वह इतना अधिक प्यार करता था, और भी अधिक कठिन बना देंगी। लेविन अपने भाई और उसकी चिन्तन-धारा से परिचित था। उसे मालूम था कि ईश्वर के प्रति उसकी अनास्था का यह कारण नहीं था कि उसके लिये आस्थाहीन होकर जीना आसान था, बल्कि इसलिये कि विश्व-रचना के आधुनिक-वैज्ञानिक स्पष्टीकरण ने धीरे-धीरे भगवान में उसकी आस्था को समाप्त कर दिया था। इसलिये वह जानता था कि इस समय की उसकी आस्था सच्ची और चिन्तन का परिणाम नहीं थी, बल्कि वक़्ती, स्वार्थपूर्ण और स्वस्थ हो पाने की विवेकहीन आशा का परिणाम थी। लेविन को यह भी मालूम था कि कीटी ने चमत्कार की तरह लोगों के स्वस्थ हो जाने के बारे में सुनी कहानियों से इस आशा को और भी तीव्र कर दिया था। लेविन यह सब जानता था और उसे प्रार्थना करते तथा आशापूर्ण दृष्टि,

हड्डी जैसे पतले और सलीब बनाने के लिये तने हुए माथे तक मुश्किल से उठते हाथ, कंधों की उभरी हड्डियों, जीवन को, जिसके लिये रोगी प्रार्थना कर रहा था, समाये रखने में असमर्थ, खोखली छाती वाले व्यक्ति को देखकर बड़ी पीड़ायुक्त यातना हो रही थी। धार्मिक अनुष्ठान के समय लेविन भी प्रार्थना कर रहा था और उसने वह सब कुछ किया, जो यह नास्तिक व्यक्ति हज़ारों बार कर चुका था। भगवान को सम्बोधित करते हुए वह कह रहा था – "यदि आपका अस्तित्व है, तो ऐसा करें कि यह व्यक्ति स्वस्थ हो जाये (आख़िर तो अनेक बार ऐसा हो चुका है) और ऐसा करके आप उसे तथा मुझे बचा लेंगे।"

पवित्र विलेपन के बाद रोगी की तबीयत अचानक बेहतर हो गयी। घण्टे भर तक उसे एक बार भी खांसी नहीं आई, वह मुस्कराता, कीटी का हाथ चूमता और आंखों में आंसू भर भरकर उसे धन्यवाद देता तथा यह कहता रहा कि उसकी तबीयत अच्छी है, कहीं दर्द नहीं हो रहा, कि उसे भूख और अपने अन्दर ताक़त महसूस हो रही है। जब उसके लिये शोरबा लाया गया, तो वह ख़ुद उठकर बैठ गया और उसने एक कटलेट भी देने को कहा। निकोलाई की स्थिति बेशक कितनी ही निराशाजनक क्यों न थी, चाहे यह कितना ही स्पष्ट क्यों न था कि वह बच नहीं पायेगा, इस वक़्त लेविन और कीटी दोनों ही ख़ुशी तथा उत्तेजना की स्थिति में और साथ ही भयभीत भी थे कि कहीं उनसे भूल न हो जाये।

"बेहतर है?" – "हां, कहीं बेहतर है।" – "हैरानी की बात है।" – "इसमें हैरानी की कोई बात नहीं।" – "फिर भी बेहतर तो है," वे फुसफुसाते तथा मुस्कराते हुए एक दूसरे से कह रहे थे।

यह भ्रांति बहुत देर तक नहीं बनी रह सकी। रोगी चैन से सो गया, मगर आध घण्टे बाद खांसी ने उसे जगा दिया। अचानक ख़ुद रोगी और उसके इर्द-गिर्द के लोगों की सभी आशाओं पर पानी फिर गया। उसकी पीड़ा की यथार्थता ने किसी सन्देह के बिना, पहले की आशाओं की स्मृति के बिना लेविन और कीटी तथा स्वयं रोगी के मन में भी उनका अन्त कर दिया।

आध घण्टा पहले उसने जिस बात पर विश्वास किया था, उसका उल्लेख किये बिना ही, मानो उसको याद करना भी लज्जाजनक हो,

उसने छिद्रयुक्त काग़ज़ से ढकी आयोडीन वाली शीशी देने को कहा। लेविन ने उसे शीशी दे दी, और धार्मिक अनुष्ठान के समय की भांति तीव्र आशा से परिपूर्ण उसकी दृष्टि यह मांग करती हुई फिर से भाई पर केन्द्रित हो गयी कि वह डाक्टर के इन शब्दों की पुष्टि कर दे कि आयोडीन को सूंघने से चमत्कार हो जाते हैं।

"क्या कात्या यहां नहीं है?" लेविन द्वारा डाक्टर के शब्दों की अनिच्छापूर्वक पुष्टि के बाद निकोलाई ने इधर-उधर नज़र दौड़ाकर खरखरी-सी आवाज़ में पूछा। "अब मैं तुमसे कह सकता हूं... उसकी ख़ातिर मैंने यह तमाशा किया था। वह इतनी प्यारी है, लेकिन हम-तुम तो अपने को धोखा नहीं दे सकते। हां, इसपर मैं विश्वास करता हूं," उसने कहा और शीशी को अपने हड़ीले हाथ में लेकर सूंघने लगा।

रात के आठ बजे लेविन और कीटी अपने कमरे में चाय पी रहे थे कि मारीया निकोलायेव्ना हांफती हुई उनके पास भागी आई। उसके चेहरे का रंग उड़ा हुआ था और होंठ कांप रहे थे।

"मर रहे हैं," वह फुसफुसाई, "मुझे डर है कि वे अभी मर जायेंगे।"

लेविन और कीटी उसके पास भागे गये। निकोलाई एक कोहनी टेके हुए पलंग पर उठकर बैठा था, उसकी लम्बी पीठ झुकी थी और सिर लटका हुआ-सा था।

"तुम क्या महसूस कर रहे हो?" लेविन ने थोड़ी ख़ामोशी के बाद फुसफुसाकर पूछा।

"महसूस कर रहा हूं कि जा रहा हूं," निकोलाई ने कठिनाई मे, किन्तु धीरे-धीरे शब्द निकालते हुए बहुत स्पष्टता से कहा। उसने सिर ऊपर नहीं उठाया, बल्कि सिर्फ़ आंखों को ऊपर उठाया, जो भाई के चेहरे तक नहीं पहुंच सकीं। "कात्या, तुम जाओ!" उसने इतना और कह दिया।

लेविन झटपट उठा और आग्रहपूर्ण फुसफुसाहट के साथ उसने कीटी को बाहर जाने के लिये विवश कर दिया।

"जा रहा हूं," निकोलाई ने दोहराया।

"तुम ऐसा क्यों सोचते हो?" लेविन ने कुछ कहने के लिये ही यह कहा।

"इसलिये कि जा रहा हूं," उसने इस वाक्य को फिर से ऐसे दोहराया मानो उसे उससे प्यार हो गया हो। "आख़िरी वक़्त आ गया।"

मारीया निकोलायेव्ना रोगी के क़रीब आई।

"आप लेट जायें, आपको राहत मिलेगी," उसने कहा।

"जल्द ही चुपचाप लेट जाऊंगा," निकोलाई ने जवाब दिया, "मुर्दा होकर," उसने उपहासजनक ढंग से झल्लाकर कहा। "अगर चाहते हो, तो लिटा दो।"

लेविन ने भाई को चित लिटा दिया, उसके निकट बैठ गया और लगभग सांस न लेते हुए उसके चेहरे को एकटक ताकने लगा। मौत के कगार पर पहुंचा हुआ निकोलाई आंखें मूंदे लेटा था, किन्तु उसके माथे की पेशियां कभी-कभी गहन और तनावपूर्ण चिन्तन करनेवाले व्यक्ति की भांति हिलती-डुलती थीं। लेविन अनचाहे ही उसके साथ-साथ यह सोच रहा था कि अब उसके भीतर क्या हो रहा है, किन्तु उसके विचारों का साथ देने की सभी कोशिशों के बावजूद उस शान्त, गम्भीर चेहरे के भाव तथा भौंह के ऊपर मांस-पेशी के हिलने-डुलने से उसने यह अनुभव किया कि मरनेवाले के लिये वह स्पष्ट होता जा रहा है, जो उसके लिये अस्पष्ट है।

"हां, हां, ऐसे," मरनेवाले ने हर शब्द के बीच रुक-रुककर धीरे-धीरे कहा। "ज़रा रुको," वह फिर से ख़ामोश हो गया। "ऐसे!" उसने अचानक ऐसे राहत से कहा, मानो उसके लिये हर चीज़ साफ़ हो गयी हो। "हे भगवान!" वह कह उठा और उसने गहरी सांस ली।

मारीया निकोलायेव्ना ने उसके पांव छूकर देखे।

"ठण्डे हो रहे हैं," वह फुसफुसायी।

देर तक, बहुत देर तक, जैसा कि लेविन को प्रतीत हुआ, रोगी निश्चल लेटा रहा। लेकिन वह अभी भी ज़िन्दा था और कभी-कभी गहरी सांस लेता था। लेविन चिन्तन के तनाव से थक चुका था। वह महसूस कर रहा था कि दिमाग़ पर बहुत ज़ोर डालने के बावजूद वह नहीं समझ पाया था कि "ऐसे" क्या था। वह अनुभव कर रहा था कि कभी का मरनेवाले को भूल चुका है। मौत के सवाल के बारे में अब वह सोच नहीं सकता था, किन्तु अनचाहे ही उसके मन में

यह विचार ज़रूर आ रहा था कि कुछ ही देर बाद उसे क्या क्या करना होगा – मृत की आंखें बन्द करनी होंगी, उसे कपड़े पहनाने होंगे, ताबूत का आर्डर देना होगा। अजीब बात थी कि वह अपने को पूरी तरह उदासीन अनुभव कर रहा था तथा न तो किसी तरह का अफ़सोस, न भाई को खोने का दुख महसूस कर रहा था और उसके प्रति उसे दया तो और भी कम अनुभव हो रही थी। भाई के प्रति अब अगर वह कुछ अनुभव कर रहा था, तो उस ज्ञान के लिये ईर्ष्या ही, जो अब मरते हुए को प्राप्त था और जो उसे उपलब्ध नहीं हो सकता था।

वह भाई के अन्त की प्रतीक्षा करता हुआ देर तक उसके पास बैठा रहा। मगर अन्त नहीं आया। दरवाज़ा खुला और कीटी दिखाई दी। लेविन उसे भीतर आने से रोकने के लिये उठा। किन्तु जब वह उठा, तो उसे मरणासन्न भाई के हिलने-डुलने की आहट मिली।

"नहीं जाओ," निकोलाई ने कहा और उसकी तरफ़ अपना हाथ बढ़ा दिया। लेविन ने अपना हाथ उसके हाथ में दे दिया और झल्लाहट से पत्नी को जाने का इशारा किया।

मरते हुए भाई का हाथ थामे-थामे वह आध घण्टा, एक घण्टा, फिर एक घण्टा और बैठा रहा। अब वह मौत के बारे में बिल्कुल नहीं सोच रहा था। वह यह सोच रहा था कि कीटी क्या कर रही है, बग़ल के कमरे में कौन रहता है, डाक्टर का अपना घर है या नहीं। उसका कुछ खाने और सोने को मन हुआ। उसने बड़ी सावधानी से हाथ छुड़ाया और भाई की टांगों को छूकर देखा। टांगें ठण्डी थीं, मगर रोगी की सांस अभी चल रही थी। लेविन ने फिर से पंजों के बल चलते हुए बाहर निकल जाना चाहा, किन्तु रोगी फिर से हिला-डुला और उसने कहा –

"नहीं जाओ।"

. . . .

सुबह होने लगी थी। रोगी की स्थिति वैसी ही थी। लेविन ने धीरे से अपना हाथ छुड़ाया और मरते हुए व्यक्ति की ओर देखे बिना अपने कमरे में जाकर सो गया। जब वह जागा, तो भाई की मौत

की ख़बर की जगह, जिसकी वह आशा कर रहा था, उसे पता चला कि रोगी पहले जैसी स्थिति में आ गया है। वह फिर से बैठने, खांसने, खाने- और बोलने लगा था, फिर से उसने मौत की चर्चा बन्द कर दी थी, फिर से स्वस्थ हो जाने की आशा प्रकट करने लगा था तथा पहले से ज़्यादा चिड़चिड़ा और खिन्नचित्त हो गया था। न तो भाई, न कीटी, कोई भी तो उसे शान्त नहीं कर पा रहा था। वह सभी पर बिगड़ रहा था, सभी से कटु बातें कह रहा था, सभी को अपनी यातनाओं के लिये भला-बुरा कह रहा था तथा यह मांग कर रहा था कि उसके लिये मास्को से प्रसिद्ध डाक्टर को बुलवाया जाये। उसकी तबीयत कैसी है, इस सम्बन्ध में पूछे जानेवाले सभी प्रश्नों का वह गुस्से और भर्त्सना के लहजे में एक जैसा ही जवाब देता –

"बेहद यातना सह रहा हूं, असह्य यातना!"

रोगी को अधिकाधिक पीड़ा सहनी पड़ रही थी, विशेषकर लेटे रहने के कारण पड़े व्रणों से, जिनका अब किसी तरह इलाज सम्भव नहीं था, हर चीज़ और ख़ास तौर पर इस बात के लिये सभी की भर्त्सना करता था कि मास्को से डाक्टर को नहीं बुलवाया गया। कीटी ने हर तरह से उसकी मदद और उसे शान्त करना चाहा, मगर सब बेसूद रहा। लेविन को साफ़ नज़र आ रहा था कि कीटी यद्यपि इसको स्वीकार नहीं करती थी, तथापि वह ख़ुद शारीरिक और मानसिक रूप से बुरी तरह थक चुकी थी। उस रात को, जब उसने भाई को बुलवाया था, जीवन से विदा लेने की बात के कारण मौत की जो भावना सब के दिल में पैदा हुई थी, वह अब खण्डित हो गयी थी। सब जानते थे कि वह अवश्य और जल्द ही मर जायेगा, कि वह आधा मर भी चुका है। सब केवल एक ही बात चाहते थे – वह जल्दी से जल्दी मर जाये और सभी इस बात को छिपाते हुए उसे शीशियों से दवाई पिलाते थे, दवाइयां और डाक्टर ढूंढ़ते थे, उसे तथा ख़ुद को और एक-दूसरे को धोखा देते थे। यह सब झूठ था, बहुत ही कटु, घृणित और निन्दापूर्ण झूठ था। अपने स्वभाव और इस कारण कि मरणासन्न भाई को वह सबसे अधिक प्यार करता था, लेविन को यह झूठ ख़ास तौर पर बहुत कसक रहा था।

बहुत समय से यह विचार लेविन के मस्तिष्क में घर किये हुए था

कि निकोलाई के मरने के पहले दोनों बड़े भाइयों के बीच सुलह करवा दे। चुनांचे उसने कोज़्निशेव को ख़त लिखा और उत्तर आने पर उसे रोगी को पढ़कर सुनाया। कोज़्निशेव ने लिखा था कि ख़ुद आने में असमर्थ है, किन्तु मर्मस्पर्शी शब्दों में उसने भाई से क्षमा मांगी थी।

रोगी ने कुछ नहीं कहा।

"तो मैं उसे क्या लिखूं?" लेविन ने पूछा। "आशा करता हूं कि तुम उससे नाराज़ नहीं हो?"

"नहीं, ज़रा भी नहीं!" निकोलाई ने दुखी मन से इस प्रश्न का उत्तर दिया। "उसे लिख दो कि वह मेरे लिये मास्को से डाक्टर भेज दे।"

यातनापूर्ण तीन दिन और बीत गये। रोगी की स्थिति वैसी ही रही। जो कोई भी उसे देखता था, अब सभी, होटल के नौकर-चाकर, मालिक, डाक्टर, मारीया निकोलायेव्ना, लेविन और कीटी उसकी मृत्यु चाह रहे थे। केवल रोगी ही इस भावना को व्यक्त नहीं करता था। इसके विपरीत, वह इस बात के लिये बिगड़ता था कि मास्को के नामी डाक्टर को नहीं बुलाया गया, दवाई पीता जाता था तथा जीवन की चर्चा करता था। केवल ऐसे विरले क्षणों में ही, जब अफ़ीम उसे उसकी अनवरत पीड़ा को भूलने के लिये विवश कर देती, वह अर्ध-निद्रा की स्थिति में कभी-कभी उस चीज़ को अभिव्यक्ति देता, जो अन्य सभी की तुलना में कहीं अधिक तीव्रता से अपनी आत्मा में अनुभव करता था – "ओह, यह सब ख़त्म हो जाये!" या "कब समाप्त होगा यह!"

धीरे-धीरे बढ़ती यातनायें अपना प्रभाव दिखाती जा रही थीं और उसे मौत के लिये तैयार कर रही थीं। कोई भी ऐसी स्थिति नहीं थी, जिसमें उसे पीड़ा न अनुभव होती हो, एक भी ऐसा क्षण नहीं होता था, जिसमें वह अपनी यातना को भूल सके, कोई भी जगह, उसके शरीर का कोई भी अंग ऐसा नहीं था, जहां दर्द न होता हो, जो उसे कष्ट न देता हो। अब इस शरीर की स्मृतियां, इससे सम्बन्धित प्रभाव और विचार भी उसमें वैसी ही वितृष्णा पैदा करते थे, जैसे स्वयं शरीर। दूसरे लोगों की उपस्थिति, उनकी बातचीत, अपनी स्मृतियां – उसके लिये यह सब यातनाप्रद था। उसके इर्द-गिर्द उपस्थित रहनेवाले लोग यह अनुभव करते थे और उसके सामने अनजाने ही

न तो आज़ादी से हिलते-डुलते थे, न बातचीत करते थे और न अपनी इच्छाओं को अभिव्यक्ति देते थे। उसका सारा जीवन अब व्यथा की एक भावना और इस व्यथा से मुक्ति पाने की इच्छा में एकीभूत हो गया था।

स्पष्टतः उसमें वह उग्र परिवर्तन हो रहा था, जो उसे मौत को अपनी इच्छाओं की पूर्ति और सुख-सौभाग्य के रूप में मानने को बाध्य करनेवाला था। पहले प्रत्येक इच्छा, जो पीड़ा या अभाव जैसे भूख, थकान और प्यास से पैदा होती थी, शरीर के किसी व्यापार से सन्तुष्ट होने पर आनन्द प्रदान करती थी। किन्तु अब अभाव और पीड़ा की तुष्टि नहीं होती थी और ऐसी तुष्टि के हर प्रयास से नयी पीड़ा उत्पन्न होती थी। इसलिये सारी इच्छायें एक ही इच्छा में एकीभूत हो गयी थीं–सभी यतनाओं और उनके स्रोत यानी शरीर से मुक्ति पा ली जाये। किन्तु मुक्ति की इस इच्छा की अभिव्यक्ति के लिये उसके पास शब्द नहीं थे और इसलिये वह इसकी चर्चा नहीं करता था, बल्कि आदत के मुताबिक़ उन इच्छाओं की पूर्ति की मांग करता था, जिनकी पूर्ति अब सम्भव नहीं थी। "मुझे दूसरी करवट लिटा दो," वह कहता और कुछ ही देर बाद यह मांग करता कि उसे पहले की तरह लिटा दिया जाये। "मेरे लिये शोरबा लाओ। शोरबा वापस ले जाओ, कोई बात सुनाइये न, आप लोग चुप क्यों हैं।" जैसे ही वे कुछ बताना शुरू करते, वह आंखें मूंद लेता और थकान, उदासीनता तथा वितृष्णा प्रकट करता।

इस शहर में आने के दस दिन बाद कीटी बीमार पड़ गयी। उसके सिर में दर्द था, उसे मतली होती थी और वह पूरी सुबह बिस्तर से नहीं उठ पायी।

डाक्टर ने बताया कि थकान और उत्तेजना से उसकी तबीयत बिगड़ गयी है और उसने उसे आराम तथा मानसिक चैन लेने के लिये कहा।

फिर भी दिन के भोजन के बाद कीटी उठी और सदा की भांति अपना कशीदाकारी का काम लेकर रोगी के कमरे की ओर चल दी। जब वह कमरे में दाख़िल हुई, तो रोगी ने उसे कड़ी नज़र से देखा और जब उसने यह कहा कि वह बीमार थी, तो तिरस्कारपूर्वक मुस्क-

गया। इस दिन वह लगातार नाक सिनक रहा था और दर्दनाक ढंग मे कराह रहा था।

"कैसी तबीयत है आपकी?" कीटी ने उससे पूछा।

"अधिक ख़राब," उसने मुश्किल से जवाब दिया। "दर्द हो रहा है!"

"कहां दर्द हो रहा है?"

"सभी जगह।"

"देख लीजियेगा, आज अन्त आ जायेगा," मारीया निकोलायेव्ना ने यद्यपि फुसफुसाकर यह बात कही थी, तथापि चूंकि, जैसा कि लेविन ने इस बात की ओर ध्यान दिया था, रोगी की श्रवण-शक्ति बहुत तीव्र थी, उसे ये शब्द सुनाई दे गये होंगे। लेविन ने हिश की और मुड़कर रोगी की तरफ़ देखा। निकोलाई ने इन शब्दों को सुन लिया था, मगर इनका उसपर कोई असर नहीं हुआ था। उसकी दृष्टि में पहले जैसा वही तिरस्कार और तनाव था।

"आप ऐसा क्यों सोचती हैं?" लेविन ने उससे तब पूछा, जब वह उसके पीछे-पीछे गलियारे में गयी।

"अपने को नोचने लगा है," मारीया निकोलायेव्ना ने जवाब दिया।

"कैसे नोचने लगा है?"

"ऐसे," अपने ऊनी फ़्राक की चुन्नटों को खींचते हुए उसने कहा। वास्तव में ही लेविन ने देखा था कि रोगी उस पूरे दिन अपने को ऐसे दबोचता रहा था मानो कुछ उखाड़ लेना चाहता था।

मारीया निकोलायेव्ना की भविष्यवाणी सही निकली। रात होते-होते रोगी हाथ ऊपर उठाने में असमर्थ हो गया और दृष्टि के संकेन्द्रित भाव को बदले बिना केवल अपने सामने ही देखता रहा। यहां तक कि जब लेविन या कीटी उसके ऊपर ऐसे झुकते कि वह उन्हें देख पाता, रोगी उसी भांति ही देखता रहता। कीटी ने पादरी को बुलवा भेजा ताकि उसके लिये मरने से पहले की प्रार्थना करवा ले।

पादरी जब तक प्रार्थना करता रहा, मरणासन्न रोगी में जीवन के कुछ भी लक्षण दिखाई नहीं दिये। उसकी आंखें मुंदी हुई थीं। लेविन, कीटी और मारीया निकोलायेव्ना उसके पलंग के पास खड़ी थीं। पादरी

ने प्रार्थना ख़त्म भी नहीं की थी कि मरते हुए रोगी ने हाथ-पांव फैलाये, गहरी सांस ली और आंखें खोल लीं। पादरी ने प्रार्थना समाप्त करके ठण्डे माथे पर सलीब रखी, फिर धीरे से उसे अपने चोग़े में लपेट लिया और एक-दो मिनट तक चुप खड़े रहने के बाद उसने ठण्डे पड़ते हुए, रक्तहीन और बड़े-बड़े हाथ को छुआ।

"अन्त हो गया, पादरी ने कहा और वहां से हटना चाहा। किन्तु मृतप्राय व्यक्ति की चिपकी हुई मूंछें सहसा हिलीं और ख़ामोशी में वक्ष की गहराई से साफ़ और तीखे शब्द सुनाई दिये:

"पूरी तरह नहीं... जल्द ही।"

एक मिनट बाद उसका चेहरा चमक उठा, होंठों के नीचे मुस्कान आ गयी और वहां जमा स्त्रियों ने सावधानी से मृत को कपड़े पहनाने शुरू किये।

भाई को ऐसी दशा में देखते और मृत्यु की उपस्थिति को अनुभव करते हुए लेविन की आत्मा में मृत्यु की अनबूझ पहेली और साथ ही उसकी निकटता तथा अनिवार्यता का वह भयावह विचार फिर से उभर आया, जिसने उसे पतझर की उस शाम को दबोच लिया था, जब बीमार भाई उसके पास आया था। अब यह विचार पहले से अधिक प्रबल था, मृत्यु का अर्थ समझने के मामले में उसने अपने को पहले की तुलना में और कम समर्थ अनुभव किया और उसकी अनिवार्यता उसे और भी अधिक भयानक प्रतीत हुई। किन्तु पत्नी की उपस्थिति की बदौलत इस भाव ने उसे हताश नहीं किया और मृत्यु के बावजूद उसने जीने और प्यार करने की आवश्यकता अनुभव की। उसने महसूस किया कि प्यार ने उसे हताशा से बचाया है और हताशा के भय की छाया में यह प्यार और अधिक शक्तिशाली और निर्मल हो गया है।

अनबूझ रहनेवाली मृत्यु की पहेली उसकी आंखों के सामने से अभी हटी ही थी कि एक अन्य ऐसी ही अनबूझ पहेली सम्मुख आ गयी, जो प्यार और जीवन का आह्वान करती थी।

डाक्टर ने कीटी के बारे में अपने अनुमान की पुष्टि कर दी। वह गर्भ रह जाने के कारण ही अस्वस्थ थी।

(२१)

बेत्सी और ओब्लोन्स्की से बातचीत करने के बाद कारेनिन जब यह समझ गया कि उससे केवल यही अपेक्षा की जाती है कि वह अपनी पत्नी को उसके हाल पर छोड़ दे, अपनी उपस्थिति से उसे परेशान न करे और यह कि उसकी बीवी भी यही चाहती है, उस क्षण से वह ऐसा स्तम्भित होकर रह गया कि ख़ुद कोई भी निर्णय नहीं कर सकता था, यह नहीं जानता था कि अब वह क्या चाहता है और अपने को उनके हाथों में सौंपकर, जो अब इतनी ख़ुशी से उसके मामलों को निपटाते थे, हर चीज़ के बारे में सहमति प्रकट कर देता था। केवल तभी, जब आन्ना उसके घर से चली गयी और बेटे की अंग्रेज़ शिक्षिका ने यह पूछने के लिये उसके पास नौकर भेजा कि वह दिन का भोजन उसके साथ करे या अलग से, उसे पहली बार अपनी स्थिति का स्पष्ट आभास हुआ और वह सकते में आकर रह गया।

इस स्थिति में सबसे कठिन चीज़ यह थी कि वह अपने अतीत और वर्तमान के बीच कोई तार नहीं जोड़ सकता था, ताल-मेल नहीं बिठा सकता था। वह अतीत, जब वह पत्नी के साथ सुखी जीवन बिताता था, उसे परेशान नहीं करता था। उस अतीत से पत्नी की बेवफ़ाई की जानकारी तक का संक्रमणकाल वह भयानक व्यथा के रूप में जी चुका था। यह स्थिति बहुत बोझिल थी, मगर समझ में आती थी। यदि पत्नी अपनी बेवफ़ाई की घोषणा करके तभी चली गयी होती, तो उसे बहुत रंज होता, गहरे दुख की अनुभूति होती, किन्तु वह स्वयं को ऐसी असहाय और अस्पष्ट स्थिति में न पाता, जिसमें इस वक़्त अपने को महसूस कर रहा था। वह कुछ ही समय पहले की अपनी क्षमा, अपनी स्नेहशीलता, बीमार पत्नी और परायी बच्ची के प्रति अपने प्यार का किसी तरह उस चीज़ के साथ ताल-मेल नहीं बिठा सकता था, जो अब थी यानी इस चीज़ के साथ मानो इस सब के पुरस्कार के रूप में बह अब अपने को अकेला, अपमानित, उपहास-पात्र और ऐसा व्यक्ति महसूस कर रहा था, जिसकी किसी को ज़रूरत नहीं थी और जिसे सभी तिरस्कार की दृष्टि से देखते थे।

पत्नी के जाने के बाद पहले दो दिन कारेनिन ने प्रार्थियों से मुलाक़ात

की, अपने निजी सेक्रेटरी से बातचीत की, कमेटी की बैठकों में गया और भोजन करने के लिये सदा की भांति भोजन कक्ष में आया। अपने से यह प्रश्न किये बिना कि वह किसलिये ऐसा करता है, उसने इन दो दिनों में अपने मन की सारी शक्ति इसी में लगायी कि ख़ुद को शान्त, यहां तक कि उदासीन भी ज़ाहिर कर सके। आन्ना की चीज़ों और कमरों का क्या किया जाये, इन प्रश्नों के उत्तर देते समय उसने अपने को ऐसा व्यक्ति ज़ाहिर करने के लिये एड़ी-चोटी का ज़ोर लगाया, जिसे इस घटना के घटने का पहले से ही आभास था, कि वह इसे कोई असाधारण चीज़ नहीं मानता है। उसे अपने इस लक्ष्य में सफलता भी मिलती, कोई भी उसमें हताशा के लक्षण नहीं देख पाया। किन्तु आन्ना के जाने के तीसरे दिन, जब कोरनेई ने फ़ैशनदार पोशाकों की दुकान का एक बिल, जो आन्ना चुकाना भूल गयी थी, उसे लाकर दिया और यह कहा कि दुकान का कारिन्दा ख़ुद आया है, तो कारेनिन ने उसे अपने पास बुलवाया।

"हुज़ूर, माफ़ी चाहता हूं कि आपको परेशान करने की जुर्रत कर रहा हूं। लेकिन अगर आप यह चाहते हैं कि श्रीमती जी को ही इसके लिये कष्ट दूं, तो कृपया मुझे उनका पता बता दीजिये।"

कारिन्दे को ऐसा प्रतीत हुआ कि कारेनिन सोच में डूब गया है और फिर अचानक मुड़कर अपनी मेज़ के क़रीब जा बैठा। हाथों पर सिर टिकाकर वह देर तक इसी तरह बैठा रहा, उसने कई बार कुछ कहने की कोशिश की, मगर कह न पाया।

अपने मालिक की मानसिक स्थिति को समझते हुए कोरनेई ने कारिन्दे से किसी अन्य दिन आने को कहा। फिर से अकेला रह जाने पर कारेनिन यह समझ गया कि दृढ़ता और शान्तचित्त होने की भूमिका निभाने में वह असमर्थ है। उसने आदेश दिया कि प्रतीक्षा कर रही बग्घी के घोड़े खोल दिये जायें, किसी मुलाक़ाती को घर में न आने दिया जाये और वह भोजन करने के लिये भी अपने कमरे से बाहर नहीं निकला।

उसने अनुभव किया कि वह सभी लोगों के उस तिरस्कार तथा कठोरता के सामान्य दबाव को सहन नहीं कर सकेगा, जो उसे इस कारिन्दे, कोरनेई और किसी भी अपवाद के बिना उन सभी लोगों के

चेहरों पर साफ़ दिखायी दिया था, जिनसे इन दिनों उसकी मुलाक़ात हुई थी। वह अनुभव कर रहा था कि अपने प्रति लोगों की घृणा को दूर नहीं कर सकता, क्योंकि यह घृणा इस कारण नहीं थी कि वह बुरा है (तब तो वह अच्छा बनने की कोशिश कर सकता था), बल्कि इस कारण थी कि वह लज्जाजनक और भयानक रूप से अभागा है। वह जानता था कि इसीलिये, इसी कारण वे उसके प्रति निर्मम होंगे कि उसका दिल टुकड़े-टुकड़े हो चुका है। वह महसूस कर रहा था कि लोग वैसे ही उसे मिटा डालेंगे, जैसे कुत्ते बुरी तरह घायल और दर्द के कारण चीखते-किकियाते कुत्ते को मार डालते हैं। वह जानता था कि लोगों से बचने का सिर्फ़ एक ही रास्ता है – उनसे अपने घावों को छिपाये। उसने दो दिन तक अनजाने ही ऐसा करने की कोशिश की, किन्तु अब अनुभव किया कि उसमें नाबराबरी का यह संघर्ष जारी रखने की शक्ति नहीं है।

इस चेतना से उसकी हताशा और भी बढ़ गयी कि अपने दुख में वह सर्वथा एकाकी है। सिर्फ़ पीटर्सबर्ग में ही नहीं, कहीं भी कोई ऐसा आदमी नहीं था, जिसके सामने वह अपने दिल का बोझ हल्का कर सकता, जिसे उसपर एक बड़े सरकारी अफ़सर और कुलीन के रूप में नहीं, बल्कि इसलिये तरस आता कि वह व्यथित और पीड़ित व्यक्ति है।

कारेनिन यतीम की तरह बड़ा हुआ था। वे दो भाई थे। पिता की उन्हें याद नहीं थी और मां तब चल बसी थी, जब कारेनिन दस साल का था। सम्पत्ति बहुत थोड़ी-सी थी। कारेनिन के चाचा ने, जो महत्त्वपूर्ण सरकारी अफ़सर और कभी तो दिवंगत सम्राट के स्नेह-भाजन थे, दोनों भाइयों का पालन-पोषण किया था।

पदकों के साथ हाई स्कूल और विश्वविद्यालय की पढ़ाई ख़त्म करके कारेनिन ने अपने चाचा की मदद से ऊंची सरकारी नौकरी हासिल कर ली और उसी समय से पूरी तरह नौकरी में तरक़्क़ी करने की महत्त्वाकांक्षा के फेर में पड़ गया। कारेनिन ने न तो स्कूल, न विश्वविद्यालय और न बाद में नौकरी करते हुए ही किसी के साथ दोस्ताना सम्बन्ध बढ़ाये। भाई ही उसके मन के सबसे अधिक निकट था, किन्तु वह विदेश मन्त्रालय में काम करता था, हमेशा विदेश में

रहता था और कारेनिन की शादी के कुछ ही समय बाद विदेश में ही उसका देहान्त हो गया था।

कारेनिन जिस समय एक गुबेर्नियां का राज्यपाल था, तो उसी गुबेर्नियां में रहनेवाली आन्ना की धनी बूआ ने अपनी भतीजी और अधेड़ व्यक्ति, किन्तु राज्यपाल के नाते जवान कारेनिन के बीच मेल-जोल बढ़ाया और उसे ऐसी स्थिति में डाल दिया कि या तो वह सगाई का प्रस्ताव करे या नगर छोड़कर चला जाये। कारेनिन देर तक दुविधा में रहा। ऐसा करने के पक्ष में जितने तर्क थे, उनके विपरीत भी उतने ही थे। ऐसा कोई निर्णायक तर्क नहीं था, जो उसे सन्देह में कोई निर्णय न करने का अपना सिद्धान्त बदलने को विवश करता। किन्तु आन्ना की बूआ ने किसी परिचित के ज़रिये उसके मन पर यह प्रभाव डलवाया कि उसने लड़की को अटपटी स्थिति में डाल दिया है और एक भले आदमी के नाते उसे रिश्ते का प्रस्ताव करना चाहिये। उसने ऐसा प्रस्ताव किया और मंगेतर तथा पत्नी के रूप में उसे अपनी वह सारी भावना अर्पित की, जो उसके लिये सम्भव थी।

आन्ना के प्रति वह जो अनुराग अनुभव करता था, उसने उसकी आत्मा में दूसरे लोगों के साथ हार्दिक सम्बन्धों की आवश्यकता को बिल्कुल समाप्त कर दिया था। अब उसके परिचितों में से किसी के भी साथ उसकी घनिष्ठता नहीं थी। सम्पर्क तो बहुतों के साथ थे, किन्तु मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध नहीं थे। ऐसे लोग बहुत थे, जिन्हें कारेनिन अपने यहां खाने पर बुला सकता था, अपनी रुचि के मामले में उनसे दिलचस्पी लेने या किसी की मदद करने का अनुरोध कर सकता था, जिनके साथ वह दूसरे लोगों और सरकार के सदस्यों के बारे में खुलकर विचार-विमर्श कर सकता था। किन्तु ऐसे लोगों के साथ उसके सम्बन्ध एक विशेष लीक में बंधे-बंधाये और आदत की ऐसी सीमा में घिरे हुए थे, जिससे बाहर निकलना सम्भव नहीं था। विश्वविद्यालय के दिनों का एक साथी ज़रूर था, जिससे बाद में उसकी घनिष्ठता हो गयी थी और जिसके साथ वह अपना सुख-दुख बांट सकता था। मगर यह साथी किसी दूरस्थ क्षेत्र में स्कूल इन्स्पेक्टर था। पीटर्सबर्ग के लोगों में उसका निजी सेक्रेटरी और डाक्टर ही निकटतम व्यक्ति थे और उन्हीं से उसके लिये बात करना सम्भव था।

निजी सेक्रेटरी मिखाईल वसील्येविच स्लूदिन सीधा-सरल, समझदार, दयालु और नैतिकतापरायण व्यक्ति था तथा कारेनिन महसूस करता था कि वह उसके प्रति सद्भावना भी रखता है। किन्तु पांच वर्ष के दफ़्तरी ढंग के सम्बन्ध दिली बातें करने के मामले में बाधा डालते थे।

काग़ज़ों पर हस्ताक्षर करने के बाद कारेनिन देर तक ख़ामोश रहकर स्लूदिन को ताकता रहा। उसने कई बार कुछ कहने की कोशिश की, मगर कह न पाया। उसने अपने मन में यह वाक्य भी तैयार कर लिया था – "आपने मेरे दुर्भाग्य के बारे में सुना है?" किन्तु सदा की भांति यह कहकर ही – "तो आप मेरे लिये ये काग़ज़ तैयार कर दें" – बात ख़त्म कर दी और उसे जाने को कहा।

दूसरा व्यक्ति डाक्टर था। वह भी उसके प्रति सद्भावना रखता था। किन्तु उन दोनों ने मानो एक मौन समझौते के अनुसार यह मान लिया था कि दोनों ही काम के बोझ से बुरी तरह दबे हुए हैं और उतावली में हैं।

अपनी नारी-मित्रों और सबसे पहले काउंटेस लीदिया इवानोव्ना का कारेनिन को ध्यान ही नहीं आया था। नारी के रूप में सभी नारियां उसके लिये भयानक और घृणित थीं।

(२२)

कारेनिन ने काउंटेस लीदिया इवानोव्ना को भुला दिया, मगर वह उसे नहीं भूली थी। एकाकीपन के इस अत्यधिक हताशा के क्षण में वह उसके पास आई और अपने आने की सूचना दिलवाये बिना उसके अध्ययन कक्ष में दाखिल हो गयी। दोनों हाथों में सिर थामे हुए वह जिस स्थिति में बैठा था, उसने उसे वैसे ही पाया।

"J'ai forcé la consigne,*" उसने तेज़ क़दमों से भीतर आते और उत्तेजना तथा तेज़ चाल के कारण हांफते हुए कहा। "मैं सब कुछ सुन चुकी हूं! अलेक्सेई अलेक्सान्द्रोविच! मेरे दोस्त!" अपने दोनों

---

* मैंने आपके निषेध का उल्लंघन किया है। (फ़्रांसीसी)

हाथों से उसका हाथ दबाते और अपनी सुन्दर तथा स्वप्निल-सी आंखों से उसकी आंखों में भांकते हुए उसने कहा।

कारेनिन माथे पर बल डालकर खड़ा हो गया और काउंटेस के हाथों से अपना हाथ छुड़ाकर उसकी तरफ़ कुर्सी बढ़ा दी।

"बैठियेगा न, काउंटेस? मैं किसी से नहीं मिल रहा हूं काउंटेस, क्योंकि मेरी तबीयत अच्छी नहीं है," उसने कहा और उसके होंठ कांप उठे।

"मेरे दोस्त!" कारेनिन के चेहरे पर नज़र टिकाये हुए ही लीदिया इवानोव्ना ने इन शब्दों को दोहराया, उसकी भौंहें ऊपर उठ गयीं, जिससे उसके माथे पर तिकोण-सा बन गया, उसका पीला चेहरा और भी बदसूरत हो गया, किन्तु कारेनिन ने महसूस किया कि काउंटेस को उसपर तरस आ रहा है और किसी भी क्षण उसकी आंखें छलछला सकती हैं। कारेनिन द्रवित हो उठा, उसने काउंटेस का गुदगुदा-सा हाथ अपने हाथ में ले लिया और उसे चूमा।

"मेरे दोस्त!" उसने भाव-विह्वलता के कारण टूटती आवाज़ में कहा। "आपको दुख को अपने पर हावी नहीं होने देना चाहिये। आपका दुख बहुत बड़ा है, मगर आपको सान्त्वना ढूंढ़नी चाहिये।"

"मैं बिल्कुल टूट गया हूं, कुचल दिया गया हूं, मैं अब इन्सान नहीं रहा!" कारेनिन ने काउंटेस का हाथ छोड़ते, किन्तु आंसुओं से तर उसकी आंखों में देखते हुए कहा। "मेरी स्थिति इसलिये भयानक है कि मुझे कहीं भी, ख़ुद अपने में भी सहारे का आधार नहीं मिल रहा है।"

"आपको सहारा मिल जायेगा। आप उसे मुझमें नहीं ढूंढ़िये, यद्यपि मेरी दोस्ती पर भरोसा करने का मैं आपसे अनुरोध करती हूं," काउंटेस ने गहरी सांस लेकर कहा। "हमारा सहारा प्यार है, वह प्यार, जो उन्होंने हमें दिया है। उनका बोझ भारी नहीं है," काउंटेस ने उस उत्साहपूर्ण दृष्टि के साथ, जिससे वह परिचित था, यह बात कही। "वे आपको सहारा देंगे और आपकी मदद करेंगे।"

इन शब्दों में व्यक्त अपनी उच्च भावनाओं से बेशक वह स्वयं द्रवित हो उठी थी और यद्यपि इनमें वह नयी, आह्लादपूर्ण तथा कुछ ही समय पहले पीटर्सबर्ग में फैलनेवाली रहस्यमयी मनःस्थिति भी थी,

जिसे कारेनिन व्यर्थ समझता था, फिर भी इस समय उसे यह सुनना अच्छा लगा।

"मुझमें शक्ति नहीं रही। मैं तबाह हो गया हूं। मैं पहले से कुछ नहीं देख पाया और अब कुछ नहीं समझ पा रहा हूं।"

"मेरे दोस्त," लीदिया इवानोव्ना ने दोहराया।

"जो कुछ अब नहीं रहा, मैं उसे हानि नहीं मानता," कारेनिन ने अपनी बात जारी रखी। "मुझे उसका अफ़सोस नहीं। किन्तु मेरी अब जो स्थिति है, उसके लिये मैं लोगों के सामने लज्जा अनुभव किये बिना नहीं रह सकता। यह बुरी बात है, मगर मैं कुछ नहीं कर सकता, कुछ नहीं कर सकता।"

"क्षमादान का वह उच्च कार्य आपने नहीं किया, जिसके लिये मैं और सभी आपकी प्रशंसा करते हैं, बल्कि उन्होंने, जो आपके हृदय में बसे हुए हैं," काउंटेस लीदिया इवानोव्ना ने आह्लादपूर्ण ढंग से दृष्टि ऊपर उठाते हुए कहा, "और इसलिये अपने कार्य के लिये आप लज्जित नहीं हो सकते।"

कारेनिन ने माथे पर बल डाल लिये और हाथ झुकाकर उंगलियां चटकाने लगा।

"काश आपको सभी तफ़सीलें मालूम होतीं," उसने अपनी पतली-सी आवाज़ में कहा। "आदमी की ताक़त की भी कोई हद होती है और मैं अपनी इस हद तक पहुंच चुका हूं। आज दिन भर मुझे अपनी नयी, एकाकीपन की परिस्थिति के परिणामस्वरूप (उसने 'परिणाम-स्वरूप' शब्द पर ज़ोर दिया) घर के मामलों का प्रबन्ध करना पड़ा। नौकरों-चाकरों, शिक्षिका और बिलों की चिन्ता करनी पड़ी... इन छोटी-छोटी चिंगारियों ने मुझे जला डाला। मेरे लिये इन्हें सहन करना सम्भव नहीं था। दिन के खाने के वक़्त... कल मैं खाने की मेज़ से उठकर जाता-जाता रह गया। मेरा बेटा जिस तरह मेरी ओर देख रहा था, मुझसे वह सहन नहीं हो पा रहा था। जो कुछ हुआ है, उसने मुझसे उस सबका मतलब नहीं पूछा, किन्तु वह पूछना चाहता था और मैं उसकी ऐसी दृष्टि सहन नहीं कर पा रहा था। वह मेरी ओर देखते हुए घबरा रहा था, किन्तु बात सिर्फ़ इतनी ही नहीं है..."

कारेनिन उस बिल की चर्चा करना चाहता था, जो उसके पास

लाया गया था। मगर उसकी आवाज़ कांप गयी और वह रुक गया। नीले काग़ज़ पर लिखे टोपी और रिबनों के इस बिल को वह अपने प्रति दया अनुभव किये बिना याद नहीं कर सकता था।

"मैं समझती हूं, मेरे दोस्त," काउंटेस लीदिया इवानोव्ना ने कहा। "मैं सब कुछ समझती हूं। सहायता और सान्त्वना आप मुझसे नहीं पायेंगे, फिर भी मैं केवल इसीलिये आयी हूं कि अगर कर सकूं, तो आपकी मदद करूं। अगर मैं आपके कंधों से इन सभी छोटी-छोटी और तिरस्कारपूर्ण चिन्ताओं का बोझ हटा सकती... मैं समझती हूं कि आपके घर में नारी के शब्दों, नारी के प्रबन्ध की आवश्यकता है। आप यह भार मुझे सौंपते हैं?"

कारेनिन ने चुप रहते हुए कृतज्ञता से उसका हाथ दबा दिया।

"सेर्योझा की हम दोनों मिलकर देखभाल करेंगे। व्यावहारिक कामों में मैं बहुत होशियार नहीं हूं, फिर भी मैं मामले को अपने हाथ में ले लूंगी, मैं आपकी गृह-प्रबन्धिका का काम करूंगी। मुझे धन्यवाद नहीं दीजियेगा। मैं ख़ुद यह नहीं कर रही हूं..."

"मैं धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकता।"

"लेकिन मेरे दोस्त, अपने को उस भावना के वश में नहीं होने दीजिये, जिसकी आपने अभी चर्चा की थी, आप उस चीज़ से लज्जित हों, जो किसी ईसाई की उच्चता का शिखर-बिन्दु है – जो विनम्र है, वही ऊंचा है। आपको मुझे धन्यवाद भी नहीं देना चाहिये। उन्हीं को धन्यवाद देना और उन्हीं से सहायता की प्रार्थना करनी चाहिये। केवल उन्हीं से आपको चैन, सान्त्वना, मुक्ति और स्नेह मिलेगा," काउंटेस ने कहा तथा आकाश की ओर आंखें उठाकर, जैसा कि कारेनिन को लगा, प्रार्थना करने लगी।

कारेनिन अब काउंटेस को सुन रहा था और वे वाक्य, जो उसे पहले अप्रिय तो नहीं, किन्तु अतिशय प्रतीत होते थे, अब स्वाभाविक और सान्त्वनाप्रद लगने लगे। कारेनिन को यह नयी, आह्लादपूर्ण धारा पसन्द नहीं थी। वह आस्था रखनेवाला व्यक्ति था और मुख्यतः राजनैतिक अर्थ में ही धर्म में रुचि लेता था। किन्तु नयी धार्मिक धारा धर्म के कुछ नये अर्थ लगाने की सम्भावना देती थी और चूंकि वह विवाद तथा विश्लेषण का मार्ग खोलती थी, इसीलिये सिद्धान्त के रूप

में उसे अच्छी नहीं लगती थी। पहले तो इस शिक्षा के प्रति वह उदासीनता, यहां तक कि शत्रुता का भाव भी रखता था और लीदिया इवानोव्ना के साथ, जो इस धारा में बह गयी थी, कभी बहस नहीं करता था, बल्कि उसकी चुनौतियों को मौन रहकर टालने की कोशिश करता था। किन्तु अब पहली बार उसने बड़ी ख़ुशी से उसके शब्दों को सुना और मन में उनका विरोध नहीं किया।

"आपके कार्यों और आपके शब्दों के लिये भी मैं आपका बहुत कृतज्ञ हूं," काउंटेस के प्रार्थना समाप्त कर लेने पर उसने कहा।

काउंटेस लीदिया इवानोव्ना ने फिर एक बार अपने मित्र के दोनों हाथों को दबाया।

"तो मैं अब काम शुरू करती हूं," उसने कुछ देर तक चुप रहने तथा चेहरे पर से आंसुओं के शेष चिह्नों को पोंछने के बाद कहा। "मैं सेर्योझा के पास जा रही हूं। एकदम लाचार होने पर ही मैं आपसे मदद लेने को आऊंगी।" और वह उठकर बाहर चली गयी।

काउंटेस लीदिया इवानोव्ना सेर्योझा के कमरों वाले आधे भाग में गयी और वहां डरे-सहमे बालक के गालों को आंसुओं से तर करके उसने उससे कहा कि उसका बाप देवता है और उसकी मां मर गयी है।

काउंटेस लीदिया इवानोव्ना ने अपना वचन पूरा किया। उसने सचमुच ही कारेनिन के घर की व्यवस्था और उसे चलाने की सारी ज़िम्मेदारी अपने ऊपर ले ली। किन्तु जब उसने यह कहा था कि व्यावहारिक कामों में वह बहुत चतुर नहीं है, तो किसी तरह की अतिशयोक्ति से काम नहीं लिया था। उसकी सभी हिदायतों को रद्द करना पड़ा, क्योंकि उन्हें अमली जामा पहनाना मुमकिन नहीं था, और यह काम कारेनिन के नौकर कोरनेई ने किया, जो अब किसी को भी इस बात का एहसास करवाये बिना कारेनिन की घर-गिरस्ती चलाता था। वह कपड़े पहनने में मदद देते समय शान्ति और सावधानी से ज़रूरत की चीज़ें मालिक को बता देता था। फिर भी लीदिया इवानोव्ना की सहायता बहुत मूल्यवान थी: पहले तो अपने प्रति उसके प्यार और आदर की चेतना ने कारेनिन को नैतिक सहारा दिया और विशेषत: इसलिये कि लीदिया इवानोव्ना ने उसे सच्चा ईसाई बना

दिया था, जिससे काउंटेस को बड़ा सन्तोष था। दूसरे शब्दों में उदासीन और उत्साहहीन आस्थावान से ईसाई धर्म की शिक्षा की उस नयी व्याख्या का ज़ोरदार और दृढ़ समर्थक बना दिया था, जिसका पिछले कुछ अर्से से पीटर्सबर्ग में प्रचार हुआ था। कारेनिन ने इसे आसानी से स्वीकार कर लिया। लीदिया इवानोव्ना और उसके समान दृष्टिकोण रखनेवाले दूसरे लोगों की भांति कारेनिन भी कल्पना की गहराई और उस आत्मिक क्षमता से वंचित था, जिसकी बदौलत कल्पना की उड़ान से जन्म लेनेवाले विचार इतने वास्तविक हो जाते हैं कि वे दूसरे विचारों और वास्तविकता से तद्नुरूपता की अपेक्षा करते हैं। उसे इस धारणा में कुछ भी असम्भव और बेतुकापन नहीं दिखाई देता था कि आस्थाहीनों के लिये विद्यमान मृत्यु का उसके लिये कोई अस्तित्व नहीं है, और चूंकि उसमें पूर्ण आस्था है, जिसके परिणाम का निर्णायक वह स्वयं है, इसलिये उसकी आत्मा में पाप भी नहीं रहा और वह यहां, इस धरती पर ही पूर्ण मुक्ति अनुभव करता है।

यह सच है कि इस धारणा के छिछलेपन और भूल का कारेनिन को धुंधला-सा आभास ज़रूर था। वह जानता था कि जब बिल्कुल यह सोचे बिना ही कि आन्ना को उसका क्षमादान किसी उच्च शक्ति का कार्य है, उसने स्वतःस्फूर्त ढंग से इस भावना को स्वीकार किया था, उसे इस समय की तुलना में कहीं अधिक सुख मिला था, जब वह हर क्षण यह सोचता था कि उसकी आत्मा में ईसा मसीह बसे हुए हैं और काग़ज़ों पर हस्ताक्षर करते हुए वह उनके आदेश का पालन करता है। किन्तु कारेनिन के लिये ऐसा सोचना ज़रूरी था, उसके लिये अपनी अपमान की स्थिति में उस ऊंचाई का, बेशक वह कल्पित ही हो, सहारा लेना ज़रूरी था, जहां से वह, जो अन्य सभी से तिरस्कृत था, दूसरों को तिरस्कार की दृष्टि से देख सके और इसीलिये वह अपनी इस बनावटी मुक्ति के साथ वास्तविक मुक्ति की तरह चिपका हुआ था।

(२३)

काउंटेस लीदिया इवानोव्ना अभी बहुत ही जवान और रोमानी-सी लड़की थी जब एक धनी, कुलीन, नेकदिल और ख़ुशमिज़ाज ऐयाश

के साथ उसकी शादी कर दी गयी थी। शादी के एक महीने के बाद पति ने उसे छोड़ दिया और उसके अत्यधिक भावनापूर्ण प्रणय-निवेदन के जवाब में वह केवल व्यंग्य-बाण ही छोड़ता और शत्रुता का भाव तक दिखाता। काउंट के दयालु हृदय से परिचित और प्रेम-दीवानी लीदिया इवानोव्ना में किसी प्रकार की त्रुटियां न देख पानेवाले लोग इस बात को किसी तरह भी नहीं समझ पाते थे। तभी से, तलाक़ न होने पर भी वे दोनों अलग-अलग रहते थे और पति की जब भी पत्नी से मुलाक़ात होती, वह उसके साथ पहले जैसे विषैले, व्यंग्यपूर्ण ढंग से व्यवहार करता, जिसका कारण समझ पाना सम्भव नहीं था।

काउंटेस लीदिया इवानोव्ना को पति से कभी का प्यार नहीं रहा था, मगर तभी से वह किसी न किसी को अवश्य प्यार करती रही थी। वह कई पुरुषों और नारियों को एकसाथ ही प्यार कर सकती थी। किसी न किसी चीज़ में नाम पैदा करनेवाले सभी लोगों से वह मुहब्बत करती थी। ज़ार परिवार में शामिल होनेवाले सभी राजकुमारों-राजकुमारियों को वह प्यार करती थी, एक बड़े बिशप, सहायक बिशप और पादरी से भी उसे प्रेम था। एक पत्रकार, तीन स्लावों, कमिसारोव, एक मन्त्री, एक डाक्टर, एक अंग्रेज़ धर्म-प्रचारक और कारेनिन से उसे मुहब्बत थी। ये सभी प्यार, जो कभी चढ़ाव और कभी उतार पर होते थे, दरबार और ऊंचे समाज के साथ उसके बहुत ही विस्तृत और जटिल सम्बन्धों को निभाते जाने में बाधा नहीं डालते थे। किन्तु दुर्भाग्य का शिकार होने के बाद, जब से उसने कारेनिन को अपने विशेष संरक्षण में ले लिया था, जब से कारेनिन के सुख-सौभाग्य की चिन्ता करते हुए वह उसके घर की देखभाल करने लगी थी, तब से उसे ऐसा अनुभव होने लगा था कि उसके बाक़ी सभी प्यार वास्तविक नहीं थे और वह अब सचमुच ही सिर्फ़ कारेनिन को प्यार करती है। जैसी प्रणय-भावना उसे अब अनुभव होती थी, उसे लगता था कि वह पहले की सभी ऐसी भावनाओं से कहीं तीव्र है। अपनी भावना का विश्लेषण और पहली भावनाओं से इसकी तुलना करते हुए उसे यह साफ़ नज़र आता था कि अगर कमिसारोव ने ज़ार की जान न बचाई होती तो वह उसे प्यार न करती, अगर स्लाव-समस्या सामने न आती, तो रीस्तिच-कुदजीत्स्की पर उसका मन न आता, किन्तु कारेनिन को वह

स्वयं उसी के लिये, उसकी उच्च, अनबूझ आत्मा, शब्दों को लटका-लटकाकर बोलने के अन्दाज़ तथा उसे प्यारी लगनेवाली पतली आवाज़, थकी-थकी नज़र, उसके मिज़ाज और उभरी नसों वाले मुलायम, गोरे हाथों के लिये प्यार करती थी। उसे उससे भेंट होने पर सिर्फ़ ख़ुशी ही नहीं होती थी, बल्कि वह उसके चेहरे पर उस प्रभाव के चिह्न भी ढूंढ़ने की कोशिश करती थी, जो उसने उसपर डाला होता था। वह केवल शब्दों से ही नहीं, बल्कि अपने समूचे व्यक्तित्व से उसे पसन्द आना चाहती थी। पहले किसी भी समय की तुलना में अब वह अपने पहनावे की तरफ़ कहीं अधिक ध्यान देती थी। कभी-कभी वह यह कल्पना करने लगती कि अगर वह अविवाहित होती और कारेनिन बन्धन-मुक्त होता, तो क्या होता? कारेनिन के कमरे में दाख़िल होने पर वह उत्तेजना से लाल हो जाती और जब वह कोई प्यारी बात कहता, तो उसके होंठों पर बरबस ख़ुशी की मुस्कान खिल उठती।

काउंटेस लीदिया इवानोव्ना कई दिन से बेहद बेचैन थी। उसे पता चल गया था कि आन्ना और व्रोन्स्की पीटर्सबर्ग में हैं। कारेनिन को आन्ना से भेंट होने, यहां तक कि इस बात की यातनापूर्ण जानकारी होने से भी बचाना ज़रूरी था कि यह भयानक नारी उसी शहर में है, जहां वह है और किसी भी क्षण उसकी उससे भेंट हो सकती है।

लीदिया इवानोव्ना अपने परिचितों द्वारा इस बात का भेद पाती रही कि ये "घृणित लोग", जैसा कि वह आन्ना और व्रोन्स्की को कहती थी, क्या करने का इरादा रखते हैं और इन दिनों के दौरान अपने मित्र की सभी गतिविधियों का ऐसे निर्देशन करती रही कि उसकी आन्ना और व्रोन्स्की से भेंट न हो जाये। जवान ऐडजुटेन्ट ने, जो व्रोन्स्की का दोस्त था और जिसके ज़रिये काउंटेस सूचना प्राप्त करती थी तथा जो ख़ुद बदले में काउंटेस की मदद से कुछ लाभ पाना चाहता था, उसे बताया कि आन्ना और व्रोन्स्की ने अपने काम-काज समाप्त कर लिये हैं और अगले दिन पीटर्सबर्ग से जा रहे हैं। लीदिया इवानोव्ना शान्त होने लगी थी कि अगली ही सुबह को उसे एक ख़त लाकर दिया गया, जिसकी लिखावट को पहचानकर वह कांप उठी। यह आन्ना कारेनिना की लिखावट थी। लिफ़ाफ़ा मोटे और कड़े काग़ज़ का था, अंडाकार पीले काग़ज़ पर बहुत बड़ा नामचिह्न था और पत्र से प्यारी सुगन्ध आ रही थी।

"कौन लाया है?"

"होटल का हरकारा।"

काउंटेस लीदिया इवानोव्ना पत्र को पढ़ने के लिये देर तक नहीं बैठ पायी। उत्तेजना के कारण उसे दमे का दौरा पड़ गया, जिसकी वह रोगी थी। शान्त होने पर उसने फ़्रांसीसी भाषा में यह पत्र पढ़ा।

"Madame la Comtesse,* मैं अनुभव करती हूं कि आपके हृदय को ओत-प्रोत करनेवाली ईसाई धर्म की भावनायें मुझे आपको पत्र लिखने का अक्षम्य साहस प्रदान करती हैं। पुत्र-विछोह के कारण मैं बहुत दुखी हूं। जाने से पहले एक बार उससे मिलने की अनुमति की प्रार्थना करती हूं। क्षमा चाहती हूं कि आपको अपनी याद दिला रही हूं। अलेक्सेई अलेक्सान्द्रोविच के बजाय मैं आपको केवल इसलिये पत्र लिख रही हूं कि उस दयालु व्यक्ति को अपनी याद दिलाकर व्यथित नहीं करना चाहती। उनके प्रति आपकी मैत्री से परिचित हूं, इसलिये आशा करती हूं कि आप मेरी भावना को समझ जायेंगी। आप सेर्योझा को मेरे पास भेज देंगी या किसी इंगित समय पर मैं घर में जाऊंगी अथवा आप मुझे यह सूचित कर देंगी कि घर के बाहर किसी दूसरी जगह पर मैं कब और कहां उससे मिल सकती हूं? उस व्यक्ति की विशालहृदयता को जानते हुए, जिसपर यह निर्भर है, मैं इन्कार किये जाने की उम्मीद नहीं करती। बेटे से मिलने को मैं कितनी लालायित हूं, आप इसकी कल्पना भी नहीं कर सकतीं और इसलिये यह कल्पना भी नहीं कर सकतीं कि आपकी सहायता का मैं कितना आभार मानूंगी।

आन्ना।"

इस पत्र की हर चीज़, इसके सार, विशालहृदयता की ओर संकेत और ख़ास तौर पर, जैसा कि काउंटेस को लगा, इसके बेतकल्लुफ़ अन्दाज़ से लीदिया इवानोव्ना को झल्लाहट महसूस हुई।

"कह दो कि उत्तर नहीं दिया जायेगा," काउंटेस लीदिया इवानोव्ना ने जवाब दिया और उसी क्षण स्याही-चूस पैड खोलकर कारेनिन को यह लिख भेजा कि दिन के एक बजे बधाई-समारोह के समय वह उससे महल में मिलने की आशा रखती है।

---

* काउंटेस। (फ़्रांसीसी)

"मुझे एक महत्त्वपूर्ण और दुखद मामले पर आपसे बातचीत करनी है। वहां हम स्थान तय कर लेंगे। मेरे यहां ही ज़्यादा अच्छा रहेगा, जहां मैं 'आपकी' चाय तैयार करने का आदेश दे दूंगी। मुलाक़ात बहुत ज़रूरी है। वे सलीब देते हैं और वही उसे उठाने की शक्ति भी देते हैं," उसने कारेनिन को पहले से ही कुछ तैयार करने के लिये लिखा।

काउंटेस लीदिया इवानोव्ना आम तौर पर हर दिन दो-तीन रुक्क़े कारेनिन को लिखती थी। उससे सम्पर्क बनाये रखने की यह लालित्यपूर्ण और रहस्यमय प्रक्रिया, जो उसके व्यक्तिगत सम्बन्धों में विद्यमान नहीं थी, उसे पसन्द थी।

(२४)

बधाई-समारोह समाप्त हो रहा था। जानेवाले लोग दूसरों से मिल-जुल रहे थे, नये समाचारों, नये मिले पदकों-पुरस्कारों और महत्त्वपूर्ण अधिकारियों के स्थान-परिवर्तनों की चर्चा कर रहे थे।

"कितना अच्छा होता कि काउंटेस मारीया बोरीसोव्ना को युद्ध-मन्त्री और काउंटेस वात्कोव्स्काया को सेना-प्रधान बना दिया जाता," सुनहरी कशीदाकारी से सजी वर्दी पहने, पके बालोंवाला एक बुज़ुर्ग ऊंचे क़द की सुन्दर दरबारी परिचारिका से कह रहा था, जिसने उससे सरकारी ओहदों में की गयी तब्दीलियों के बारे में पूछा था।

"और मुझे उनका एड-डी-कैम्प नियुक्त किया जाता," दरबारी परिचारिका ने मुस्कराकर उत्तर दिया।

"आपकी नियुक्ति तो हो भी चुकी है – धार्मिक मामलों के विभाग में और कारेनिन को आपका सहायक बनाया गया है।"

"नमस्ते, प्रिंस!" पास आनेवाले व्यक्ति से हाथ मिलाते हुए बुज़ुर्ग ने कहा।

"कारेनिन के बारे में आप क्या कह रहे थे?" प्रिंस ने पूछा।

"उसे और पुत्यातोव को अलेक्सान्द्र नेव्स्की पदक मिला है।"

"मेरा ख़्याल था कि उसे यह पहले से ही मिल चुका है।"

"नहीं। आप उस पर नज़र डालें," बुज़ुर्ग ने कढ़े हुए टोप से

कारेनिन की ओर संकेत किया। कारेनिन दरबारी वर्दी पहने था, उसके कंधे के गिर्द पदक का नया लाल रिबन पड़ा हुआ था और वह हॉल के दरवाज़े के पास राजकीय कमेटी के किसी प्रभावपूर्ण सदस्य से बातचीत कर रहा था। "कितना ख़ुश और कैसे खिला हुआ है," बुज़ुर्ग ने कसरती ढंग के तगड़े और सुन्दर कंचुकी से हाथ मिलाने के लिये रुकते हुए कहा।

"नहीं, वह बुढ़ा गया है," कंचुकी ने कहा।

"चिन्ताओं के कारण। वह अब परियोजनायें तैयार करता है। अब वह उस बदक़िस्मत का तब तक पिंड नहीं छोड़ेगा, जब तक सिलसिलेवार ढंग से सब मुद्दों का उल्लेख नहीं कर लेगा।"

"बुढ़ा कैसे गया? Il fait des passions.* मेरे ख़्याल में काउंटेस लीदिया इवानोव्ना अब उसकी पत्नी से जलती है।"

"अजी हटाइये! कृपया काउंटेस लीदिया इवानोव्ना के बारे में कुछ भी बुरा नहीं कहियेगा।"

"यह कौन-सी बुरी बात है कि वह कारेनिन से मुहब्बत करती है?"

"क्या यह सच है कि कारेनिना यहां है?"

"यहां महल में नहीं, लेकिन पीटर्सबर्ग में है। कल मैंने उसे और अलेक्सेई व्रोन्स्की को bras dessus, bras dessous** मार्स्काया सड़क पर देखा था।

"C'est un homme qui n'a pas...***" कंचुकी ने कहना शुरू किया, मगर पास से गुज़रनेवाले ज़ार-परिवार के किसी सदस्य को रास्ता देते और सिर झुकाते हुए ख़ामोश हो गया।

तो कारेनिन पर टीका-टिप्पणी करते और उसका मज़ाक़ उड़ाते हुए ये लोग लगातार बातें करते जा रहे थे। इसी बीच कारेनिन राजकीय कमेटी के सदस्य का रास्ता रोके हुए, ताकि वह खिसक न जाये, रुके बिना उसके सामने क्रमबद्ध रूप से अपनी वित्तीय परियोजना प्रस्तुत करता जा रहा था।

---

* औरतें उसपर मरती हैं। (फ़्रांसीसी)

** बांह में बांह डाले। (फ़्रांसीसी)

*** यह ऐसा व्यक्ति है, जिसके पास नहीं है... (फ़्रांसीसी)

पत्नी जब उसे छोड़कर गयी, लगभग उसी समय कारेनिन के जीवन में नौकरीपेशा आदमी की कटुतम घटना घटी – उसकी पदोन्नति पर पूर्णविराम लग गया। पूर्णविराम लग गया था और सबको यह साफ़ नज़र आ रहा था, मगर ख़ुद कारेनिन को अभी यह चेतना नहीं हुई थी कि उसके उन्नति-मार्ग का अन्त हो चुका है। स्त्रेमोव के साथ उसका टकराव, पत्नी द्वारा उसका परित्याग या फिर केवल यही कारण रहा हो कि वह अपने लिये निर्धारित सीमा तक पहुंच गया था, किन्तु इस साल सभी को यह स्पष्ट हो चुका था कि नौकरी के क्षेत्र में वह अपनी दौड़ पूरी कर चुका है। वह अभी भी महत्त्वपूर्ण पद पर था, बहुत-से आयोगों और समितियों का सदस्य था, लेकिन उसका ज़माना लद चुका था और अब उससे कुछ भी उम्मीद नहीं की जाती थी। वह जो कुछ भी कहता, जो भी सुझाव देता, उसकी बात ऐसे सुनी जाती मानो वह जो भी प्रस्ताव कर रहा है, बहुत पहले से सबको मालूम है और वही है, जिसकी किसी को ज़रूरत नहीं।

किन्तु कारेनिन इसे अनुभव नहीं करता था। इसके विपरीत, सरकारी कार्य-कलापों में अब सीधे तौर पर भाग न लेने के कारण वह दूसरों की गतिविधियों की त्रुटियों और भूलों को पहले से अधिक अच्छी तरह देखता था और उन्हें सुधारने के तरीक़े बताने को अपना कर्त्तव्य मानता था। पत्नी के जाने के फ़ौरन बाद ही उसने शासन की सभी शाखाओं से सम्बन्धित असंख्य टिप्पणियों में से, जिनकी किसी को ज़रूरत नहीं थी और जिन्हें उसे लिखना था, नयी न्याय-पद्धति के बारे में अपनी पहली टिप्पणी लिखनी शुरू कर दी थी।

कारेनिन ने सरकारी ओहदों की दुनिया में अपनी पतली हालत की तरफ़ न केवल ध्यान नहीं दिया और इससे न केवल दुखी ही नहीं हुआ, बल्कि पहले किसी भी समय की तुलना में अपने कार्य-कलापों से बहुत ख़ुश भी था।

"विवाहित सांसारिक चिन्तायें करता है, कैसे पत्नी को प्रसन्न किया जाये, अविवाहित भगवान की चिन्ता करता है, कैसे उसे प्रसन्न किया जाये," ईशदूत पावेल ने कहा है और कारेनिन, जो अब अपने कार्यों में इंजील से निर्देशित होता था, बहुधा इन शब्दों को याद करता था। उसे लगता था कि जब से पत्नी छोड़कर गयी है, वह

अपनी इन्हीं परियोजनाओं से पहले की तुलना में भगवान की कहीं अधिक सेवा करता है।

राजकीय कमेटी के सदस्य की बैचेनी से, जो खिसक जाना चाहता था, कारेनिन को स्पष्टतः कोई घबराहट नहीं हो रही थी। उसने केवल तभी बोलना बन्द किया, जब वह सदस्य ज़ार के किसी वंशज के निकट से गुज़रने के अवसर का लाभ उठाकर वहां से खिसक गया।

अकेला रह जाने पर कारेनिन ने अपने विचारों को क्रमबद्ध करते हुए सिर झुका लिया, इसके बाद अपने इर्द-गिर्द खोयी-खोयी दृष्टि डाली और फिर दरवाज़े की तरफ़ चल दिया, जहां उसे काउंटेस लीदिया इवानोव्ना से भेंट होने की आशा थी।

"ये सभी कितने तगड़े और स्वस्थ हैं," कारेनिन ने हट्टे-कट्टे कंचुकी के महकते और ढंग से संवारे हुए गलमुच्छों और कसी हुई वर्दी पहने प्रिंस की लाल गरदन को देखते हुए, जिनके पास से उसे गुज़रना था, मन ही मन सोचा। "ठीक ही कहा गया है कि दुनिया में सब बुराई ही बुराई है," कंचुकी की पिण्डलियों की ओर एक बार फिर कनखियों से देखते हुए उसने सोचा।

कारेनिन ने धीरे-धीरे क़दम बढ़ाते और थकान तथा गरिमा के सामान्य भाव से इन महानुभावों का, जो उसकी चर्चा कर रहे थे, सिर झुकाकर अभिवादन किया और दरवाज़े की ओर देखते हुए काउंटेस लीदिया इवानोव्ना को नज़रों से ढूंढ़ने की कोशिश की।

"अरे! अलेक्सेई अलेक्सान्द्रोविच!" बुज़ुर्ग व्यक्ति ने कारेनिन के निकट आने और उदासीनता से सिर झुकाने पर अपनी आंखों में द्वेषपूर्ण चमक लाकर कहा। "मैंने अभी तक आपको बधाई नहीं दी," कारेनिन को दिये गये नये पदक की ओर संकेत करते हुए उसने कहा।

"धन्यवाद," कारेनिन ने उत्तर दिया। "कितना प्यारा दिन है आज," अपनी आदत के मुताबिक़ "प्यारा" शब्द पर ज़ोर देते हुए उसने इतना और जोड़ दिया।

वे उसका मज़ाक़ उड़ा रहे थे, कारेनिन को यह मालूम था। किन्तु वह शत्रुता के सिवा उनसे किसी और चीज़ की आशा ही नहीं करता था। वह इसका आदी हो गया था।

दरवाज़े में दाख़िल होती काउंटेस लीदिया इवानोव्ना के चोली

से बाहर निकले पीले कन्धों और अपनी तरफ़ बुलाती हुई सुन्दर तथा स्वप्निल-सी आंखों की झलक मिलने पर कारेनिन अपने सफ़ेद और अभी तक मज़बूत सफ़ेद दांतों को खोलकर मुस्कराता हुआ उसके क़रीब गया।

पिछले कुछ समय की भांति आज की पोशाक का चुनाव करने में भी लीदिया इवानोव्ना को बहुत मेहनत करनी पड़ी थी। तीस साल पहले की तुलना में अब उसका पोशाक चुनने का उद्देश्य बिल्कुल उलट था। तब वह अपने को किसी भी तरह सजाना चाहती थी और जितना अधिक सजा पाती थी, उतना ही अच्छा था। अब उसे आयु और आकृति से मेल न खाते ढंग से केवल यही ध्यान में रखते हुए कपड़े पहनने होते थे कि उसके पहनावे और रूप-रंग का अन्तर बहुत भयानक न हो। कारेनिन के मामले में उसे इस उद्देश्य में सफलता मिली थी और लगता था कि वह उसके मन को छूती है। शत्रुता और व्यंग्य-उपहास के सागर में लीदिया इवानोव्ना उसके लिये न केवल सहानुभूति, बल्कि स्नेह का भी एक मात्र द्वीप थी।

उपहासजनक दृष्टियों की पांत के बीच से गुज़रते हुए वह उसकी प्यार भरी नज़र की तरफ़ स्वभावतः ऐसे खिंच रहा था, जैसे पौधा सूरज की ओर खिंचता है।

"बधाई देती हूं," काउंटेस ने नज़रों से ही पदक वाले रेशमी रिबन की ओर संकेत करते हुए कहा।

ख़ुशी की मुस्कान पर क़ाबू पाते हुए उसने आंखें मूंदकर कंधे झटक दिये मानो यह कहना चाहता हो कि इससे उसे कोई ख़ुशी नहीं हो सकती। काउंटेस लीदिया इवानोव्ना अच्छी तरह जानती थी कि यद्यपि वह इसे कभी स्वीकार नहीं करेगा, तथापि यह उसकी एक मुख्य ख़ुशी है।

"तो हमारा फ़रिश्ता कैसा है?" काउंटेस लीदिया इवानोव्ना ने सेर्योझा के बारे में पूछा।

"यह तो नहीं कह सकता कि मैं उससे पूरी तरह सन्तुष्ट हूं," भौंहें चढ़ाते और आंखें खोलते हुए कारेनिन ने उत्तर दिया। "सीत्निकोव (यह वह शिक्षक था, जो धर्म-शिक्षा को छोड़कर बेटे को और सब-कुछ पढ़ाता था) भी उससे ख़ुश नहीं है। जैसा कि मैंने आपसे कहा था,

उसमें उन्हीं मुख्य चीज़ों के बारे में एक तरह की उदासीनता-सी है, जिन्हें हर व्यक्ति और हर बालक की आत्मा को छूना चाहिये," कारेनिन ने नौकरी के अलावा अपनी दिलचस्पी के एकमात्र इस विषय यानी बेटे के पालन-शिक्षण के प्रश्न पर अपने विचार प्रकट करने शुरू किये।

लीदिया इवानोव्ना की मदद से कारेनिन जब फिर से जीवन और क्रियाशीलता की ओर लौटा, तो उसे अनुभव हुआ कि उसके पास रह जानेवाले बेटे के शिक्षण की ओर ध्यान देना उसका कर्त्तव्य है। कारेनिन ने बच्चों के पालन-शिक्षण के प्रश्नों में चूंकि पहले कभी रुचि नहीं ली थी, इसलिये उसने इस विषय के सैद्धान्तिक अध्ययन में कुछ समय लगाया। नृवंशशास्त्र, शिक्षाशास्त्र और शिक्षाविधियों की कुछ पुस्तकें पढ़ने के बाद उसने बेटे के शिक्षण की योजना बनायी और पीटर्सबर्ग के सबसे अच्छे शिक्षक को निदेशन के लिये नियुक्त करके अपने इस काम में लग गया। इस काम की ओर वह लगातार ध्यान देता था।

"किन्तु हृदय? मुझे उसमें पिता का हृदय दिखाई देता है और ऐसे हृदय वाला बच्चा बुरा नहीं हो सकता," काउंटेस लीदिया इवानोव्ना ने बड़े उत्साह के साथ कहा।

"हो सकता है... जहां तक मेरा सम्बन्ध है, तो मैं अपना कर्त्तव्य पूरा कर रहा हूं। मैं तो बस, यही कर सकता हूं।"

"आप मेरे यहां आइयेगा," काउंटेस लीदिया इवानोव्ना ने तनिक चुप रहने के बाद कहा, "हमें आपके लिये एक दुखद मामले पर बातचीत करनी होगी। आपको कुछ स्मृतियों से बचाने के लिये मैं कोई भी क़ीमत चुकाने को तैयार हूं, किन्तु दूसरे लोग ऐसा नहीं सोचते। मुझे उसका पत्र मिला है। वह यहां, पीटर्सबर्ग में है।"

पत्नी के बारे में याद दिलाये जाने पर कारेनिन सिहर उठा, मगर उसी वक़्त उसके चेहरे पर वह मृतप्राय जड़ता आ गयी, जो इस मामले में पूर्ण विवशता को व्यक्त करती थी।

"मुझे ऐसी ही आशा थी," कारेनिन ने कहा।

काउंटेस लीदिया इवानोव्ना ने आह्लादपूर्ण दृष्टि से उसकी ओर देखा और उसकी आंखों में कारेनिन की आत्मा की महानता के प्रति श्रद्धा के द्योतक आंसू छलछला आये।

कारेनिन जब काउंटेस लीदिया इवानोव्ना के छोटे-से आरामदेह कमरे में पहुंचा, जिसमें प्राचीन ढंग की चीनी मिट्टी की बढ़िया चीज़ें रखी थीं और दीवारों पर छविचित्र लटके हुए थे, गृह-स्वामिनी अभी वहां नहीं थी। वह कपड़े बदल रही थी।

मेज़पोश से ढकी हुई गोल मेज़ पर बीच में चीनी प्याले-प्लेटें और स्पिरिट से गर्म होनेवाली चांदी की केतली रखी थी। कारेनिन ने परिचित छविचित्रों को खोयी-खोयी नज़र से देखा और मेज़ के पास बैठकर वहां पड़ी हुई इंजील खोल ली। काउंटेस के रेशमी फ़्राक की सरसराहट ने उस ओर उसका ध्यान आकृष्ट किया।

"तो अब हम इतमीनान से बैठेंगे," काउंटेस लीदिया इवानोव्ना ने उत्तेजनापूर्ण मुस्कान के साथ जल्दी से मेज़ और सोफ़े के बीच से गुज़रते हुए कहा, "और चाय पीते हुए बातचीत कर लेंगे।"

ज़मीन तैयार करने के कुछ शब्दों के बाद काउंटेस लीदिया इवानोव्ना ने हांफते और उत्तेजना से लाल होते हुए आन्ना से मिला पत्र कारेनिन के हाथ में दे दिया।

पत्र पढ़कर वह देर तक ख़ामोश रहा।

"मेरे ख़्याल में मुझे उसे इन्कार करने का हक़ नहीं है," उसने नज़र ऊपर उठाकर कुछ घबराते हुए कहा।

"मेरे दोस्त! आपको किसी में कोई बुराई दिखाई नहीं देती!"

"इसके उलट, मुझे हर चीज में बुराई दिखती है। किन्तु ऐसा करना क्या न्यायपूर्ण होगा?"

उसके चेहरे पर दुविधा और उस मामले में सलाह, समर्थन और निर्देशन पाने का भाव झलक रहा था, जो उसकी समझ में नहीं आ रहा था।

"हां, हर चीज़ की कोई हद होती है," काउंटेस लीदिया इवानोव्ना कह उठी। "मैं दुराचार को समझ सकती हूं," उसने पूरी सचाई से यह नहीं कहा था, क्योंकि कभी वह चीज़ नहीं समझ सकती थी, जो नारी को दुराचार की ओर ले जाती है, "किन्तु क्रूरता को नहीं समझ सकती और वह भी किसके प्रति? आपके प्रति! कैसे

वह उस शहर में आकर रह सकती है, जहां आप हैं? जीते जाओ और सीखते जाओ। और मैं आपकी ऊंचाई तथा उसकी नीचता को जानना सीख रही हूं।"

"किन्तु पत्थर कौन फेंकेगा?"* कारेनिन ने अपनी भूमिका से स्पष्टतः प्रसन्न होते हुए कहा। "मैंने उसे सब कुछ क्षमा कर दिया है और इसलिये उसे उस चीज़ से वंचित नहीं कर सकता, जो उसके लिये उसके प्यार – बेटे के प्रति प्यार की मांग है..."

"किन्तु क्या इसे प्यार कहा जा सकता है, मेरे दोस्त? क्या यह निष्कपट है? मान लिया कि आपने क्षमा कर दिया, आप क्षमा करते हैं... मगर क्या हमें उस फ़रिश्ते की आत्मा को परेशान करने का अधिकार है? वह उसे मर चुकी मानता है। वह उसके लिये प्रार्थना करता है, भगवान से उसके पाप क्षमा कर देने का अनुरोध करता है... यही ज़्यादा अच्छा है। लेकिन उससे मुलाक़ात होने पर वह क्या सोचेगा?"

"मैंने इस चीज़ पर ग़ौर नहीं किया," कारेनिन ने सम्भवतः सहमत होते हुए कहा।

काउंटेस लीदिया इवानोव्ना ने हाथों से मुंह ढांप लिया और ख़ामोश हो गयी। वह प्रार्थना कर रही थी।

"अगर आप मेरी सलाह लेना चाहते हैं," उसने प्रार्थना करने के बाद चेहरे पर से हाथ हटाकर कहा, "तो मैं आपको ऐसा करने की सलाह नहीं दूंगी। क्या मैं यह नहीं देख रही हूं कि आप कितनी यातना सह रहे हैं, कैसे इससे आपके घाव फिर हरे हो गये हैं? किन्तु मान लीजिये कि आप सदा की भांति अपनी कोई चिन्ता नहीं करते। इसका क्या नतीजा होगा? यही न कि आपको नयी यातनायें सहनी होंगी, बच्चे को व्यथित होना पड़ेगा? अगर उसमें कुछ भी मानवीय बचा है, तो ख़ुद उसे ही ऐसी इच्छा नहीं व्यक्त करनी चाहिये। नहीं, मैं किसी भी तरह की शंका के बिना आपको ऐसा करने की

---

* इंजील से। अभिप्राय: क्या कोई ऐसा व्यक्ति है, जिसने पाप न किया हो?

सलाह नहीं दूंगी और अगर आपकी अनुमति होगी, तो उसे पत्र लिख दूंगी।"

कारेनिन राज़ी हो गया और काउंटेस लीदिया इवानोव्ना ने फ़्रांसीसी भाषा में यह पत्र लिख भेजा।

"प्रिय श्रीमती जी,

"आपके बेटे को आपकी याद दिलाने से वह आपके बारे में ऐसे प्रश्न पूछ सकता है, जिनके उत्तर बच्चे के हृदय में उस बात के सम्बन्ध में, जो उसके लिये पावन होनी चाहिये, भर्त्सना के भाव पैदा किये बिना नहीं दिये जा सकते। इसलिये अनुरोध करती हूं कि आप अपने पति के इन्कार को ईसाई धर्म की श्रेयभावना के अनुरूप ही ग्रहण करें। सर्वशक्तिमान से आप पर दया करने की प्रार्थना करती हूं।

काउंटेस लीदिया।"

इस पत्र ने वह गुप्त लक्ष्य प्राप्त कर लिया, जो काउंटेस लीदिया इवानोव्ना स्वयं अपने से भी छिपा रही थी। इसने आन्ना के दिल को गहरी ठेस लगायी।

दूसरी ओर, लीदिया इवानोव्ना के यहां से लौटकर कारेनिन हर दिन के काम-काजों में अपना मन नहीं लगा सका और उसे आस्थावान तथा मुक्ति-मार्ग से परिचित उस व्यक्ति का चैन नहीं मिल सका, जो वह पहले अनुभव करता था।

पत्नी के याद दिलाये जाने से, जो उसके सम्मुख इतनी दोषी थी और जिसके सामने, जैसा कि काउंटेस लीदिया इवानोव्ना ने उससे सही कहा था, वह देवता जैसा था, उसे परेशानी नहीं होनी चाहिये। किन्तु वह चैन अनुभव नहीं कर रहा था। वह जो किताब पढ़ रहा था, उसे समझ नहीं पा रहा था, आन्ना के साथ अपने सम्बन्धों की यातनापूर्ण स्मृतियों, उन ग़लतियों को नहीं भुला सकता था, जो, जैसा कि उसे अब प्रतीत होता था, उसने उसके मामले में की थीं। घुड़दौड़ों से लौटते समय आन्ना द्वारा अपनी बेवफ़ाई को स्वीकार करने पर उसने जो रवैया अपनाया था (विशेषकर यह कि उसने उससे बाहरी दिखावे की मांग की और व्रोन्स्की को द्वन्द्व-युद्ध के लिये नहीं ललकारा),

इसकी याद पश्चाताप की तरह उसे यातना देने लगी। ऐसे ही उस पत्र की स्मृति उसे व्यथित करने लगी, जो उसने उसे लिखा था। विशेष रूप से उसकी क्षमा, जिसकी किसी को ज़रूरत नहीं थी, और पराये व्यक्ति की बच्ची के लिये उसकी चिन्ता उसके हृदय को लज्जा और पश्चाताप की आग बनकर झुलस रही थीं।

इसी प्रकार उसके साथ अपने बीते जीवन पर नज़र डालने और उन अटपटे शब्दों को याद करने से भी, जिनका उपयोग करते हुए उसने लम्बी दुविधा के बाद उसके सामने विवाह का प्रस्ताव किया था, उसे लज्जा और पश्चाताप की अनुभूति हो रही थी।

"आख़िर मेरा क्या दोष है?" उसने अपने आपसे कहा। यह प्रश्न उसके सामने हमेशा एक अन्य अर्थात यह प्रश्न खड़ा कर देता था कि क्या दूसरे लोग, ये व्रोन्स्की और ओब्लोन्स्की ... ये मोटी-मोटी पिण्डलियों वाले कंचुकी किसी भिन्न ढंग से अनुभव करते हैं, भिन्न ढंग से प्यार और दूसरे तरीक़े से शादी करते हैं? और उसकी आंखों के सामने ताज़गी से ओत-प्रोत, शक्तिशाली और कभी संशय में न पड़नेवाले अनेक लोग उभरे, जो अनजाने ही हमेशा और हर जगह उसका जिज्ञासापूर्ण ध्यान आकृष्ट करते थे। उसने इन विचारों को अपने दिमाग़ से दूर भगाया, अपने को यह विश्वास दिलाने का यत्न किया कि वह यहां के अस्थायी जीवन के लिये नहीं, बल्कि शाश्वत जीवन के लिये जी रहा है, कि उसकी आत्मा में शान्ति और प्यार है। किन्तु यही चेतना कि इस अस्थायी और तुच्छ जीवन में, जैसा कि उसे लगता था, उसने कुछ तुच्छ भूलें की हैं, उसे इस तरह व्यथित कर रही थी मानो उस शाश्वत मुक्ति का कोई अस्तित्व ही नहीं था, जिसमें वह विश्वास करता था। किन्तु आत्म-चेतना का यह प्रलोभन कुछ ही देर तक बना रहा और शीघ्र ही कारेनिन के हृदय में वह शान्ति और ऊंचाई की स्थिति लौट आई, जिसकी बदौलत वह उस चीज़ को भूल सकता था, जिसे याद नहीं करना चाहता था।

(२६)

"तो बताओ कपितोनिच," अपने जन्म-दिन की पूर्ववेला में सैर से लौटने पर लाल हुए गालों वाले और ख़ुश सेर्योझा ने लम्बे, बूढ़े

दरबान को, जो इस छोटे व्यक्ति पर झुका हुआ मुस्करा रहा था, अपना ओवरकोट देते हुए पूछा, "तो क्या आज पट्टी बंधा हुआ कर्मचारी आया था? पापा उससे मिले या नहीं?"

"मिले। जैसे ही सेक्रेटरी बाहर निकले, मैंने उसके आने की ख़बर दे दी," दरबान ने खुशमिज़ाजी से आंख मारते हुए कहा। "लाइये, मैं उतार लेता हूं।"

"सेर्योझा!" स्लाव शिक्षक ने भीतर ले जानेवाले कमरों के दरवाज़े पर रुकते हुए कहा, "ख़ुद ही उतारिये।"

किन्तु सेर्योझा ने शिक्षक की धीमी-सी आवाज़ सुन लेने के बावजूद उसकी तरफ़ कोई ध्यान नहीं दिया। वह दरबान के पट्टे को थामे खड़ा था और उसके चेहरे को ताक रहा था।

"तो क्या पापा ने उसके लिये वह कर दिया, जो ज़रूरी था?"

दरबान ने सिर झुकाकर हामी भरी।

पट्टी बंधा हुआ कर्मचारी, जो किसी चीज़ की प्रार्थना करने के लिये सात बार कारेनिन के पास आ चुका था, सेर्योझा और दरबान के लिये दिलचस्पी का कारण बना हुआ था। सेर्योझा ने उसे एक बार ड्योढ़ी में देखा और यह कहते हुए कि वह और उसके बच्चे मर जायेंगे, कारेनिन से मुलाक़ात करवा देने के लिये दरबान की मिन्नत करते सुना था।

उसके बाद इसी कर्मचारी से ड्योढ़ी में दूसरी बार मुलाक़ात हो जाने पर सेर्योझा उसमें दिलचस्पी लेने लगा।

"तो वह बहुत ख़ुश हुआ?" सेर्योझा ने पूछा।

"ख़ुश कैसे नहीं होगा! ख़ुशी से लगभग नाचता हुआ यहां से गया।"

"कोई चीज़ आई है क्या?" कुछ देर चुप रहने के बाद सेर्योझा ने पूछा।

"हां, छोटे साहब," दरबान ने सिर झुकाते हुए फुसफुसाकर कहा, "काउंटेस के यहां से।"

सेर्योझा फ़ौरन समझ गया कि दरबान जिस चीज़ की बात कर रहा है, वह काउंटेस लीदिया इवानोव्ना का उसके जन्म-दिन के लिये भेजा हुआ उपहार है।

"सच? कहां है?"

"कोरनेई आपके पापा के पास ले गया है। कोई अच्छी चीज़ होनी चाहिये।"

"कितनी बड़ी है वह चीज़? इतनी बड़ी होगी?"

"कुछ छोटी, मगर बढ़िया है।"

"कोई किताब?"

"नहीं, कोई दूसरी चीज़ है। जाइये, वसीली लुकीच बुला रहे हैं," शिक्षक के पैरों की निकट आती आहट को सुनकर उसने सेर्योझा का दस्ताने से आधा बाहर निकला हुआ हाथ सावधानी से अपने पट्टे से हटाते, स्नेहपूर्वक आंख मारते और सिर से शिक्षक की तरफ़ इशारा करते हुए कहा।

"अभी आ रहा हूं, वसीली लुकीच!" सेर्योझा ने उसी सुखद और प्यारी मुस्कान के साथ जवाब दिया, जो हमेशा कर्त्तव्यपरायण शिक्षक को जीत लेती थी।

सेर्योझा इतना अधिक ख़ुश, इतना अधिक उल्लास में था कि अपने दोस्त यानी दरबान को एक पारिवारिक शुभ समाचार बताये बिना नहीं रह सकता था, जो उसे ग्रीष्म-उद्यान में सैर करते हुए काउंटेस लीदिया इवानोव्ना की भतीजी से मिला था। उसे यह ख़ुशख़बरी ख़ास तौर पर इसलिये महत्त्वपूर्ण प्रतीत हो रही थी, कि कर्मचारी की ख़ुशी, अपने लिये खिलौने आने की ख़ुशी के साथ-साथ ही उसे मिली थी। सेर्योझा को ऐसा लग रहा था कि आज ऐसा दिन है, जब सभी को ख़ुश और रंग में होना चाहिये।

"तुम्हें मालूम है कि पापा को अलेक्सान्द्र नेव्स्की पदक मिला है?"

"मालूम कैसे नहीं होगा! लोग बधाई देने आ चुके हैं।"

"तो पापा ख़ुश हैं?"

"ज़ार की मेहरबानी पर ख़ुश हुए बिना कैसे रह सकते हैं? मतलब यह कि इसके लायक़ हैं," दरबान ने कड़ाई और गम्भीरता से कहा।

दरबान के चेहरे को ग़ौर से देखते हुए, जिसकी हर छोटी से छोटी तफ़सील, ख़ास तौर पर पके गलमुच्छों के बीच लटकती ठोड़ी से वह अच्छी तरह परिचित हो चुका था, जिसे सेर्योझा के सिवा कोई

नहीं देखता था, क्योंकि वह हमेशा उसे नीचे से ऊपर की तरफ़ देखता था, वह सोच में डूब गया।

"तुम्हारी बेटी को यहां आये बहुत दिन हो गये क्या?"

दरबान की बेटी बैले-नर्तकी थी।

"काम के दिनों में भला कोई आता है? उन्हें भी शिक्षा पानी होती है। छोटे साहब, आपको भी जाकर पढ़ना चाहिये।"

कमरे में आकर पढ़ाई करने के बजाय सेर्योझा ने शिक्षक को अपना यह अनुमान बताना शुरू किया कि उसके लिये जो चीज़ लाई गयी है, वह सम्भवतः मोटर है। "क्या ख़्याल है आपका?" उसने पूछा।

किन्तु वसीली लुकीच केवल यही सोच रहा था कि अध्यापक के आने से पहले, जो दो बजे आनेवाला था, व्याकरण का पाठ तैयार कर लेना चाहिये।

"वसीली लुकीच, आप मुझे यह बतायें," सेर्योझा ने मेज़ पर बैठे तथा हाथ में किताब लिये हुए अचानक पूछा, "अलेक्सान्द्र नेव्स्की पदक से बड़ा कौन-सा पदक होता है? आपको मालूम है न कि पापा को अलेक्सान्द्र नेव्स्की पदक मिला है?"

वसीली लुकीच ने जवाब दिया कि व्लादीमिर पदक उससे बड़ा होता है।

"और उससे बड़ा?"

"सबसे बड़ा सेंट एंड्रयूज़ पदक होता है।"

"और एंड्रयूज़ से बड़ा?"

"मुझे मालूम नहीं।"

"अरे, आपको भी मालूम नहीं?" और सेर्योझा कोहनियां टिकाकर विचारों में खो गया।

उसके विचार बहुत ही जटिल और विविध थे। वह कल्पना कर रहा था कि कैसे उसके पापा को अचानक व्लादीमिर और एंड्रयूज़ पदक मिल गये हैं और इसके परिणामस्वरूप वह आज पाठ के समय कहीं अधिक दयालु होंगे और कैसे वह ख़ुद जब बड़ा होगा, तो सभी पदक पायेगा और वह भी, जिसकी एंड्रयूज़ के आगे कल्पना की जायेगी। वे लोग जैसे ही कोई ऐसा पदक सोचेंगे, वह उसी समय उसके योग्य

मान लिया जायेगा। वे उससे आगे कुछ सोचेंगे और वह फ़ौरन उसके लायक़ हो जायेगा।

इसी तरह के ख़्यालों में वक़्त बीत गया और जब अध्यापक आया तो समय, स्थान तथा प्रकारवाची क्रियाविशेषण का पाठ तैयार नहीं हुआ था और अध्यापक न केवल असन्तुष्ट, बल्कि दुखी भी हुआ। अध्यापक के इस दुख ने सेर्योझा के मन को छू लिया। वह पाठ तैयार न करने के लिये अपने को दोषी नहीं अनुभव करता था। लेकिन पूरी कोशिश करने पर भी वह ऐसा नहीं कर पाया था। जब तक अध्यापक उसे समझाता था, उसे ऐसा यक़ीन-सा होता था कि सब कुछ समझ रहा है, मगर जैसे ही अकेला रह जाता, उसे किसी तरह भी पाठ याद नहीं आता था और वह यह समझ नहीं पाता था कि "सहसा" जैसा छोटा-सा और समझ में आनेवाला शब्द प्रकारवाची क्रियाविशेषण है। फिर भी उसे इस बात के लिये अफ़सोस हो रहा था कि उसने अध्यापक का दिल दुखाया है और उसे सान्त्वना देनी चाही।

इसके लिये उसने वह क्षण चुना, जब अध्यापक चुपचाप पुस्तक देख रहा था।

"मिख़ाईल इवानोविच, आपका जन्मदिन कब होता है?" उसने अचानक पूछा।

"आपके लिये अपने काम के बारे में सोचना ज़्यादा अच्छा होगा और समझदार आदमी के लिये जन्मदिन का कोई महत्त्व नहीं होता। वह दूसरे दिनों जैसा ही होता है, जब काम करना चाहिये।"

सेर्योझा ने बहुत ध्यान से अध्यापक, उसकी विरली दाढ़ी और चश्मे की तरफ़ देखा, जो नाक पर छोड़े गये निशान से नीचे खिसक गया था और विचारों में इस तरह डूब गया कि अध्यापक उसे जो कुछ समझा रहा था, कुछ भी नहीं सुन रहा था। वह समझ रहा था कि अध्यापक जो कुछ कह रहा है, वैसा ही सोचता नहीं है। उसके कहने के अन्दाज़ से उसने यह अनुभव किया। "लेकिन इन सबने एक ही ढंग से और बेहद ऊबानेवाली तथा अनावश्यक बातें करने का षड्यन्त्र क्यों रच रखा है? वह मुझे अपने से दूर क्यों कर रहा है, किसलिये वह

मुझे नहीं चाहता?" उसने उदासी से अपने आपसे पूछा और इसका उसे कोई जवाब नहीं मिला।

(२७)

अध्यापक के बाद सेर्योझा को पापा के पास बैठकर पढ़ना था। पापा के आने तक सेर्योझा मेज़ के क़रीब बैठकर छोटे-से चाकू से खेलने और सोचने लगा। सैर के समय अपनी मां को ढूंढ़ना सेर्योझा के प्यारे कामों में एक था। उसे सामान्य रूप से मौत पर, और विशेषतः मां की मौत पर विश्वास नहीं था, यद्यपि लीदिया इवानोव्ना और पापा इसकी पुष्टि कर चुके थे। इसलिये उससे यह कहे जाने के बाद कि वह मर चुकी, वह सैर के वक़्त उसे खोजता रहता था। गदराये बदन की, सुन्दर और काले बालों वाली हर नारी उसे अपनी मां लगती थी। ऐसी किसी भी नारी के सामने आने पर उसके हृदय में ऐसे प्रेम उमड़ता कि उसका गला रुंध जाता और आंखें डबडबा आ आतीं। उसे लगता कि वह अभी-अभी उसके पास आयेगी और अपने चेहरे पर से जाली का परदा उठा देगी। तब उसका पूरा चेहरा दिखाई देगा, वह मुस्करायेगी, उसे बांहों में भर लेगी, वह उसकी सुगंध को अनुभव करेगा, उसे उसके हाथों की कोमलता की अनुभूति होगी और वह हर्ष-विभोर होकर रो पड़ेगा। ठीक वैसे ही, जैसे एक बार शाम को वह उसके पैरों पर लेट गया था, वह उसे गुदगुदाती रही थी, वह ज़ोर से ठहाके लगाता और उसके अंगूठियां पहने गोरे हाथों को काटता रहा था। बाद में जब उसे संयोगवश अपनी धाय से यह पता चला कि उसकी मां मरी नहीं है और पापा तथा लीदिया इवानोव्ना ने उसे यह स्पष्ट किया कि वह उसके लिये मर गयी है, क्योंकि बुरी है (जिसे वह किसी हालत में भी मानने को तैयार नहीं था, क्योंकि उसे प्यार करता था), वह इसी भांति उसे ढूंढ़ता और उसकी राह देखता रहा। आज ग्रीष्म-उपवन में जाली के बैंगनी पर्दे से मुंह ढके एक महिला उसे दिखाई दी थी और यह आशा करते हुए कि वह मां ही है, सेर्योझा उस समय उसपर नज़र टिकाये रहा था, जब वह पगडंडी पर बढ़ती हुई उनकी तरफ़ आ रही थी। यह महिला उसके क़रीब नहीं आई

और कहीं ग़ायब हो गयी। किसी और समय की तुलना में उसके प्रति कहीं अधिक स्नेह-वेग अनुभव करते हुए वह विचारों में खो गया और पापा का इन्तज़ार करते, अपनी चमकती आंखों को सामने टिकाये और उसके बारे में सोचते हुए उसने मेज़ का सारा कोना चाक़ू से खुरच डाला।

"पापा आ रहे हैं!" वसीली लुकीच ने उसकी विचार-शृंखला को भंग किया।

सेर्योझा उछलकर खड़ा हुआ, पापा के पास गया और उसका हाथ चूमने के बाद उसने उस ख़ुशी का चिह्न ढूंढ़ने के लिये, जो अलेक्सान्द्र नेव्स्की पदक मिलने से उसे हुई होगी, बड़े ध्यान से उसके चेहरे पर नज़र डाली।

"तुमने अच्छी तरह से सैर की?" कारेनिन ने अपनी आरामकुर्सी पर बैठते और पुराने नियमों की बाइबल की पुस्तक को अपने पास खींचते तथा खोलते हुए पूछा। कारेनिन ने सेर्योझा से बेशक यह कहा था कि हर ईसाई को धर्म-इतिहास का बहुत अच्छी तरह से ज्ञान होना चाहिये, फिर भी वह स्वयं बहुधा पुस्तक की सहायता से ही पुराने नियमों से पार पाता था और सेर्योझा की नज़र से यह बात बच नहीं पायी थी।

"हां, बहुत मज़ा रहा, पापा," सेर्योझा ने कुर्सी पर टेढ़ा बैठते हुए और उसे झुलाते हुए, जिसकी उसे मनाही थी, जवाब दिया। "मेरी नाद्या से भेंट हुई" (नाद्या लीदिया इवानोव्ना की भतीजी थी और उसी के यहां उसका पालन-पोषण हो रहा था)। "उसने मुझे बताया कि आपको नया पदक मिला है। आप ख़ुश हैं, पापा?"

"पहली बात तो यह है कि कुर्सी को नहीं झुलाओ," कारेनिन ने कहा। "और दूसरी बात यह है कि इनाम नहीं, बल्कि काम अधिक मूल्यवान होता है। मैं चाहता हूं कि तुम इस बात को समझो। अगर तुम इसलिये मेहनत करोगे, इसलिये पढ़ोगे कि तुम्हें उसका इनाम मिले, तो तुम्हारा श्रम तुम्हें बोझिल लगेगा। किन्तु जब तुम श्रम करोगे," कारेनिन ने यह याद करते हुए कहा कि उस सुबह को उसने कर्त्तव्य-चेतना से एक सौ अठारह काग़ज़-पत्रों पर हस्ताक्षर करने का नीरस काम पूरा किया था, "श्रम को प्यार करने से तुम्हें उसी में उसका पुरस्कार मिल जायेगा।"

प्यार और ख़ुशी से चमकती हुई सेर्योझा की आंखों की लौ बुझ गयी और पापा की नज़र के सामने आंखें झुक गयीं। सेर्योझा को हमेशा ऐसे ही सम्बोधित करने का पापा का यह वही अन्दाज़ था, जिससे सेर्योझा बहुत पहले से ही परिचित था और वह ख़ुद को उसके मुताबिक़ ढालने का आदी हो चुका था। पापा हमेशा ऐसे बात करते थे मानो वे किसी काल्पनिक, किसी ऐसे लड़के से बात कर रहे हों, जो किताबों में होते हैं और सेर्योझा के साथ जिनकी बिल्कुल कोई समानता नहीं होती। सेर्योझा अपने पापा के साथ हमेशा पुस्तक का यही लड़का होने का ढोंग करता था।

"मुझे आशा है कि तुम यह बात समझते हो?" पापा ने पूछा।

"हां, पापा," उस काल्पनिक लड़के का ढोंग करते हुए सेर्योझा ने उत्तर दिया।

पाठ इंजील की कुछ कविताओं को मुंहज़बानी याद करने और पुराने नियमों के मुख्य सूत्रों को दोहराने से सम्बन्धित था। इंजील की कवितायें सेर्योझा को ख़ासी अच्छी तरह से याद थीं, किन्तु उन्हें सुनाते समय उसका ध्यान पापा के माथे की उस हड्डी में खो गया, जो कनपटी की ओर इतनी अधिक झुक गयी थी कि वह गड़बड़ा गया और एक जैसे शब्द पर उसने एक कविता का अन्त दूसरी कविता के आरम्भ के साथ जोड़ दिया। कारेनिन के लिये यह बिल्कुल स्पष्ट था कि सेर्योझा जो कुछ कह रहा था, उसे समझता नहीं था और इस कारण उसे झल्लाहट हुई।

कारेनिन के माथे पर बल पड़ गये और वह वही स्पष्ट करने लगा, जो सेर्योझा अनेक बार सुन चुका था और कभी याद नहीं रख पाया था, क्योंकि बहुत ही साफ़ तौर पर इसे समझता था। यह तो "सहसा" के प्रकारवाची क्रियाविशेषण होने जैसी बात थी। सेर्योझा सहमी-सहमी नज़र से पापा को देख और केवल यही सोच रहा था – पापा उसके द्वारा सुनाई गयी कविता को दोहराने के लिये, जैसा कि कभी-कभी होता था, उसे विवश करेंगे या नहीं। इस विचार से सेर्योझा इतना भयभीत था कि अब कुछ भी उसके पल्ले नहीं पड़ रहा था। किन्तु पापा ने दोहराने के लिये विवश नहीं किया और पुराने नियमों के पाठ पर आ गये। सेर्योझा ने स्वयं घटनायें तो अच्छी तरह सुनायीं,

किन्तु जब इस बारे में प्रश्नों के उत्तर देने पड़े कि कुछ घटनाओं में क्या सार निहित है, तो इस चीज़ के बावजूद कि इसी पाठ के लिये उसे दण्ड दिया जा चुका था, वह कुछ भी जवाब न दे पाया। जहां उससे जवाब देते नहीं बना और वह गड़बड़ाने लगा, मेज़ को खुरचने और कुर्सी को झुलाने लगा, वह जल-प्लावन के पहले के पैग़म्बरों का प्रसंग था। इनमें से हनोक के अलावा, जिसे ज़िन्दा ही स्वर्ग ले जाया गया था, अन्य किसी के बारे में उसे कुछ भी मालूम नहीं था। पहले तो उसे सभी नाम याद थे, किन्तु इस समय वह उन्हें बिल्कुल भूल गया, विशेषतः इसलिये कि सारे पुराने नियमों में हनोक उसका प्रिय पात्र था और उसके जीवित स्वर्ग ले जाये जाने की घटना को लेकर उसके दिमाग़ में विचारों की एक लम्बी शृंखला-सी बन गयी, जिसमें वह खो गया और उसकी नज़रें पापा की घड़ी की ज़ंजीर और वास्कट के अधखुले बटन पर जमकर रह गयीं।

मृत्यु के अस्तित्व पर, जिसकी बहुधा सेर्योझा से चर्चा की जाती थी, वह बिल्कुल विश्वास नहीं करता था। उसे यह यक़ीन नहीं होता था कि वे लोग, जिन्हें वह प्यार करता है, मर सकते हैं और ख़ास तौर पर यह कि वह ख़ुद मर जायेगा। उसके लिये यह बिल्कुल असम्भव था और वह इसे समझने में असमर्थ था। किन्तु उससे कहा जाता था कि सभी मर जायेंगे। उसने उन लोगों से भी पूछा, जिन पर विश्वास करता था और उन्होंने भी इसकी पुष्टि की। आया भी ऐसा कहती थी, यद्यपि मन मारकर। किन्तु हनोक नहीं मरा। इसका मतलब यह हुआ कि सभी नहीं मरते। "भला क्यों हर कोई भगवान की नज़र में ऐसा नहीं बन सकता और जीवित स्वर्ग में ले जाया जा सकता?" सेर्योझा सोच रहा था। बुरे लोग, यानी वे, जिन्हें सेर्योझा प्यार नहीं करता था, मर सकते थे, किन्तु सभी अच्छे लोग हनोक जैसे हो सकते हैं।

"तो कौन थे पैग़म्बर?"

"हनोक, एनोश।"

"यह तो तुम कह ही चुके हो। बुरी बात है, सेर्योझा, बहुत बुरी बात है। अगर तुम वह जानने की कोशिश नहीं करोगे, जो किसी ईसाई के लिये जानना सबसे अधिक ज़रूरी है," पापा ने उठते हुए

कहा, "तो किस चीज़ में तुम्हारी दिलचस्पी हो सकती है? मैं तुमसे नाखुश हूं और प्योत्र इग्नात्येविच" (मुख्य अध्यापक) "भी तुमसे नाखुश हैं... मुझे तुम्हें सज़ा देनी होगी।"

पापा और अध्यापक, दोनों ही सेर्योझा से अप्रसन्न थे, और वास्तव में वह पढ़ाई में ढीला था। किन्तु ऐसा बिल्कुल नहीं कहा जा सकता था कि उसमें योग्यता नहीं थी। इसके उलट, वह उन लड़कों की तुलना में कहीं अधिक योग्य था, जिन्हें अध्यापक उदाहरण के रूप में सेर्योझा के सामने प्रस्तुत करता था। पापा के मतानुसार उसे जो कुछ सिखाया जाता था, वह उसे सीखने का इच्छुक नहीं था। किन्तु वास्तव में वह उसे सीख नहीं सकता था। वह इसलिये कि उसका दिल, उन चीज़ों के बजाय, जो पापा और अध्यापक उसपर लादते थे, कुछ दूसरी ही चीज़ों की मांग करता था। उसके दिल की ये मांगें बिल्कुल उलट थीं और इसलिये वह अपने शिक्षकों के विरुद्ध संघर्ष करता था।

उसकी उम्र नौ बरस थी, वह बालक था, किन्तु अपनी आत्मा को पहचानता था। वह उसे प्यारी थी, वह उसकी वैसे ही रक्षा करता था, जैसे पलक आंख की, और प्यार की कुंजी के बिना किसी को भी उसमें प्रवेश नहीं करने देता था। शिक्षा देनेवाले यह शिकायत करते थे कि वह पढ़ना नहीं चाहता, किन्तु उसकी आत्मा ज्ञान-पिपासा से ओत-प्रोत थी। और यह ज्ञान वह प्राप्त करता था दरबान कपितोनिच से, आया, नाद्या और वसीली लुकीच से, किन्तु अध्यापकों से नहीं। पापा और अध्यापक जिस जल-धारा को अपनी दिशा में लाना चाहते थे, वह कभी की दूसरी दिशा में मुड़ चुकी थी और वहां अपना प्रभाव दिखा रही थी।

पापा ने उसे यह सज़ा दी कि वह लीदिया इवानोव्ना की भतीजी नाद्या के पास न जाये। मगर सेर्योझा के लिये यह सज़ा खुशक़िस्मती साबित हुई। वसीली लुकीच अच्छे मूड में था और उसने उसे पवन-चक्की बनाने का ढंग सिखाया। सारी शाम यह काम करते और ये सपने देखते बीत गयी कि ऐसी पवन-चक्की कैसे बनायी जाये, जिसके पंखों को हाथों से पकड़कर या जिसके साथ अपने को बांधकर उसपर चक्कर खाये जा सकें। सेर्योझा को सारी शाम मां का ध्यान नहीं

आया, किन्तु बिस्तर पर लेटते ही उसे उसकी याद आ गयी और उसने अपने शब्दों में यह प्रार्थना की कि अगले दिन, उसके जन्म-दिन पर, उसकी मां उससे छिपी न रहकर उसके पास आ जाये।

"वसीली लुकीच, जानते हैं कि मैंने किस बात के लिये एक ज़्यादा प्रार्थना की है?"

"कि आप अच्छी तरह से पढ़ाई करें?"

"नहीं।"

"खिलौनों के लिये?"

"नहीं। आप नहीं भांप सकेंगे। बहुत ही उद्भुत बात है, किन्तु अभी रहस्य है! जब वह सच हो जायेगी, तो आपको बता दूंगा। नहीं अनुमान लगा सके न?"

"नहीं, मैं अनुमान नहीं लगा पा रहा हूं। आप बता दीजिये," वसीली लुकीच ने मुस्कराकर कहा, जैसा कि उसके साथ बहुत कम होता था। "ख़ैर, सो जाइये, मैं मोमबत्ती बुझा देता हूं।"

"मुझे मोमबत्ती के बिना वह और भी अधिक अच्छी तरह दिखाई देता है, जो मैं देखता हूं और जिसके लिये मैंने प्रार्थना की है। लीजिये, मैंने तो अपना रहस्य लगभग बता दिया!" सेर्योझा ने ख़ुशमिज़ाजी से हंसते हुए कहा।

जब मोमबत्ती वहां से हटा दी गयी, तो सेर्योझा मानो अपनी मां की आवाज़ सुनने और उसकी उपस्थिति अनुभव करने लगा। वह मानो उसके ऊपर झुकी हुई थी और प्यारभरी दृष्टि से उसे सहला रही थी। किन्तु तभी कुछ देर तक पवन-चक्कियां और फिर चाक़ू दिखाई दिया, सब गड्ड-मड्ड हो गया और वह सो गया।

(२८)

व्रोन्स्की और आन्ना पीटर्सबर्ग आकर एक सबसे अच्छे होटल में ठहरे। व्रोन्स्की नीचेवाली मंज़िल पर अलग से और आन्ना बच्ची, धाय और नौकरानी के साथ ऊपर की मंज़िल पर चार कमरों वाले बड़े सेट में।

पीटर्सबर्ग पहुंचने के दिन ही व्रोन्स्की अपने भाई के यहां गया।

वहां काम-काज के सिलसिले में मास्को से आई हुई अपनी मां से उसकी भेंट हो गयी। मां और भाभी उसके साथ सामान्य ढंग से मिलीं, उन्होंने उससे विदेश-यात्रा के बारे में पूछ-ताछ और साझे परिचितों की चर्चा की, किन्तु आन्ना के साथ उसके सम्बन्ध की बात ज़बान पर नहीं लायीं। बड़े भाई ने अगले दिन होटल में आने पर ख़ुद उससे आन्ना के बारे में पूछा और अलेक्सेई ने साफ़ ही कह दिया कि कारेनिना के साथ अपने सम्बन्ध को वह विवाह सम्बन्ध मानता है, कि वह उसके तलाक़ की व्यवस्था करवा लेगा और तब उससे शादी कर लेगा तथा तब तक उसे किसी भी दूसरी पत्नी की तरह अपनी पत्नी ही समझता है और अनुरोध करता है कि मां तथा अपनी पत्नी से वह ऐसे ही कह दे।

"अगर ऊंचा समाज इसे स्वीकार नहीं करता, तो मुझे इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता," व्रोन्स्की ने कहा, "किन्तु यदि मेरे सगे-सम्बन्धी मेरे साथ अपने ख़ून के रिश्ते बनाये रखना चाहते हैं, तो उन्हें मेरी पत्नी के साथ भी वैसे ही सम्बन्ध निभाने होंगे।"

बड़ा भाई, जो हमेशा ही छोटे के विचारों का आदर करता था, यह बात अच्छी तरह से नहीं जानता था कि जब तक ऊंचा समाज इस मामले को तय न कर दे, उसके भाई की बात ठीक है या नहीं। किन्तु अपनी ओर से उसे इसमें कोई आपत्ति नहीं थी और वह अलेक्सेई के साथ आन्ना से मिलने गया।

पराये लोगों की उपस्थिति के समय की भांति व्रोन्स्की भाई के सामने भी आन्ना को "आप" कहता और घनिष्ठ परिचिता की भांति उससे बातचीत करता रहा, किन्तु यह स्वतः स्पष्ट था कि भाई उनके सम्बन्धों के बारे में जानता है और उन्होंने आन्ना के व्रोन्स्की की जागीर पर जाकर रहने के बारे में चर्चा की।

ऊंचे समाज के जीवन के बारे में अपने सारे अनुभव के बावजूद व्रोन्स्की, उस नयी स्थिति के परिणामस्वरूप, जिसमें वह अब था, अजीब ग़लतफ़हमी का शिकार बना हुआ था। ऐसा प्रतीत हो सकता था, उसे यह समझ जाना चाहिये था कि उसके और आन्ना के लिये ऊंचे समाज के दरवाज़े बन्द हैं। किन्तु अब उसके दिमाग़ में ये अस्पष्ट विचार पैदा हो गये कि ऐसा पहले होता था और अब, द्रुत प्रगति के युग में (वह अनजाने ही अब सभी तरह की प्रगति का समर्थक

बन गया था) समाज का दृष्टिकोण बदल गया है और यह कि उन्हें समाज में स्वीकारा जायेगा या नहीं, यह प्रश्न अभी तय नहीं हुआ है। "ज़ाहिर है," वह सोचता था, "कि राज-दरबार से सम्बन्धित कुलीन समाज आन्ना को स्वीकार नहीं करेगा, किन्तु घनिष्ठ लोग इस स्थिति को सही ढंग से समझ सकते हैं और उन्हें इसे ऐसे ही समझना चाहिये।"

कोई आदमी घण्टों तक पालथी मारे बैठा रह सकता है, अगर उसे यह मालूम हो कि इच्छा होने पर वह अपनी स्थिति को बदल सकता है। किन्तु यदि वह यह जानता हो कि उसे इसी तरह बैठे रहना होगा, तो उसकी टांगें सुन्न होने लग जाती हैं, उस जगह की ओर खिंचने तथा तनने लगती हैं, जहां वह उन्हें फैलाना चाहेगा। ऊंचे समाज के मामले में व्रोन्स्की ऐसा ही अनुभव कर रहा था। दिल की गहराई में वह बेशक यह जानता था कि ऊंचे समाज के द्वार उनके लिये बन्द हैं, वह यह आज़माकर देखना चाहता था कि यह समाज अब बदलता है या नहीं और उन्हें स्वीकारता है या नहीं। किन्तु बहुत जल्द ही उसने यह महसूस कर लिया कि ऊंचे समाज के दरवाज़े ख़ुद उसके लिये तो बेशक खुले थे, मगर आन्ना के लिये बन्द थे। बिल्ली-चूहे के खेल की भांति उसके लिये ऊपर उठे हुए हाथ आन्ना के सामने आते ही नीचे गिर जाते थे।

पीटर्सबर्ग के ऊंचे समाज की जिस पहली महिला से व्रोन्स्की की भेंट हुई, वह उसकी चचेरी बहन बेत्सी थी।

"आख़िर तो तुम दिखाई दिये!" उसने बहुत प्रसन्न होते हुए उसका स्वागत किया। "और आन्ना? कितनी ख़ुश हूं मैं! कहां ठहरे हो तुम लोग? मैं कल्पना कर सकती हूं कि तुम्हारी बढ़िया यात्रा के बाद तुम्हें हमारा पीटर्सबर्ग कैसा भयानक लग रहा होगा। रोम में तुम दोनों के मधु-मास की मैं कल्पना कर सकती हूं। हां, तलाक़ का क्या हुआ? यह सब तुमने कर डाला न?"

व्रोन्स्की ने इस बात की तरफ़ ध्यान दिया कि बेत्सी को जब यह मालूम हुआ कि तलाक़ अभी होना बाक़ी है, तो उसका उत्साह कुछ ठण्डा पड़ गया।

"मैं जानती हूं कि मुझ पर कीचड़ उछाला जायेगा," बेत्सी ने

कहा, "मगर मैं आन्ना से मिलने आऊंगी, ज़रूर आऊंगी। बहुत दिन नहीं रुकेंगे यहां?"

वह सचमुच उसी दिन आन्ना के पास आई, मगर उसका अन्दाज़ पहले वाला नहीं था। वह अपने साहस पर स्पष्टतः गर्व कर रही थी और चाहती थी कि आन्ना उसकी मैत्री-निष्ठा का ऊंचा मूल्यांकन करे। वह ऊंचे समाज की ख़बरों की चर्चा करते हुए दस मिनट से ज़्यादा नहीं रुकी और जाते-जाते बोली –

"तुमने मुझे नहीं बताया कि तलाक़ कब होगा। चलो, मैंने तो कुछ परवाह नहीं की, लेकिन हमारे कुलीन लोग तुम्हें तब तक सीधा मुंह नहीं देंगे, जब तक तुम लोग शादी नहीं कर लोगे। और अब यह चीज़ बड़ी मामूली है। Ça se fait.* तो आप लोग शुक्र के दिन जा रहे हैं? दुख की बात है कि हमारी फिर मुलाक़ात नहीं हो सकेगी।"

बेत्सी के अन्दाज़ से व्रोन्स्की को यह समझ जाना चाहिये था कि ऊंचे समाज से उसे क्या आशा करनी चाहिये। फिर भी उसने अपने परिवार में एक कोशिश की। अपनी मां से तो उसे कुछ उम्मीद नहीं थी। वह जानता था कि आन्ना के साथ अपने पहले परिचय के समय उस पर मुग्ध हो जानेवाली मां अब उससे इसलिये बेहद नाराज़ थी कि उसी ने उसके बेटे की उन्नति में बाधा डाली थी। किन्तु बड़े भाई की पत्नी, भाभी वार्या से उसे कहीं अधिक आशा थी। उसे लगता था कि वह किसी तरह का कीचड़ नहीं उछालेगी और अपनी सरलता तथा दृढ़ता से आन्ना के पास जायेगी और उसे अपने यहां बुलायेगी।

पीटर्सबर्ग आने के अगले दिन व्रोन्स्की उसके पास गया और उसे अकेली पाकर उसने बिल्कुल साफ़-साफ़ ही अपनी इच्छा प्रकट कर दी।

"तुम जानते ही हो," उसकी बात सुनने के बाद वार्या ने कहा, "कि मैं तुम्हें कितना अधिक प्यार करती हूं और तुम्हारे लिये सब कुछ करने को तैयार रहती हूं। किन्तु मैं चुप रही, क्योंकि जानती थी कि तुम्हारे और आन्ना आर्कादियेव्ना के लिये कुछ नहीं कर सकती," उसने "आन्ना आर्कादियेव्ना" पर विशेष ज़ोर देते हुए कहा। "कृपया यह नहीं सोचना कि मैं भर्त्सना करती हूं। कभी भी नहीं। शायद उसकी

---

* आम बात है। (फ़्रांसीसी)

जगह मैंने भी यही किया होता। मैं इस मामले के ब्योरे में नहीं जाती और जा भी नहीं सकती," सहमी-सहमी नज़र से व्रोन्स्की के उदास चेहरे को ग़ौर से देखते हुए उसने कहा। "लेकिन जो बात जैसी है, उसे उसी तरह कहना चाहिये। तुम चाहते हो कि मैं उसके पास जाऊं, उसे अपने यहां बुलाऊं और इस तरह उसे फिर से समाज की नज़रों में ऊंचा उठा दूं। मगर तुम इस बात को समझो कि मैं ऐसा नहीं कर सकती। मेरी बेटियां बड़ी हो रही हैं और मुझे पति की ख़ातिर समाज में अपना मुंह बनाये रखना है। मान लो कि मैं आन्ना आर्कादियेव्ना के पास जाती हूं। वह समझ जायेगी कि मैं उसे अपने यहां नहीं बुला सकती या फिर मुझे यह ऐसे करना होगा कि उन लोगों से उसकी मुलाक़ात न हो पाये, जो दूसरा दृष्टिकोण रखते हैं। इससे उसी को ठेस लगेगी। मैं उसे ऊपर उठाने में असमर्थ हूं..."

"लेकिन मैं ऐसा नहीं मानता कि वह उन सैकड़ों नारियों से अधिक नीचे गिर गयी है, जिनको आप लोग अपने यहां बुलाते हैं!" व्रोन्स्की ने और भी अधिक उदासी से उसकी बात काटी और यह समझते हुए चुपचाप उठ खड़ा हुआ कि भाभी का निर्णय नहीं बदलेगा।

"अलेक्सेई! तुम मुझसे नाराज़ नहीं होओ। कृपया इतना समझो कि मेरा कोई दोष नहीं है," वार्या ने सहमी-सी मुस्कान के साथ उसकी ओर देखकर कहा।

"मैं तुमसे नाराज़ नहीं हो रहा हूं," व्रोन्स्की ने उसी तरह उदासी से कहा। "किन्तु मुझे दोहरा दुख हो रहा है। मुझे इस बात का भी दुख है कि इससे हमारी दोस्ती टूट रही है। अगर वह टूट नहीं रही, तो कमज़ोर ज़रूर हो रही है। तुम तो समझती हो कि मेरे लिये कोई दूसरा रास्ता नहीं हो सकता।"

इतना कहकर वह वहां से चला गया।

व्रोन्स्की समझ गया कि और कोशिश करके देखना बेकार है और पीटर्सबर्ग में ये कुछ दिन ऐसे बिताने चाहिये, जैसे किसी पराये शहर में। उसे ऊंचे समाज के अपने पूर्वपरिचितों ने नहीं मिलना-जुलना चाहिये, ताकि कटुता और अपमान के घूंट न पीने पड़ें, जो उसके लिये इतने यातनाप्रद थे। पीटर्सबर्ग की स्थिति का एक प्रमुख अप्रिय लक्षण यह था कि कारेनिन और उसका नाम मानो हर जगह था।

किसी बात की भी चर्चा चलाने पर वह कारेनिन की ओर मुड़ जाती थी, कहीं भी जाना सम्भव नहीं था कि उससे भेंट न हो। कम से कम व्रोन्स्की को तो ऐसे ही लगता था। ठीक उसी तरह, जैसे घायल उंगली वाले व्यक्ति को यह लगता है कि उसकी इसी उंगली को हर जगह चोट लगती है।

पीटर्सबर्ग में अपना आना व्रोन्स्की को इसलिये और भी अधिक बोझिल प्रतीत हो रहा था कि इस सारे समय के दौरान वह आन्ना में कोई नयी, अनबूझ-सी मनःस्थिति देख रहा था। कभी तो वह उसके प्रेम में डूबी-सी लगती, तो कभी उदासीन और चिड़चिड़ी-सी हो जाती और कभी अभेद्य-सी। वह कोई यातना सह रही थी, उससे कुछ छिपा रही थी और मानो उन अपमानों की ओर कोई ध्यान नहीं दे रही थी, जो व्रोन्स्की के जीवन को विषाक्त कर रहे थे और उसके जैसी संवेदनशील नारी के लिये और भी अधिक यातनापूर्ण होने चाहिये थे।

(२६)

आन्ना के लिये रूस लौटने का एक उद्देश्य बेटे से मिलना था। इटली से रवाना होने के दिन से यह विचार उसे लगातार बेचैन करता जा रहा था। वह जैसे-जैसे पीटर्सबर्ग के निकट पहुंचती जा रही थी, इस मिलन की ख़ुशी और महत्त्व की वह अधिकाधिक कल्पना कर रही थी। उसने अपने से यह प्रश्न ही नहीं किया कि वह इस मिलन की व्यवस्था कैसे करेगी। एक ही शहर में होने पर बेटे से मिलना उसे बिल्कुल स्वाभाविक और साधारण बात प्रतीत हुई। किन्तु पीटर्सबर्ग पहुंचने पर उसे सहसा समाज में अपनी आज की स्थिति का आभास हुआ और वह समझ गयी कि बेटे के साथ मुलाक़ात की व्यवस्था करना मुश्किल होगा।

उसे पीटर्सबर्ग में आये हुए दो दिन हो गये थे। क्षणभर को भी बेटे का विचार उसके मन से नहीं निकलता था, मगर वह उससे अभी तक मिल नहीं पायी थी। वह अनुभव करती थी कि इस बात का उसे अधिकार नहीं है कि सीधे उस घर में चली जाये, जहां कारेनिन से

उसकी मुलाक़ात हो सकती थी। उसे भीतर जाने से रोका जा सकता था, उसका अपमान किया जा सकता था। पति को पत्र लिखने और उसके साथ किसी तरह का सम्पर्क स्थापित करने का विचार तक उसे यातनाप्रद प्रतीत होता था। उसे तभी चैन की अनुभूति होती थी, जब वह पति के बारे में नहीं सोचती थी। यह मालूम करके कि बेटा कब और किस जगह सैर को जाता है, वह उससे वहां मिल ले, उसके लिये यह काफ़ी नहीं था। वह इस मिलन की इतनी प्रतीक्षा करती रहती थी, उसे बेटे से इतना कुछ कहना था, वह जी भरकर उसे बांहों में भरना और चूमना चाहती थी। सेर्योझा की बूढ़ी धाय उसकी मदद कर सकती थी, उसे रास्ता सुझा सकती थी। किन्तु धाय अब कारेनिन के घर में नहीं थी। इसी तरह की दुविधा और धाय की खोज में दो दिन बीत गये।

कारेनिन के साथ काउंटेस लीदिया इवानोव्ना के घनिष्ठ सम्बन्धों के बारे में जानने के बाद आन्ना ने तीसरे दिन उसे वह पत्र लिखने का निर्णय किया, जिसके लिये उसे बड़ा मानसिक श्रम करना पड़ा। उसमें उसने जान-बूझकर यह लिखा था कि बेटे से मिलने की अनुमति पति की विशालहृदयता पर निर्भर है। वह जानती थी कि पत्र यदि पति को दिखाया जायेगा, तो वह अपनी उदारता की भूमिका जारी रखते हुए उसे इन्कार नहीं करेगा।

ख़त ले जानेवाले हरकारे ने लौटकर उसे बहुत ही कठोर और अप्रत्याशित यह उत्तर दिया कि उसके ख़त का कोई जवाब नहीं मिलेगा। हरकारे को बुलाकर जब उसने तफ़सील से यह सुना कि कैसे वह देर तक इन्तज़ार करता रहा और फिर उससे यह कहा गया – "जवाब नहीं दिया जायेगा," तो उसने अपने को इतना अपमानित अनुभव किया, जितना पहले कभी नहीं किया था। आन्ना अपने को अपमानित और तिरस्कृत अनुभव कर रही थी, किन्तु वह यह समझती थी कि अपने दृष्टिकोण से लीदिया इवानोव्ना सही है। उसका दुख इसलिये और भी ज़्यादा था कि वह उसे किसी के साथ बांट नहीं सकती थी। वह व्रोन्स्की के साथ उसे न तो बांट सकती थी और न ऐसा करना ही चाहती थी। वह जानती थी कि वही उसके दुर्भाग्य का मुख्य कारण है, फिर भी उसे बेटे के साथ उसके मिलन का प्रश्न सबसे कम महत्त्वपूर्ण

प्रतीत होगा। वह जानती थी कि व्रोन्स्की उसकी यातना की गहराई को कभी पूरी तरह नहीं समझ सकेगा। वह जानती थी कि इस बात की याद दिलाने पर उसके उदासीनता के अन्दाज़ से वह उसे घृणा करने लगेगी। इस स्थिति से वह दुनिया में सबसे ज़्यादा डरती थी और इसलिये बेटे से सम्बन्धित हर बात को उससे छिपाती थी।

दिन भर होटल के कमरे में बैठी रहकर वह बेटे से मिलन का मार्ग खोजती रही और आख़िर उसने पति को पत्र लिखने का निर्णय किया। वह यह पत्र लिख रही थी, जब लीदिया इवानोव्ना का पत्र उसे लाकर दिया गया। काउंटेस लीदिया इवानोव्ना की चुप्पी ने उसे विनीत और पराभूत कर दिया था, किन्तु उसके पत्र और पंक्तियों के छिपे अर्थ ने उसमें ऐसी झुंझलाहट पैदा की, बेटे के प्रति अपने तीव्रानुराग और क़ानूनी प्यार की तुलना में उसे यह दुर्भावना इतनी अन्यायपूर्ण लगी कि उसे दूसरों पर ग़ुस्सा आ गया और उसने अपने को दोष देना बन्द कर दिया।

"यह कठोरता – भावनाओं का ढोंग है," उसने अपने आपसे कहा। "वे केवल मेरा अपमान करना और बच्चे को यातना देना चाहते हैं और मैं इनके सामने घुटने टेकूंगी! किसी हालत में नहीं! वह मुझसे बुरी है। मैं कम से कम ढोंग नहीं करती।" इसी समय उसने यह तय कर लिया कि अगले ही दिन, सेर्योझा के जन्म-दिन पर वह सीधे पति के घर जायेगी, नौकरों-चाकरों को रिश्वत देगी, छल-कपट करेगी, मगर हर हालत में बेटे से मिलेगी और उस घिनौने फ़रेब के जाल को तार-तार कर डालेगी, जो उन्होंने उस बदक़िस्मत बच्चे के इर्द-गिर्द बुन रखा है।

खिलौनों की दुकान पर जाकर उसने खिलौने ख़रीद लिये और अपनी कार्रवाई की योजना तैयार कर ली। वह सुबह, आठ बजे वहां पहुंचेगी, जब तक कारेनिन निश्चय ही बिस्तर से नहीं उठा होगा। उसके हाथ में पैसे होंगे, जो वह दरबान और नौकर को भीतर जाने की अनुमति देने के लिये देगी। चेहरे को जाली के पर्दे से ढके हुए ही वह यह कहेगी कि सेर्योझा के धर्म-पिता ने उसे बधाई देने भेजा है और उससे यह कहा गया है कि खिलौने बेटे के पलंग के पास रखकर आये। आन्ना सिर्फ़ वही शब्द नहीं सोच सकी,

जो बेटे से कहेगी। इस बारे में उसने चाहे कितना ही क्यों न सोचा, वह कुछ भी नहीं सोच पायी।

अगले दिन सुबह के आठ बजे आन्ना किराये की बग्घी में से अकेली बाहर निकली और उसने अपने भूतपूर्व घर के बड़े दरवाज़े की घण्टी बजायी।

"जाओ, जाकर पूछो कि उन्हें क्या चाहिये। कोई महिला हैं," कपितोनिच ने, जो अभी सिर्फ़ ओवरकोट और गैलोश पहने था, खिड़की में से बाहर झांकते और जाली से मुंह ढंके हुए दरवाज़े के पास खड़ी महिला को देखकर अपने सहायक से कहा।

दरबान के नौजवान सहायक ने, आन्ना जिससे अपरिचित थी, ज्योंही दरवाज़ा खोला, वह फ़ौरन भीतर घुस गयी और अपने कफ़ में से तीन रूबल का नोट निकालकर उसके हाथ में ठूंस दिया।

"सेर्योझा ... सेर्गेई अलेक्सेयेविच," उसने कहा और आगे बढ़ चली। नोट को ग़ौर से देखने के बाद दरबान के सहायक ने उसे शीशे के दूसरे दरवाज़े के पास रोका।

"किससे मिलना है आपको?" उसने पूछा।

आन्ना ने उसके शब्द नहीं सुने और कोई जवाब नहीं दिया।

अपरिचिता की उलझन को देखकर कपितोनिच ख़ुद बाहर आया, दरवाज़ा खोलकर उसे भीतर जाने दिया और पूछा कि क्या चाहिये।

"प्रिंस स्कोरोदूमोव ने सेर्गेई अलेक्सेयेविच के पास भेजा है," आन्ना ने जवाब दिया।

"छोटे साहब तो अभी उठे नहीं," बहुत ध्यान से आन्ना को देखते हुए दरबान ने कहा।

आन्ना ने कभी यह आशा नहीं की थी कि उस घर की ड्योढ़ी का, जहां उसने नौ बरस बिताये थे, पूरी तरह से पहले जैसा वातावरण उसके दिल पर इतना गहरा प्रभाव डालेगा। एक के बाद एक, ख़ुशी भरी और यातनापूर्ण स्मृतियां उसकी आत्मा में सजीव हो उठीं और वह घड़ी भर को यह भूल गयी कि किसलिये यहां आई है।

"इन्तज़ार करेंगी?" कपितोनिच ने उसके कंधों पर से फ़र-कोट उतारते हुए पूछा।

फ़र-कोट उतारने के बाद कपितोनिच ने ग़ौर से आन्ना

के चेहरे को देखा, उसने उसे पहचान लिया और चुपचाप सिर नीचे झुका दिया।

"पधारिये, मालकिन," उसने आन्ना से कहा।

आन्ना ने कुछ कहना चाहा, मगर उसके मुंह से एक भी शब्द न निकला, उसने गिड़गिड़ाती नज़र से बूढ़े की तरफ़ देखा और तेज़, फुर्तीले क़दम रखती हुई ज़ीने की तरफ़ बढ़ चली। आगे को झुका और सीढ़ियों पर गैलोशों को पैरों में सम्भालता हुआ कपितोनिच उससे आगे निकलने के लिये उसके पीछे-पीछे भागा।

"शिक्षक वहां हैं, शायद वह कपड़े न पहने हों। मैं अभी सूचना दे देता हूं।"

आन्ना जाने-पहचाने ज़ीने पर चढ़ती जा रही थी और बूढ़ा दरबान जो कुछ कह रहा था, कुछ नहीं समझ रही थी।

"इधर, कृपया बायीं ओर। क्षमा कीजिये, यहां सफ़ाई नहीं की गयी। छोटे साहब अब पहलेवाले दीवानख़ाने में हैं," दरबान ने हांफते हुए कहा। "ज़रा रुक जाइये, मालकिन, मैं भीतर देख आता हूं," उसने कहा और आन्ना से आगे निकलकर ऊंचा दरवाज़ा खोला तथा उसके पीछे ग़ायब हो गया। आन्ना इन्तज़ार करने लगी। "छोटे साहब अभी जागे हैं," दरबान ने दरवाज़े से बाहर आते हुए कहा।

दरबान जब यह कह रहा था, उसी वक़्त आन्ना को बालक के जम्हाई लेने की आवाज़ सुनाई दी। जम्हाई की इस आवाज़ से ही उसने बेटे को पहचान लिया और मानो उसे अपने सामने सजीव रूप में अनुभव किया।

"जाने दो, मुझे भीतर जाने दो, तुम जाओ!" वह कह उठी और ऊंचे दरवाज़े को लांघ गयी। दरवाज़े के दायीं ओर एक पलंग था, जिसपर सिर्फ़ एक क़मीज़ पहने, जिसके बटन खुले थे, एक लड़का बैठा था और अपने शरीर को पीछे की तरफ़ झुकाये तथा अंगड़ाई लेता हुआ अपनी जम्हाई ख़त्म कर रहा था। उसके होंठों के मिलने के क्षण में उन्होंने सुखद और ऊंघ भरी मुस्कान का सा रूप ले लिया और वह फिर धीरे तथा मज़े से पीछे को गिर गया।

"सेर्योझा!" दबे पांव उसके क़रीब जाकर वह फुसफुसाई।

बेटे के साथ विछोह और स्नेह के तीव्रावेग के दौरान, जिसकी

पिछले कुछ अर्से से उसे अनुभूति हुई थी, चार साल के बालक के रूप में ही, जिस रूप में उसे सबसे अधिक प्यार करती थी, वह सेर्योझा की कल्पना करती रही थी। अब तो वह वैसा भी नहीं था, जैसा वह उसे छोड़कर गयी थी। चार साल के बालक की तुलना में वह और बड़ा और दुबला हो गया था। अरे, यह मैं क्या देख रही हूं! उसका चेहरा कितना दुबला है, बाल कितने छोटे हैं! बांहें कितनी लम्बी हैं! मेरे जाने के बाद से कितना बदल गया है वह! फिर भी वह सेर्योझा ही था, सिर और होंठों की विशिष्ट बनावट वाला, उसी मुलायम गर्दन और चौड़े कंधोंवाला।

"सेर्योझा!" वह बच्चे के ठीक कान के ऊपर दुबारा फुसफुसायी।

सेर्योझा फिर से कोहनियों के सहारे उचका, मानो कुछ खोजते हुए बिखरे बालों वाला सिर इधर-उधर घुमाया और आंखें खोल लीं। उसने अपने सामने खड़ी मां को चुपचाप और प्रश्नसूचक दृष्टि से कुछ क्षण तक ग़ौर से देखा, सहसा हर्ष-मगन होकर मुस्कराया और मानो नींद के कारण चिपकी जाती आंखों को फिर से मूंदकर पीछे की तरफ़ नहीं, बल्कि आगे की ओर उसकी बांहों में जा गिरा।

"सेर्योझा! मेरे प्यारे बच्चे!" आन्ना ने बेदम होते और उसके गुदगुदे शरीर को बांहों में भरते हुए कहा।

"अम्मां!" वह कह उठा और आन्ना के हाथों के नीचे अपने को हिलाने-डुलाने लगा ताकि उसके शरीर के विभिन्न अंग मां के हाथों का स्पर्श अनुभव कर सकें।

नींद में मुस्कराता और अभी भी आंखें मूंदे हुए उसने अपने गुदगुदे हाथों से पलंग की टेक छोड़कर मां के कंधों को थाम लिया, उसके साथ चिपक गया और उसे नींद की उस प्यारी गंध तथा गर्माहट की अनुभूति कराते हुए, जो सिर्फ़ बच्चों में होती है, उसकी गर्दन तथा कंधों से अपना मुंह रगड़ने लगा।

"मैं जानता था," उसने आंखें खोलते हुए कहा। "आज मेरा जन्म-दिन है। मैं जानता था कि तुम आओगी। मैं अभी उठता हूं।"

और यह कहते हुए वह सोता जा रहा था।

आन्ना बड़ी उत्सुकता से बेटे को देख रही थी। उसे साफ़ नज़र आ रहा था कि उसकी अनुपस्थिति में वह कितना बड़ा हो गया है

और बदल गया है। वह कम्बल से बाहर निकली हुई उसकी नंगी और अब इतनी बड़ी हो गयी टांगों को, दुबला गये गालों, गुद्दी पर के कटे हुए छोटे-छोटे घुंघराले बालों को, जिन्हें वह अक्सर चूमा करती थी, पहचान भी रही थी और नहीं भी पहचान रही थी। वह इन सब जगहों पर उसे छू रही थी और कुछ भी कह नहीं पा रही थी – आंसुओं से उसका गला रुंधा जा रहा था।

"तुम किसलिये रो रही हो, अम्मां?" पूरी तरह से जागकर उसने पूछा। "किसलिये रो रही हो तुम, अम्मां?" वह रुआंसी आवाज़ में चिल्ला उठा।

"मैं? नहीं रोऊंगी मैं... मैं ख़ुशी के कारण रो रही हूं। इतने अर्से से मैंने तुम्हें देखा जो नहीं। नहीं रोऊंगी, नहीं रोऊंगी," उसने आंसू पीते और दूसरी ओर मुंह फेरते हुए कहा। "तुम्हें अब कपड़े पहनने चाहिये," कुछ क्षण चुप रहकर सम्भलने के बाद उसने कहा और उसके हाथ थामे हुए पलंग के पास कुर्सी पर बैठ गयी, जहां उसके लिये तैयार किये हुए कपड़े रखे थे।

"मेरे बिना तुम कैसे कपड़े पहनते हो? कैसे..." उसने सरलता और ख़ुशमिज़ाजी से कहना चाहा, किन्तु ऐसा नहीं कर पायी और फिर से मुंह दूसरी ओर कर लिया।

"मैं ठण्डे पानी से नहीं नहाता हूं, पापा ने इसकी मनाही कर दी है। वसीली लुकीच से तुम नहीं मिलीं? वे अभी आयेंगे। तुम तो मेरे कपड़ों पर बैठ गयीं!"

सेर्योझा ठठाकर हंस पड़ा। आन्ना उसकी ओर देखकर मुस्करा दी।

"अम्मां, मेरी प्यारी, बेहद प्यारी अम्मां!" फिर से आन्ना की ओर लपकते और उसे बांहों में भरते हुए वह चिल्ला उठा। मानो केवल अभी उसकी मुस्कान देखकर वह साफ़ तौर पर यह समझ पाया हो कि क्या हो गया है। "इसकी ज़रूरत नहीं है," मां की टोपी उतारते हुए उसने कहा। और मानो टोपी के बिना आन्ना को नये सिरे से देखकर वह फिर से उसे चूमने को लपका।

"तो तुम क्या सोचते रहे मेरे बारे में? तुमने ऐसा तो नहीं सोचा कि मैं मर गयी?"

"कभी भी मैंने यह विश्वास नहीं किया।"

"विश्वास नहीं किया न, मेरे लाड़ले?"

"मैं जानता था, मैं जानता था!" उसने अपना मनपसन्द वाक्य दोहराया और आन्ना का हाथ पकड़कर, जिससे वह उसके बाल सहला रही थी, तथा उसकी हथेली को अपने मुंह के साथ सटाकर चूमने लगा।

(३०)

इसी बीच वसीली लुकीच अजीब उलझन में पड़ा रहा। शुरू में वह यह नहीं समझ पाया कि वह महिला कौन है। दूसरों की बातचीत से यह मालूम होने पर कि यह वही मां थी, जिसने अपने पति को छोड़ दिया था और जिससे वह परिचित नहीं था, क्योंकि उसके जाने के बाद ही इस घर में आया था, वह इस दुविधा में पड़ गया कि भीतर जाये या न जाये या फिर कारेनिन को इसकी सूचना दे या न दे। आख़िर इस नतीजे पर पहुंचकर कि एक नियत समय पर सेर्योझा को उठा देना उसका कर्त्तव्य है और इसलिये इस बात की परवाह किये बिना कि वहां मां या कोई अन्य व्यक्ति बैठा है, अपना यह कर्त्तव्य पूरा करना चाहिये, उसने कपड़े पहने, दरवाज़े के पास गया और उसे खोला।

किन्तु मां-बेटे का लाड़-दुलार, उनकी आवाज़ों और वे जो कुछ कह रहे थे – इन सभी चीज़ों ने उसे अपना इरादा बदलने को मजबूर कर दिया। उसने सिर हिलाया, गहरी उसांस छोड़ी और दरवाज़ा बन्द कर दिया। "दस मिनट और रुक जाता हूं," उसने खांसकर गला साफ़ करते और आंसू पोंछते हुए अपने आपसे कहा।

इसी समय घर के नौकर-चाकरों में बड़ी उत्तेजना फैली हुई थी। सभी को यह पता चल गया था कि मालकिन आयी हैं, कि कपितोनिच ने उन्हें भीतर जाने दिया, कि इस समय वे सेर्योझा के कमरे में हैं, कि नौ बजे ख़ुद मालिक भी वहां जाते हैं और सभी इस बात को समझते थे कि पति-पत्नी की भेंट नहीं होनी चाहिये और किसी न किसी तरह इस स्थिति को बचाना चाहिये। गृह-प्रबन्धक कोरनेई ने द्वारपालों के कमरे में जाकर यह पूछा कि किसने और कैसे मालकिन को भीतर जाने दिया और यह मालूम होने पर कि कपितोनिच ने उनका स्वागत

किया और उन्हें ऊपर तक पहुंचा आया, उसने बूढ़े को भला-बुरा कहा। दरबान चुप्पी साधे रहा। किन्तु जब कोरनेई ने यह कहा कि इसके लिये उसे निकाल दिया जाना चाहिये, तो कपितोनिच लपककर उसके सामने गया और कोरनेई के मुंह के सामने हाथ लहराकर कह उठा –

"और तुम उन्हें भीतर जाने से रोक लेते। दस साल हो गये काम करते और सिर्फ़ मेहरबानी ही मेहरबानी जानी। तुम ही क्या अब जाकर यह कह सकते हो कि जाइये यहां से! तुम अपना उल्लू तो सीधा करना जानते हो! यह बात है! तुम अपनी फ़िक्र करो कि कैसे मालिक को निचोड़ा जाये और उनके फ़र-कोट उड़ाये जायें!"

"देहाती!" कोरनेई ने तिरस्कारपूर्वक कहा और भीतर आती हुई आया को सम्बोधित करते हुए बोला: "ज़रा सोचिये तो, मारीया येफ़ीमोव्ना – उन्हें भीतर जाने दिया और किसी को कुछ भी नहीं बताया। अलेक्सेई अलेक्सान्द्रोविच अभी बाहर आयेंगे और छोटे मालिक के कमरे में जायेंगे।"

"मुसीबत, मुसीबत," आया ने जवाब दिया। "कोरनेई वसील्येविच, आप किसी तरह मालिक को तो उनके कमरे में रोके रहें और मैं भागकर वहां जाती हूं, किसी तरह से मालकिन को वहां से बाहर ले आती हूं। मुसीबत, मुसीबत!"

आया जब वहां पहुंची, तो सेर्योझा अपनी मां को यह बता रहा था कि नाद्या के साथ वे दोनों टीले पर कैसे गिरे, कैसे लुढ़कते रहे और उन्होंने तीन-तीन कलाबाज़ियां खायीं। आन्ना बेटे की आवाज़ सुन रही थी, उसके चेहरे और चेहरे के भावों को देख रही थी, उसके हाथ को अनुभव कर रही थी, किन्तु वह जो कुछ कह रहा था, उसे समझ नहीं रही थी। उसे जाना चाहिये, बेटे को छोड़कर जाना चाहिये – वह सिर्फ़ यही सोच और अनुभव कर रही थी। उसे दरवाज़े के पास आते और खांसते हुए वसीली लुकीच के पैरों की आहट मिल रही थी, क़रीब आती आया के पैरों की भी आवाज़ सुनाई दे रही थी, किन्तु वह पत्थर बनी बैठी थी, न बोल पा रही थी, न उठने में समर्थ थी।

"प्यारी मालकिन!" आया ने आन्ना के क़रीब जाकर उसके

हाथों और कंधों को चूमते हुए कहा। "हमारे छोटे मालिक के जन्म-दिन पर भगवान कैसी ख़ुशी लाया है! आप तो ज़रा भी नहीं बदलीं।"

"ओह, प्यारी आया, मुझे मालूम नहीं था कि आप यहीं हैं," घड़ी भर को होश में आते हुए आन्ना ने कहा।

"मैं यहां नहीं रहती हूं, बेटी के साथ रहती हूं, बधाई देने आई हूं, प्यारी आन्ना आर्कादियेव्ना!"

आया अचानक रो पड़ी और फिर से आन्ना का हाथ चूमने लगी।

ख़ुशी से चमकती आंखें और होंठों पर मुस्कान लिये तथा एक हाथ से मां और दूसरे से आया को थामे हुए सेर्योझा अपने गुदगुदे नंगे पैरों से क़ालीन पर कूद रहा था। मां के प्रति प्यारी आया के स्नेह से उसे बेहद ख़ुशी हो रही थी।

"अम्मां! वह अक्सर मेरे पास आती है और जब आती है तो..." उसने कहना शुरू किया, किन्तु यह देखकर कि आया ने फुसफुसाकर मां से कुछ कहा है और मां के चेहरे पर भय और शर्म जैसा कोई भाव आ गया है, जो उसे बिल्कुल नहीं जंचता था, वह चुप हो गया।

आन्ना बेटे के क़रीब गयी।

"मेरे लाड़ले!" उसने कहा।

वह यह नहीं कह सकी "मैं जा रही हूं," किन्तु उसके चेहरे के भाव ने यह कह दिया और सेर्योझा समझ गया। "मेरे प्यारे, प्यारे छौने!" उसने वह नाम लेकर कहा, जिससे बचपन में उसे पुकारती थी। "तुम मुझे नहीं भूलोगे न? तुम..." मगर इसके बाद वह एक भी शब्द नहीं कह पायी।

बाद को न जाने कितने शब्द उसके दिमाग़ में आये, जो वह बेटे से कह सकती थी। लेकिन इस वक़्त उसे कुछ भी नहीं सूझा, उससे कुछ भी कहते नहीं बना। किन्तु सेर्योझा वह सब कुछ समझ गया, जो मां कहना चाहती थी। वह समझ गया कि मां दुखी है और उसे प्यार करती है। आया ने फुसफुसाकर जो कहा था, वह भी उसकी समझ में आ गया था। उसने ये शब्द "हमेशा नौ बजे" सुन लिये थे और वह समझ गया था कि पापा के बारे में ही ऐसा कहा गया था और मां तथा पापा को मिलना नहीं चाहिये। यह तो वह समझता था, मगर एक बात उसकी समझ में नहीं आ रही थी कि मां के

चेहरे पर भय या शर्म का भाव क्यों दिखाई दिया था?.. वह दोषी नहीं है, मगर उससे डरती है और किसी कारण शर्म महसूस करती है। वह एक सवाल पूछना चाहता था, जिससे उसका यह सन्देह दूर हो जाता, लेकिन उसे ऐसा करने की हिम्मत नहीं हुई। वह साफ़ देख रहा था कि मां व्यथित है और उसे उसपर दया आ रही थी। वह चुपचाप उसके साथ लिपट गया और फुसफुसाया –

"अभी नहीं जाओ। वह अभी नहीं आयेंगे।"

मां ने उसे अपने से कुछ दूर हटा दिया, ताकि यह समझ सके कि वह जो कुछ कह रहा है, वैसा ही सोचता भी है या नहीं, और बेटे के चेहरे के सहमे हुए भाव से उसने यह समझ लिया कि वह पापा की केवल बात ही नहीं कर रहा है, बल्कि उससे यह भी पूछ रहा है कि पापा के सम्बन्ध में क्या सोचे।

"सेर्योझा, मेरे प्यारे बेटे," आन्ना बोली, "पापा को प्यार करना, वे मुझसे अच्छे और अधिक दयालु हैं और मैं उनके सामने अपराधिनी हूं। बड़े होने पर तुम ख़ुद निर्णय कर लेना।"

"तुमसे अच्छा कोई नहीं!" सेर्योझा रोता हुआ हताशा से चिल्ला उठा और उसके कंधे पकड़कर उसने अपनी पूरी ताक़त, तनाव के कारण कांपते हाथों से उसे अपने साथ चिपका लिया।

"मेरे नन्हे, मेरी जान!" आन्ना ने कहा और बच्चों की तरह, वैसे ही जैसे सेर्योझा रो रहा था, धीरे-धीरे रोने लगी।

इसी वक़्त दरवाज़ा खुला और वसीली लुकीच भीतर आया। दूसरे दरवाज़े के क़रीब पैरों की आहट सुनाई दी और आया ने सहमी-सी फुसफुसाहट से कहा – "आ रहे हैं!" और आन्ना को उसकी टोपी दे दी।

सेर्योझा बिस्तर पर जा गिरा और हाथों से मुंह ढककर सिसकने लगा। आन्ना ने उसके हाथ हटाये, फिर से उसका आंसू-भीगा चेहरा चूमा और तेज़ क़दमों से बाहर चल दी। कारेनिन सामने से आ रहा था। आन्ना को देखकर वह रुका और उसने सिर झुका दिया।

कुछ ही क्षण पहले उसने सेर्योझा से यह कहा था कि वह उससे बेहतर और दयालु है, फिर भी उड़ती-सी एक नज़र में ही, जिससे उसने हर तफ़सील के साथ उसकी सारी आकृति की थाह ले ली, वह उसके प्रति घृणा और द्वेष तथा बेटे के लिये ईर्ष्या की भावना

से भर उठी। आन्ना ने जालीदार परदा एक झटके से मुंह पर गिरा लिया और तेज़ चाल से, लगभग भागते हुए कमरे से बाहर चली गयी।

उन खिलौनों को, जो पिछली शाम उसने उदासी अनुभव करते हुए दुकान से इतने प्यार से ख़रीदे थे, वह बाहर नहीं निकाल पायी और उसी तरह अपने साथ घर वापस ले गई।

(३१)

बेटे से मिलने को आन्ना चाहे कितनी भी उत्सुक क्यों न थी, वह चाहे कितने ही अर्से से इसके बारे में सोच और इसके लिये अपने को तैयार कर रही थी, फिर भी उसने कभी यह उम्मीद नहीं की थी कि इस मिलन का उसके मन पर इतना गहरा प्रभाव पड़ेगा। होटल के अपने अलग सेट में लौटने पर वह देर तक यह नहीं समझ पाई कि किसलिये यहां है। "हां, यह सब ख़त्म हो गया और मैं फिर अकेली हूं," उसने अपने आपसे कहा और टोपी उतारे बिना अंगीठी के क़रीब रखी आराम कुर्सी पर बैठ गयी। खिड़कियों के बीच मेज़ पर रखी कांसे की घड़ी को एकटक देखते हुए वह विचारों में खो गयी।

फ़्रांसीसी नौकरानी, जिसे वे विदेश से अपने साथ लाये थे, कमरे में आई और उसने आन्ना से कपड़े बदलने को कहा। उसने हैरानी से उसकी तरफ़ देखा और बोली:

"बाद में।"

नौकर ने पूछा कि वह कॉफ़ी लाये।

"बाद में," आन्ना ने उत्तर दिया।

इतालवी धाय बच्ची को तैयार करके आन्ना के पास लाई। ख़ूब अच्छी देखभाल से गुदगुदी हुई बच्ची ने मां को देखते ही नंगे हाथों को, जो इतने मोटे थे मानो उन पर धागे बंधे हो, सदा की भांति हथेलियों को नीचे मोड़ लिया और पोपले मुंह से मुस्कराते हुए उन्हें मछली के पंखों की भांति हिलाने और उनसे अपने कढ़े हुए फ़्राक की कलफ़ लगी तहों को सरसराने लगी। उसे देखकर मुस्कराये बिना, चूमे बिना नहीं रहा जा सकता था, उसकी ओर उंगली बढ़ाये बिना नहीं रहा जा सकता था, जिसे वह किलकारियां मारते और ऊपर

उछलते हुए पकड़ना चाहती थी और उसकी ओर होंठ न बढ़ाना भी सम्भव नहीं था, जिसे उसने चुम्बन के रूप में अपने मुंह में ले लिया। आन्ना ने यह सब कुछ किया, उसे हाथों में लिया, उछाला, उसके प्यारे गालों और नंगी कोहनियों को चूमा। किन्तु इस बच्ची के सामने आने पर उसे यह और भी स्पष्ट हो गया कि उसके प्रति वह जो भावना अनुभव करती थी, वह सेर्योझा के प्रति अनुभव होनेवाली भावना की तुलना में प्रेम भी नहीं थी। इस बच्ची में सभी कुछ बहुत प्यारा था, किन्तु न जाने क्यों, यह सब उसके हृदय को नहीं छूता था। पहले बच्चे पर, बेशक वह ऐसे व्यक्ति से था, जिससे उसे प्रेम नहीं था, वह सारा प्यार लुटाया गया था, जिसकी तुष्टि नहीं हो पायी थी। दूसरी ओर, यह बच्ची बहुत ही जटिल परिस्थितियों में पैदा हुई थी और पहले बच्चे के लिये जितनी चिन्ता की गयी थी, उसका सौवां भाग भी इसे नहीं मिला था। इसके अलावा बच्ची को तो अभी भविष्य में व्यक्ति बनना था, जबकि सेर्योझा लगभग व्यक्ति बन चुका था, सो भी प्यारा व्यक्ति; उसमें विचारों और भावनाओं का द्वन्द्व होने लगा था; वह समझता था, प्यार करता था, उसकी आलोचना करता था, बेटे के शब्दों और नज़रों को याद करके वह सोच रही थी। वह केवल शारीरिक दृष्टि से नहीं, मानसिक दृष्टि से भी सदा के लिये उससे अलग हो गयी थी और इस स्थिति को सुधारना उसके बस की बात नहीं थी।

आन्ना ने बच्ची धाय को दे दी, उसे जाने को कहा और वह लाकेट खोला, जिसमें सेर्योझा का लगभग उसी उम्र में खींचा गया छविचित्र लगा हुआ था, जिस उम्र की यह बच्ची थी। वह उठी और टोपी उतारकर उसने मेज़ पर वह एल्बम रख लिया, जिसमें उम्र के दूसरे वक़्तों पर लिये गये सेर्योझा के छायाचित्र थे। उसने इनकी तुलना करनी चाही और उन्हें एल्बम में से निकालने लगी। उसने उन सभी को निकाल लिया, सिर्फ़ एक, आख़िरी और सबसे अच्छा फ़ोटो ही रह गया। इस फ़ोटो में वह सफ़ेद क़मीज़ पहने हुए कुर्सी पर बैठा था, उसकी भौंहें चढ़ी हुई थीं और होंठ मुस्करा रहे थे। यह उसके चेहरे का विशेष और सबसे अच्छा भाव था। अपने छोटे-छोटे फुर्तीले हाथों से, जिनकी गोरी, पतली उंगलियां आज ख़ास तौर पर तनाव

से हिल-डुल रही थीं, उसने कई बार फ़ोटो का सिरा पकड़ा, मगर वह हाथ से निकल गया और वह उसे निकाल नहीं पायी। काग़ज़-काट छुरी मेज़ पर नहीं थी और इसलिये इस फ़ोटो के पासवाला फ़ोटो निकालकर (जो गोल टोपी पहने और लम्बे बाल रखे हुए व्रोन्स्की का इटली में खींचा गया फ़ोटो था) उससे बेटे का फ़ोटो आगे को खिसकाया। "यह रहा वह!" व्रोन्स्की के फ़ोटो को देखकर आन्ना कह उठी और अचानक उसे यह याद हो आया कि उसके इस समय के दुख के लिये कौन ज़िम्मेदार है। आज सुबह से एक बार भी उसे व्रोन्स्की का ध्यान नहीं आया था। किन्तु अब वह साहसपूर्ण, उदात्त, इतना परिचित और प्यारा चेहरा देखकर उसे अप्रत्याशित ही उसके लिये अपने हृदय में प्यार की बाढ़-सी उमड़ती प्रतीत हुई।

"कहां है वह? मेरी व्यथाओं के साथ कैसे वह मुझे मेरे ही हाल पर छोड़ देता है?" अचानक भर्त्सना की भावना से उसने उसके बारे में सोचा और यह भूल गयी कि बेटे से सम्बन्धित सभी बातों को उसने ख़ुद ही उससे छिपाया है। उसने किसी को यह कहने के लिये भेजा कि वह फ़ौरन उसके पास आये। वह उन शब्दों को, जिनका उपयोग करते हुए उसे सब कुछ बतायेगी, और व्रोन्स्की की उन प्रेम-अभिव्यक्तियों के बारे में सोचते हुए, जिनसे वह उसे तसल्ली देगा, धड़कते दिल से उसका इन्तज़ार करने लगी। नौकर यह जवाब लेकर लौटा कि साहब के पास कोई मेहमान आया हुआ है, मगर वे अभी आयेंगे और उन्होंने यह पूछने को कहा है कि क्या वे पीटर्सबर्ग आनेवाले प्रिंस याश्विन के साथ उनके कमरे में आ सकते हैं। "अकेला नहीं आयेगा और कल शाम के खाने के बाद से हमारी मुलाक़ात नहीं हुई है," वह सोचने लगी, "ऐसे नहीं आयेगा कि मैं उसे सब कुछ बता सकूं, बल्कि याश्विन के साथ आयेगा।" सहसा एक अजीब-सा ख़्याल उसके दिमाग़ में कौंध गया – अगर उसे मुझसे प्यार नहीं रहा, तो?

और पिछले दिनों की घटनाओं पर ग़ौर करते हुए उसे ऐसा लगा कि वे उसके इस भयानक विचार की पुष्टि करती हैं – उसने कल तीसरे पहर का खाना घर पर नहीं खाया, इस बात के लिये ज़िद्द की कि पीटर्सबर्ग में अलग-अलग कमरों में रहें और अब अकेला उसके पास नहीं आना चाहता था मानो नज़र मिलाने से कतरा रहा था।

"लेकिन उसे मुझसे यह कह देना चाहिये। मुझे यह मालूम होना चाहिये। अगर मुझे यह पता चल जायेगा, तो मैं जानती हूं कि मुझे क्या करना चाहिये," उसने अपने आपसे कहा। वह उस स्थिति की कल्पना करने में असमर्थ थी, जिसमें उसकी उदासीनता का विश्वास होने पर वह अपने को पायेगी। वह सोच रही थी कि व्रोन्स्की को उससे प्यार नहीं रहा, वह अपने को हताशा की सी अवस्था में अनुभव कर रही थी और इसलिये विशेष रूप से उत्तेजित महसूस कर रही थी। उसने घण्टी बजाकर नौकरानी को बुलाया और शृंगार-कक्ष में चली गयी। पिछले सभी दिनों की तुलना में आज उसने अपने बनाव-शृंगार में कहीं अधिक समय लगाया मानो मन से उतर जाने पर भी वह फिर से उसे इसलिये प्यार करने लगेगा कि उसका फ़्राक और केशविन्यास ऐसा होगा, जो उसे अधिक जंचता-फबता है।

वह पूरी तरह से तैयार नहीं हो पायी थी कि दरवाज़े की घण्टी बज उठी।

मेहमानख़ाने में जाने पर व्रोन्स्की के बजाय याश्विन की नज़र ने उसका स्वागत किया। व्रोन्स्की उसके बेटे के फ़ोटो देख रहा था, जिन्हें वह मेज़ पर से उठाना भूल गयी थी, और उसने आन्ना की ओर देखने की कोई जल्दी नहीं की।

"हम एक-दूसरे से परिचित हैं," सकपकाये हुए याश्विन (जो उसके बहुत ही लम्बे क़द और साधारण नाक-नक़्शे को ध्यान में रखते हुए अजीब बात थी) के बहुत बड़े हाथ से अपना छोटा-सा हाथ मिलाते हुए आन्ना ने कहा। "पिछले साल घुड़दौड़ों के वक़्त जान-पहचान हुई थी। इन्हें दे दीजिये," अर्थपूर्ण चमकती आंखों से व्रोन्स्की की ओर देखते हुए उसने फुर्ती से वे फ़ोटो ले लिये, जिन्हें वह देख रहा था। "इस साल घुड़दौड़ें अच्छी रहीं? मैंने उनकी जगह रोम में कोर्सो पर दौड़ें देखीं। वैसे, आप तो विदेश का जीवन पसन्द नहीं करते," उसने सस्नेह मुस्कराते हुए कहा। "बेशक आपसे बहुत कम ही मिलना-जुलना हुआ, फिर भी मैं आपको और आपकी सभी दिलचस्पियों को अच्छी तरह जानती हूं।"

"मुझे इसका बहुत अफ़सोस है, क्योंकि मेरी ज़्यादातर दिलचस्पियां ख़ासी बुरी हैं," याश्विन ने अपनी बायीं मूंछ को चबाते हुए जवाब दिया।

कुछ देर तक आन्ना के साथ बातचीत करने और यह देखने के बाद कि व्रोन्स्की ने घड़ी पर नज़र डाली है, उसने पूछा कि क्या वह काफ़ी दिनों तक पीटर्सबर्ग में रहेंगी और अपने लम्बे-तड़ंगे शरीर को सीधा करके उसने टोपी उठा ली।

"लगता है कि बहुत दिन तो नहीं," आन्ना ने व्रोन्स्की की ओर देखकर उधेड़बुन में पड़ते हुए उत्तर दिया।

"तो क्या फिर मुलाक़ात नहीं हो सकेगी?" याश्विन ने उठते और फिर व्रोन्स्की को सम्बोधित करते हुए कहा। "दिन का खाना कहां खा रहे हो?"

"यहां आ जाइये दिन का खाना खाने," आन्ना ने दृढ़तापूर्वक कहा मानो अपनी उधेड़बुन के लिये खुद पर झल्ला रही हो। पर साथ ही हमेशा की भांति, जब उसे किसी नये व्यक्ति के सामने अपनी स्थिति स्पष्ट करनी होती थी, वह लज्जारुण हो गयी। "खाना यहां बहुत अच्छा नहीं मिलता, लेकिन कम से कम आप दोनों साथ तो हो सकेंगे। पलटन के अपने साथियों में से अलेक्सेई और किसी को भी आपके समान प्यार नहीं करता।"

"बड़ी ख़ुशी से," याश्विन ने मुस्कराकर कहा, जिससे व्रोन्स्की को यह स्पष्ट हो गया कि आन्ना उसे बहुत अच्छी लगी है।

याश्विन विदा लेकर बाहर चला गया, व्रोन्स्की कमरे में रुक गया।

"तुम भी जा रहे हो?" आन्ना ने पूछा।

"मुझे तो देर भी हो चुकी है," उसने जवाब दिया। "तुम चलो! मैं अभी तुम्हारे साथ आ मिलूंगा," उसने याश्विन से ऊंचे कहा।

आन्ना ने उसका हाथ थाम लिया और उसे एकटक देखते हुए यह सोचने लगी कि उसे रोके रखने के लिये क्या कहे।

"रुको तो, मुझे तुमसे कुछ कहना है," उसके हाथ को अपनी गर्दन पर रखते हुए वह बोली। "तुमने बुरा तो नहीं माना कि मैंने उसे खाने के लिये बुला लिया?"

"बहुत अच्छा किया," उसने अपनी शान्त मुस्कान के साथ सुन्दर दांतों की झलक देते और आन्ना का हाथ चूमते हुए उत्तर दिया।

"अलेक्सेई, तुम मेरे प्रति बदल तो नहीं गये हो?" अपने दोनों हाथों से उसका हाथ दबाते हुए आन्ना ने सवाल किया।

"अलेक्सेई, मैं यहां बहुत दुखी हो गयी हूं। कब जायेंगे हम यहां से?"

"जल्द, बहुत जल्द। तुम यक़ीन नहीं करोगी कि मेरे लिये भी यहां की ज़िन्दगी कितनी बोझिल है," उसने कहा और अपना हाथ खींच लिया।

"तो जाओ, जाओ!" आन्ना ने बुरा मानते हुए कहा और झटपट उससे दूर चली गयी।

(३२)

व्रोन्स्की जब होटल में लौटा, तो आन्ना अभी तक नहीं आई थी। उसे बताया गया कि उसके जाने के फ़ौरन बाद कोई महिला उसके पास आई और वह उसके साथ कहीं चली गयी। यह बताये बिना कि कहां जा रही है, वह चली गयी थी, कि वह अब तक लौटी नहीं थी, कि सुबह भी उससे कुछ कहे बिना कहीं गयी थी – इन सब चीज़ों और साथ ही आज सुबह उसके चेहरे के अजीब उत्तेजित भाव और उस शत्रुतापूर्ण अन्दाज़ की याद ने, जिससे उसने बेटे के फ़ोटो उसके हाथ से लगभग छीन लिये थे, उसे सोचने के लिये विवश कर दिया। उसने तय किया कि उसे खुलकर आन्ना से बात करनी चाहिये। इसलिये वह मेहमानख़ाने में बैठकर उसकी राह देखने लगा। किन्तु आन्ना अकेली नहीं लौटी, बल्कि अपनी बूआ, बूढ़ी अविवाहिता प्रिंसेस ओब्लोन्स्काया के साथ। यही बूआ सुबह के वक़्त आई थी और आन्ना के साथ ख़रीदारी करने गयी थी। व्रोन्स्की के चेहरे के चिन्तामय और प्रश्नसूचक भाव की ओर मानो आन्ना का ध्यान नहीं गया और वह बहुत रंग में उसे यह बताती रही कि उसने आज सुबह क्या कुछ ख़रीदा है। व्रोन्स्की ने देखा कि आन्ना के भीतर कोई ख़ास बात हो रही है – चमकती हुई आंखों में, जब वे क्षण भर को उसके चेहरे पर रुकीं, उसे तनावपूर्ण एकाग्रता की झलक मिली और उसके बोलने के ढंग और हाव-भाव में घबराहट लिये हुए वह तेज़ी और सजीलापन था, जो उन दोनों की निकटता के पहले समय में उसे बहुत अच्छे लगता था और अब चिन्ता तथा भय पैदा करता था।

चार आदमियों के लिये खाना लगाया गया। वे सभी भोजन-कक्ष

में जानेवाले ही थे कि तुश्केविच आन्ना के नाम प्रिंसेस बेत्सी का एक सन्देश लेकर आ गया। प्रिंसेस बेत्सी ने इस बात के लिये क्षमा करने का अनुरोध किया था कि वह उससे विदा लेने नहीं आई, उसकी तबीयत अच्छी नहीं थी और उसने आन्ना से शाम के साढ़े छः और नौ बजे के बीच आने की प्रार्थना की थी। इस विशेष समय की बात सुनकर व्रोन्स्की ने आन्ना की ओर देखा। ज़ाहिर था कि इस बात की पूरी सावधानी बरती गयी है कि उस वक़्त वहां आन्ना की अन्य किसी से भेंट न हो सके। किन्तु आन्ना ने मानो इस ओर कोई ध्यान नहीं दिया।

"बड़े अफ़सोस की बात है कि मैं शाम के साढ़े छः बजे और नौ बजे के बीच ही नहीं जा सकती," उसने ज़रा मुस्कराकर कहा।

"प्रिंसेस को बहुत दुख होगा।"

"मुझे भी।"

"आप शायद पात्ती का गायन सुनने जा रही हैं?" तुश्केविच ने पूछा।

"पात्ती का गायन? आप मुझे अच्छी बात सुझा रहे हैं। अगर बाक्स हासिल करना मुमकिन हो, तो मैं ज़रूर चली जाती।"

"बाक्स मैं हासिल कर दूंगा," तुश्केविच ने तत्परता प्रकट की।

"आपका बहुत-बहुत आभार मानूंगी," आन्ना ने कहा। "हमारे साथ भोजन करना नहीं पसन्द करेंगे?"

व्रोन्स्की ने ऐसे धीरे से कंधे झटके कि किसी का ध्यान न जाये। वह बिल्कुल यह नहीं समझ पा रहा था कि आन्ना क्या कर रही है। किसलिये वह बूढ़ी प्रिंसेस को अपने साथ ले आई, किसलिये तुश्केविच को खाने के लिये रोक रही है और सबसे ज़्यादा हैरानी की बात यह थी कि किसलिये उसे थियेटर में बाक्स हासिल करने को भेजना चाहती थी? अपनी वर्त्तमान स्थिति में वह पात्ती को ऑपेरा में सुनने के लिये जाने की बात भला सोच ही कैसे सकती थी, जहां उसकी जान-पहचान का पूरा ऊंचा समाज होगा? उसने गम्भीर दृष्टि से आन्ना की ओर देखा, किन्तु उसने वैसी ही चुनौती देती या फिर ख़ुशी, अथवा कुछ हताशा से भरपूर नज़र से जवाब दिया, जिसका अर्थ उसकी समझ में नहीं आया। खाने की मेज़ पर आन्ना ने ज़्यादती करने की हद तक

ख़ुशमिज़ाजी दिखाई – वह तो तुश्केविच और याश्विन के साथ मानो चोंचलेबाज़ी करती रही। खाना ख़त्म होने पर जब तुश्केविच बाक्स हासिल करने चला गया और याश्विन सिगरेट पीने के लिये नीचे चल दिया, तो व्रोन्स्की भी उसके साथ अपने कमरे में चला गया। कुछ देर वहां बैठने के बाद वह भागता हुआ ऊपर लौटा। आन्ना मख़मल से सजी, नीची चोलीवाली हल्के रंग की रेशमी पोशाक पहने थी, जो उसने पेरिस में सिलवाई थी, सिर पर महंगे क़िस्म की सफ़ेद लेस बंधी थी, जिससे उसका चेहरा चौखटे में जड़ा-सा लगता था और जिससे उसकी चकाचौंध करती सुन्दरता को चार चांद लग गये थे।

"आप क्या सचमुच ही थियेटर जा रही हैं?" आन्ना से नज़र न मिलाने की कोशिश करते हुए उसने पूछा।

"आप ऐसे सहमे-सहमे से क्यों पूछ रहे हैं?" फिर से इस बात का बुरा मानते हुए कि वह उससे नज़र क्यों नहीं मिला रहा है, उसने जवाब दिया। "क्यों न जाऊं मैं थियेटर?"

आन्ना मानो उसके शब्दों का अर्थ नहीं समझ रही थी।

"ज़ाहिर है कि ऐसा कोई कारण नहीं है," व्रोन्स्की ने माथे पर बल डालते हुए कहा।

"मैं भी यही कह रही हूं," जानबूझकर व्रोन्स्की के व्यंग्यपूर्ण ढंग की अवहेलना करते हुए वह बोली और बड़े इतमीनान से अपना ख़ुशबू से महकता हुआ लम्बा दस्ताना हाथ पर चढ़ाने लगी।

"आन्ना, भगवान के लिये यह बताइये कि आपको क्या हुआ है?" व्रोन्स्की ने उसी तरह अपील करते हुए, जैसे कभी आन्ना का पति कहता था, उससे कहा।

"मेरी समझ में नहीं आ रहा कि आप क्या पूछ रहे हैं।"

"आप जानती हैं कि वहां जाना ठीक नहीं।"

"वह क्यों? मैं अकेली नहीं जाऊंगी। प्रिंसेस वर्वारा कपड़े पहनने गयी है, वह मेरे साथ जायेगी।"

व्रोन्स्की ने हैरानी और हताशा प्रकट करते हुए कंधे झटके।

"लेकिन क्या आप यह नहीं जानतीं..." उसने कहना शुरू किया।

"मैं कुछ जानना नहीं चाहती!" आन्ना लगभग चिल्ला उठी। "नहीं चाहती। मैंने जो कुछ किया है, क्या मैं उसके लिये पछता

रही हूं? नहीं, नहीं, एक बार फिर नहीं। अगर फिर शुरू से यही होता तो मैं फिर ऐसा ही करती। हमारे लिये, मेरे और आपके लिये, सिर्फ़ यही महत्त्वपूर्ण है – हम एक-दूसरे को प्यार करते हैं या नहीं। दूसरी कोई भी चीज़ मानी नहीं रखती। किसलिये हम यहां अलग-अलग कमरों में रहते हैं और मिलते-जुलते नहीं? क्यों मैं थियेटर नहीं जा सकती? मैं तुम्हें प्यार करती हूं और बाक़ी मुझे किसी चीज़ की परवाह नहीं," आन्ना ने एक ख़ास, व्रोन्स्की की समझ में न आनेवाली चमक आंखों में लाकर उसकी तरफ़ देखते हुए रूसी में कहा, "हां, अगर तुम्हारा मन नहीं बदल गया। तुम मेरी तरफ़ क्यों नहीं देखते?"

व्रोन्स्की ने आन्ना की तरफ़ देखा। उसने उसके चेहरे की सारी सुन्दरता और सज-धज को देखा, जो हमेशा उसे इतनी अधिक जंचती थीं। किन्तु अब यही सुन्दरता और सजीलापन उसमें झुंझलाहट पैदा कर रहे थे।

"आप जानती ही हैं कि आपके प्रति मेरी भावना में परिवर्तन नहीं हो सकता, किन्तु मैं आपसे अनुरोध करता हूं, आपकी मिन्नत करता हूं कि नहीं जाइये," व्रोन्स्की ने अपनी आवाज़ में अनुनय, किन्तु दृष्टि में रुखाई के साथ फिर फ़्रांसीसी में कहा।

आन्ना ने उसके शब्द नहीं सुने, किन्तु दृष्टि की रुखाई को देखा और चिढ़कर जवाब दिया –

"मैं आपसे यह बताने का अनुरोध करती हूं कि मैं क्यों न जाऊं।"

"इसलिये कि इससे आपको..." वह अपनी बात पूरी नहीं कर सका।

"कुछ भी मेरी समझ में नहीं आ रहा। याश्विन n'est pas compromettant* और प्रिंसेस वर्वारा दूसरों से किसी तरह बुरी नहीं। लो, आ गयी वह।"

(३३)

व्रोन्स्की को आन्ना के विरुद्ध झल्लाहट, जान-बूझकर अपनी स्थिति को न समझने के लिये लगभग क्रोध की पहली बार अनुभूति

---

* अटपटी स्थिति में नहीं डाल सकता। (फ़्रांसीसी)

हुई। यह क्रोध-भावना इसलिये और भी अधिक तीव्र हो गयी कि वह उसे अपनी झल्लाहट का कारण नहीं बता सकता था। वह जो कुछ सोच रहा था, अगर उसे साफ़-साफ़ कह देता, तो उसने आन्ना से यह कहा होता: "ऐसी सज-धज और प्रिंसेस के साथ, जिसे सभी जानते हैं, थियेटर में जाने का मतलब न सिर्फ़ पतित नारी के रूप में अपनी स्थिति को स्वीकार करना होगा, बल्कि ऊंचे समाज को चुनौती देना भी होता यानी सदा के लिये उससे नाता तोड़ लेना होगा।"

वह आन्ना से यह नहीं कह सकता था। "मगर वह समझती क्यों नहीं और उसकी आत्मा में हो क्या रहा है?" वह अपने आपसे कह रहा था। उसे अनुभव हो रहा था कि जहां आन्ना के प्रति उसका आदर भाव कम हो रहा था, वहां उसके सौन्दर्य की चेतना बढ़ रही थी।

व्रोन्स्की नाक-भौंह सिकोड़े हुए अपने कमरे में आया और याश्विन के क़रीब बैठ गया, जो कुर्सी पर अपनी लम्बी टांगें फैलाये हुए सोडे में ब्रांडी मिलाकर पी रहा था। उसने अपने लिये भी वही लाने को कह दिया।

"तुम लान्कोव्स्की घोड़े की बात कर रहे थे। वह अच्छा घोड़ा है और मैं तुम्हें उसे ख़रीदने की सलाह देता हूं," याश्विन ने अपने दोस्त के उदास चेहरे पर नज़र डालकर कहा। "उसके पुट्ठे कुछ अच्छे नहीं हैं, लेकिन टांगें और सिर तो ऐसे हैं कि बेहतर की कल्पना नहीं की जा सकती।"

"मेरे ख़्याल में मैं उसे ख़रीद लूंगा," व्रोन्स्की ने जवाब दिया।

घोड़ों से सम्बन्धित बातचीत में वह दिलचस्पी ले रहा था, लेकिन क्षण भर को भी आन्ना को नहीं भूल पा रहा था, अनचाहे ही बरामदे में पैरों की आहट पर कान लगाये रहा और आतिशदान पर रखी घड़ी पर नज़र डालता रहा।

"आन्ना आर्कादियेव्ना ने मुझे यह कहने को भेजा है कि वे थियेटर जा रही हैं।"

याश्विन ने सोडे में ब्रांडी का एक गिलास और मिलाया, उसे गले के नीचे उतारा और खड़े होकर बटन बन्द करने लगा।

"तो? चलें?" उसने मूंछों के नीचे होंठों पर तनिक मुस्कान लाते और इससे यह ज़ाहिर करते हुए कहा कि वह व्रोन्स्की

की उदासी का कारण समझता है, किन्तु इसे कोई महत्त्व नहीं देता।

"मैं नहीं जाऊंगा," व्रोन्स्की ने उदासी से कहा।

"लेकिन मुझे जाना होगा, मैंने वादा किया है। तो अलविदा। तुम स्टाल में आकर बैठ सकते हो। क्रासींस्की की कुर्सी पर," याश्विन ने बाहर जाते हुए कहा।

"नहीं, मुझे कुछ और काम है।"

"बीवी के साथ झंझट होती है और अगर वह बीवी न हो, तो और भी ज़्यादा मुसीबत रहती है," याश्विन होटल से निकलते हुए सोच रहा था।

अकेला रह जाने पर व्रोन्स्की कुर्सी से उठा और कमरे में इधर-उधर चक्कर लगाने लगा।

"तो आज क्या खेल है थियेटर में? सीज़न का चौथा टिकट... येगोर अपनी पत्नी के साथ वहां होगा और शायद मां भी। इसका मतलब यह हुआ – सारा पीटर्सबर्ग ही वहां है। अब वह थियेटर में पहुंच चुकी है, उसने फ़र-कोट उतार दिया है और रोशनी में निकल आई है। तुश्केविच, याश्विन, प्रिंसेस वर्वारा..." वह कल्पना कर रहा था। "और अपने बारे में मुझे क्या कहना है? या तो मैं डरता हूं या फिर मैंने उसे तुश्केविच के संरक्षण में दे दिया? किसी भी दृष्टि से क्यों न देखा जाये, यह मूर्खता है, मूर्खता है... क्यों उसने मुझे ऐसी स्थिति में डाल दिया है?" उसने हाथ झटकते हुए कहा।

ऐसा करने पर उसका हाथ उस छोटी मेज़ से जा टकराया, जिसपर सोडा वाटर और ब्रांडी वाली सुराही रखी थी, जिसे उसने लगभग नीचे गिरा दिया। उसने उसे सम्भालना चाहा, वह उसके हाथ से निकल गयी और तब ग़ुस्से में मेज़ को ठोकर मारकर उसने घण्टी बजायी।

"अगर तुम मेरे यहां अपनी नौकरी बनाये रखना चाहते हो," उसने भीतर आनेवाले नौकर से कहा, "तो तुम्हें अपने काम का ध्यान रखना चाहिये। फिर ऐसा नहीं होना चाहिये। यह सब साफ़ कर देना चाहिये था।"

नौकर ने अपने को निर्दोष अनुभव करते हुए अपनी सफ़ाई देनी चाही, किन्तु मालिक के चेहरे पर नज़र डालने से वह समझ गया

कि उसे चुप ही रहना चाहिये तथा झटपट क़ालीन पर बैठकर साबूत और टूटे हुए जाम तथा बोतलें उठाने लगा।

"यह तुम्हारा काम नहीं है, वेटर को यहां सफ़ाई करने के लिये भेज दो और तुम मेरा फ़्राक-कोट तैयार करो।"

रात के साढ़े आठ बजे व्रोन्स्की थियेटर में दाख़िल हुआ। ऑपेरा का ख़ूब समां बंधा हुआ था। बाक्स के पास हाज़िरी बजानेवाले बूढ़े ने उसका फ़र-कोट उतरवाया और उसे पहचानकर "हुज़ूर" कहा और यह सुझाव दिया कि फ़र-कोट टांगने के लिये टोकन लेने की ज़रूरत नहीं, बल्कि वह फ़्योदोर को बुलाकर उसे अपना कोट दे दे। हाज़िरी बजानेवाले इस बूढ़े और हाथों में फ़र-कोट उठाये तथा दरवाज़े के पास खड़े होकर ऑपेरा सुन रहे दो नौकरों के सिवा रोशन बरामदे में और कोई नहीं था। तनिक खुले हुए दरवाज़े के पीछे से बड़ी सावधानी से भिन्न सुरों में संगत करते आर्केस्ट्रा और एक नारी-कण्ठ की आवाज़ सुनाई दे रही थी, जो स्वरबद्ध वाक्य का बहुत स्पष्ट उच्चारण कर रही थी। बूढ़े नौकर के भीतर जाने के लिये दरवाज़ा खुला और समाप्त होता हुआ गायन व्रोन्स्की को स्पष्ट सुनाई दिया। किन्तु दरवाज़ा उसी वक़्त बन्द हो गया और व्रोन्स्की गायन का अन्त नहीं सुन सका, किन्तु दरवाज़े के पीछे से तालियों के ज़ोरदार शोर से यह समझ गया कि गायन समाप्त हो गया। जब वह झाड़-फ़ानूसों और कांसे की गैस-ब्रेकटों की रोशनी से जगमगाते हॉल में दाख़िल हुआ, तो प्रशंसकों का शोर अभी तक जारी था। रंगमंच पर अपने नंगे कंधों और हीरों की लौ देती, झुकती और मुस्कराती हुई गायिका तार सप्तक के अपने सह-गायक की मदद से, जो उसका हाथ थामे था, फ़ुट-लाइटों के ऊपर से रंगमंच पर अटपटे ढंग से गिरनेवाले गुलदस्तों को उठा रही थी और चमकते बालों के बीच मांग काढ़े हुए उस महानुभाव की ओर बढ़ रही थी, जो अपनी लम्बी बांहों को फ़ुट-लाइटों के ऊपर से फैलाकर उसकी तरफ़ कोई उपहार बढ़ा रहा था, और स्टालों तथा बाक्सों के सभी दर्शकगण उत्तेजना से हिल-डुल तथा आगे को झुक रहे थे, शोर मचा तथा तालियां बजा रहे थे। वाद्यवृन्द-निदेशक ने अपनी ऊंची सीट से यह उपहार गायिका तक पहुंचाने में मदद दी और अपनी सफ़ेद टाई ठीक की। व्रोन्स्की स्टाल के मध्य में गया और

वहां रुककर इधर-उधर नज़र दौड़ाने लगा। अन्य किसी समय की तुलना में आज उसने इस परिचित वातावरण, इस रंगमंच, इस कोलाहल और खचाखच भरे थियेटर में एकत्रित जानी-पहचानी, ग़ैरदिलचस्प और रंग-बिरंगी पोशाकें पहने दर्शकों की भीड़ की ओर कहीं कम ध्यान दिया।

सदा की भांति बाक्सों में वही नारियां और उनके पीछे वही अफ़सर बैठे थे। वही – भगवान जाने कौन – रंग-रंगीली पोशाकें पहने नारियां थीं, वही वर्दियां और फ़्राक-कोट थे, गैलरी में गन्दे लोगों की वही भीड़ थी, और इस सारी भीड़ में बाक्सों तथा पहली क़तारों में लगभग चालीस "वास्तविक" महिलायें और पुरुष थे। व्रोन्स्की ने फ़ौरन इन्हीं "नख़लिस्तानों" की ओर ध्यान दिया और तत्काल इनके साथ सम्बन्ध-तार जोड़ लिया।

व्रोन्स्की के भीतर आते ही अंक समाप्त हुआ और इसलिये बड़े भाई के बाक्स में जाने के बजाय वह पहली क़तार में जाकर फ़ुट-लाइटों के क़रीब सेर्पुख़ोव्स्कोई के साथ खड़ा हो गया, जो अपना घुटना झुकाये हुए आर्केस्ट्रा की दीवार पर एड़ी बजा रहा था और व्रोन्स्की को दूर से देखकर उसे मुस्कान द्वारा अपने पास आने का संकेत किया था।

व्रोन्स्की ने अभी तक आन्ना को नहीं देखा था, जान-बूझकर उसकी तरफ़ नज़र नहीं डाली थी। किन्तु जिस दिशा में अधिकतर नज़रें टिकी थीं, वह जानता था कि आन्ना वहीं है। उसने चोरी-छिपे अपनी नज़र घुमाई, मगर आन्ना को नहीं खोजा। अधिक बुरी आशा करते हुए उसने कारेनिन को ढूंढ़ना चाहा। किन्तु उसकी ख़ुशक़िस्मती ही कहिये कि इस दिन वह थियेटर में नहीं था।

"कितने कम फ़ौजी रह गये हो तुम!" सेर्पुख़ोव्स्कोई ने उससे कहा। "कूटनीतिज्ञ, कलाकार या ऐसे ही कुछ और हो सकते हो।"

"हां, मैंने स्वदेश लौटते ही फ़्राक-कोट पहन लिया," व्रोन्स्की ने मुस्कराते और धीरे से दूरबीन निकालते हुए जवाब दिया।

"स्वीकार करता हूं कि इस चीज़ के लिये मुझे तुमसे ईर्ष्या होती है। मैं जब विदेश से लौटकर यह पहनता हूं," उसने पद-चिह्नों को हाथ लगाया, "तो मुझे अपनी आज़ादी के लिये अफ़सोस होता है।"

सेना में व्रोन्स्की की पदोन्नति के बारे में सेर्पुख़ोव्स्कोई कभी का

निराश हो चुका था, किन्तु वह उसे पहले की तरह प्यार करता था और अब ख़ास तौर पर उसके साथ अच्छे ढंग से पेश आया।

"दुख की बात है कि तुम पहले अंक में यहां नहीं थे।"

व्रोन्स्की स्टालों से बाक्सों की ओर अपनी दूरबीन घुमाते हुए सेर्पुख़ोव्स्कोई की बातों को बेध्यान-सा सुन रहा था। पगड़ी वाली महिला और उस गंजे बूढ़े के क़रीब, जो व्रोन्स्की की दूरबीन के शीशे के उस पर केन्द्रित होने के समय क्रोध से पलकें झपका रहा था, उसे अचानक आन्ना के गर्वीले, आश्चर्यजनक रूप से सुन्दर और लेसों के चौखटे में मुस्कराते हुए चेहरे की झलक मिली। वह उससे कोई बीस क़दम की दूरी पर पांचवें बाक्स में थी। वह आगे की ओर बैठी थी और तनिक सिर घुमाकर याश्विन से कुछ कह रही थी। सुन्दर और चौड़े कंधों पर उसके सिर का अन्दाज़ और उसकी आंखों की संयत-उत्तेजित चमक और उसके पूरे चेहरे ने उसे एकदम उसी रूप में उसकी याद दिला दी, जिस रूप में उसने उसे मास्को के बॉल में देखा था। किन्तु अब वह इस सुन्दरता को दूसरे ही रूप में अनुभव कर रहा था। आन्ना के प्रति उसकी भावना में अब कुछ भी रहस्यपूर्ण नहीं था और इसलिये उसकी सुन्दरता चाहे पहले से अधिक अपनी ओर खींचती थी, लेकिन साथ ही वह उसके दिल को ठेस भी लगाती थी। आन्ना उसकी ओर नहीं देख रही थी, मगर व्रोन्स्की ने महसूस किया कि वह उसे देख चुकी है।

व्रोन्स्की ने जब फिर से अपनी ऑपेरा-दूरबीन उस दिशा में घुमायी, तो उसने देखा कि प्रिंसेस वर्वारा का चेहरा बेहद लाल है, वह अस्वाभाविक ढंग से हंस रही है और लगातार मुड़-मुड़कर पासवाले बाक्स की ओर देख रही है। आन्ना अपने पंखे को बन्द करके उसे बाक्स की लाल मख़मल पर धीरे-धीरे मार रही है, टकटकी बांधकर कहीं देख रही है, किन्तु बग़ल के बाक्स में जो कुछ हो रहा है, उसे नहीं देख रही और स्पष्टतः देखना नहीं चाह रही है। याश्विन के चेहरे पर वही भाव था, जो जुए में हारने के वक़्त उसके चेहरे पर होता था। माथे पर बल डाले हुए वह अपनी बायीं मूंछ को अधिकाधिक मुंह में डालता जा रहा था और उसी बग़लवाले बाक्स की तरफ़ कनखियों से देख रहा था।

बायीं ओर के इस बाक्स में कार्तासोव दम्पति बैठे थे। व्रोन्स्की उन्हें जानता था और उसे मालूम था कि आन्ना उनसे परिचित है। नाटी और दुबली-पतली कार्तासोवा आन्ना की ओर पीठ किये हुए अपने बाक्स में खड़ी थी और पति द्वारा पहनाया जानेवाला कैप पहन रही थी। उसका चेहरा पीला और झल्लाया हुआ था और वह उत्तेजित होकर कुछ कह रही थी। उसका मोटा और गंजा पति यानी श्रीमान कार्तासोव लगातार मुड़-मुड़कर आन्ना की तरफ़ देखता हुआ पत्नी को शान्त करने की कोशिश कर रहा था। बीवी के बाक्स से बाहर चले जाने पर वह आन्ना से नज़र मिलाने और सम्भवत: उसका अभिवादन करने की इच्छा से देर तक वहीं खड़ा रहा। किन्तु आन्ना जान-बूझकर उसकी अवहेलना करते हुए पीछे की ओर मुड़कर याश्विन से कुछ कह रही थी, जिसका छोटे-छोटे बालों वाला सिर उसकी तरफ़ झुका हुआ था। कार्तासोव अभिवादन किये बिना ही बाहर चला गया और बाक्स ख़ाली हो गया।

व्रोन्स्की यह नहीं समझ पाया कि कार्तासोव दम्पति और आन्ना के बीच क्या हुआ है, किन्तु इतना समझ गया कि आन्ना के लिये कोई अपमानजनक बात हुई है। उसने जो कुछ देखा था, उससे और इससे भी अधिक आन्ना के चेहरे से वह यह समझ गया। वह जानता था कि आन्ना अपनी बची-खुची शक्ति बटोर रही थी, ताकि उस भूमिका को निभा सके, जो वह निभा रही थी। और बाहरी तौर पर शान्त बने रहने की इस भूमिका में उसे पूरी सफलता मिली थी। जो आन्ना और उसके परिचितों के घेरे को नहीं जानता था, जिन्होंने उसके ऊंचे समाज में प्रकट होने, सो भी लेसों के ऐसे ठाट-बाट और अपनी पूरी सुन्दरता के साथ प्रकट होने पर सहानुभूति, क्रोध और आश्चर्य के द्योतक नारियों के उद्गारपूर्ण शब्द नहीं सुने थे, ऐसे लोग इस नारी की शान्त मुख मुद्रा और सुन्दरता पर मुग्ध हो रहे थे और उन्हें इस बात का भ्रम तक नहीं हो सकता था कि वह अपने को उसी व्यक्ति के समान अनुभव कर रही है, जिसे अपमानित करने के लिये अपराधी-स्तम्भ के साथ बांध दिया गया है।

यह जानते हुए कि कोई अटपटी बात हो गयी है, मगर यह न जानते हुए कि क्या बात हुई है, व्रोन्स्की यातनापूर्ण बेचैनी महसूस

कर रहा था और कुछ न कुछ मालूम कर पाने की उम्मीद से भाई के बाक्स की तरफ़ चल दिया। उसने जान-बूझकर आन्ना के बाक्स के सामने की ओर स्टाल से बाहर जाने का रास्ता चुना और दरवाज़े पर उसकी अपने भूतपूर्व रेजिमेन्ट-कमांडर से भेंट हो गयी, जो अपने दो परिचितों से बातचीत कर रहा था। व्रोन्स्की ने उन्हें कारेनिन-दम्पति का नाम लेते सुना और इस बात की तरफ़ भी उसका ध्यान गया कि अपने साथियों की ओर अर्थपूर्ण दृष्टि से देखते हुए रेजिमेन्ट-कमांडर ने उसे कैसे जल्दी से ऊंचे पुकारा।

"अरे, व्रोन्स्की! रेजिमेन्ट में कब आ रहे हो? दावत के बिना हम तुम्हें नहीं जाने देंगे। तुम तो हमारे सबसे पुराने साथियों में से हो," रेजिमेन्ट-कमांडर ने कहा।

"अफ़सोस की बात है कि अब ऐसा नहीं कर पाऊंगा, फिर कभी सही," व्रोन्स्की ने जवाब दिया और भाई के बाक्स में पहुंचने के लिये भागते हुए सीढ़ियां चढ़ने लगा।

रुपहले घुंघराले बालोंवाली व्रोन्स्की की मां, बूढ़ी काउंटेस, भाई के बाक्स में बैठी थी। वार्या और प्रिंसेस सोरोकिना के साथ व्रोन्स्की की बरामदे में भेंट हो गयी।

प्रिंसेस सोरोकिना को व्रोन्स्की की मां के पास पहुंचाकर वार्या ने अपने देवर से हाथ मिलाया और उसी क्षण उससे उसकी दिलचस्पी के मसले पर बात करने लगी। व्रोन्स्की ने बहुत कम ही उसे ऐसे उत्तेजित देखा था।

"मैं इसे बेहद कमीनी और घटिया बात मानती हूं और मदाम कार्तासोवा को ऐसा करने का कोई हक़ नहीं था। मदाम कारेनिना ..." उसने कहना शुरू किया।

"लेकिन हुआ क्या है? मुझे कुछ मालूम नहीं।"

"क्या तुमने कुछ नहीं सुना?"

"तुम समझती ही हो कि मैं सबसे बाद में यह सुन पाऊंगा।"

"उस कार्तासोवा से बुरा व्यक्ति भी कोई हो सकता है?"

"लेकिन उसने किया क्या है?"

"मेरे पति ने मुझे बताया है... उसने कारेनिना का अपमान किया है। उसका पति बग़लवाले बाक्स में बैठी कारेनिना से बात

करने लगा और कार्तासोवा ने उसे नाटक कर दिखाया। कहते हैं कि उसने ऊंची आवाज़ में कोई अपमानजनक बात कही और वहां से चली गयी।"

"काउंट, आपकी मां आपको बुला रही हैं," प्रिंसेस सोरोकिना ने बाक्स के दरवाज़े के पीछे से झांकते हुए कहा।

"मैं कब से तुम्हारी राह देख रही हूं," मां ने व्यंग्यपूर्ण मुस्कान के साथ कहा। "तुम नज़र ही नहीं आते।"

बेटे ने देखा कि वह अपनी ख़ुशी भरी मुस्कान को छिपा नहीं पा रही है।

"नमस्ते, maman, मैं आपके पास आ रहा था," उसने रुखाई से कहा।

"तुम faire la cour à madame Karenine? *" उसने प्रिंसेस सोरोकिना के बाहर जाने पर पूछा। "Elle fait sensation. On oublie la Patti pour elle.**"

"Maman, मैंने आपसे इस बारे में चर्चा न करने का अनुरोध किया था," व्रोन्स्की ने तेवर चढ़ाकर जवाब दिया।

"मैं वही कह रही हूं, जो सब कहते हैं।"

व्रोन्स्की ने कोई उत्तर नहीं दिया और प्रिंसेस सोरोकिना से थोड़ी बातचीत करके बाहर आ गया। दरवाज़े पर बड़े भाई से उसकी मुलाक़ात हो गयी।

"अरे, अलेक्सेई!" भाई ने कहा। "कैसी कमीनी बात है! वह औरत निरी उल्लू है... मैं अभी उसके पास जाना चाह रहा था। आओ, दोनों साथ चलें।"

व्रोन्स्की उसकी बात पर कान नहीं दे रहा था। वह तेज़ी से नीचे चला गया – वह महसूस कर रहा था कि उसे कुछ करना चाहिये, लेकिन क्या, यह नहीं जानता था। उसे इस बात का ग़ुस्सा आ रहा था कि आन्ना ने ख़ुद को और उसे भी ऐसी अटपटी स्थिति में डाल

---

* मदाम कारेनिना की ख़िदमत में क्यों नहीं हो? (फ़्रांसीसी)

** वह सनसनी पैदा करती है। उसके कारण लोग गायिका पात्ती को भी भूल जाते हैं। (फ़्रांसीसी)

दिया है, लेकिन साथ ही उसकी पीड़ा के लिये दया भी आ रही थी और इसलिये वह बहुत उत्तेजित था। वह नीचे स्टाल में पहुंचा और सीधे आन्ना के बाक्स की तरफ़ चल दिया। बाक्स के क़रीब स्त्रेमोव खड़ा हुआ आन्ना से बात कर रहा था –

"तार सप्तक के गायक अब नहीं रहे। Le moule en est brisé.*"

व्रोन्स्की ने आन्ना का अभिवादन किया और स्त्रेमोव से दुआ-सलाम करते हुए रुक गया।

"लगता है आप देर से आये और सबसे अच्छा आरिया नहीं सुन सके," आन्ना ने, जैसा कि व्रोन्स्की को प्रतीत हुआ, उपहासजनक ढंग से उसकी ओर देखकर कहा।

"मैं अच्छा पारखी नहीं हूं," व्रोन्स्की ने उसकी ओर कड़ाई से देखते हुए कहा।

"प्रिंस याश्विन की तरह," आन्ना मुस्कराते हुए बोली, "जिसका यह ख़्याल है कि पात्ती बहुत ही ऊंचा गाती है।"

"धन्यवाद," लम्बे दस्ताने से ढके अपने छोटे से हाथ में व्रोन्स्की द्वारा उठा कर दिया जानेवाला कार्यक्रम-पत्र लेते हुए आन्ना ने कहा और इसी क्षण अचानक उसका सुन्दर चेहरा सिहर उठा। वह उठकर बाक्स के पृष्ठ भाग में चली गयी।

यह देखकर कि अगले अंक में आन्ना का बाक्स ख़ाली पड़ा है, व्रोन्स्की दर्शकों की दबी-दबी हिश-हिश की आवाज़ के बीच, जो "कवातीना" की ध्वनियां उभरते ही शान्त हो गये थे, स्टाल से बाहर निकला और घर की ओर रवाना हो गया।

आन्ना होटल में पहुंच चुकी थी। व्रोन्स्की जब उसके कमरे में गया, तो वह उसी पोशाक में, जिसमें थियेटर गयी थी, अकेली थी। वह दीवार के क़रीब वाली पहली आरामकुर्सी पर बैठी हुई अपने सामने एकटक देख रही थी। उसने व्रोन्स्की पर एक नज़र डाली और उसी क्षण पहले की मुद्रा में बैठ गयी।

"आन्ना," व्रोन्स्की ने कहा।

---

* वे लुप्त हो गये। (फ़्रांसीसी)

"तुम, तुम ही हर चीज़ के लिये दोषी हो!" वह उठते हुए हताशा और क्रोधभरे स्वर में आंसू बहाती हुई चिल्ला उठी।

"मैंने तुमसे न जाने का अनुरोध किया था, तुम्हारी मिन्नत की थी। मुझे मालूम था कि वहां तुम्हें कुछ नागवार लगेगा..."

"नागवार!" वह चिल्लाई। "भयानक! जब तक मैं ज़िन्दा रहूंगी, कभी यह नहीं भूल सकूंगी। उसने कहा कि मेरे क़रीब बैठना उसका अपमान है।"

"ये एक मूर्ख औरत के शब्द हैं," व्रोन्स्की ने कहा। "लेकिन ऐसा मौक़ा क्यों दिया जाये, लोगों को उकसाया ही क्यों जाये..."

"तुम्हारी इस शान्ति से मैं घृणा करती हूं। तुम्हें मुझे इस स्थिति तक नहीं पहुंचाना चाहिये था। अगर तुम मुझे प्यार करते..."

"आन्ना! मेरे प्यार का यहां क्या सवाल पैदा होता है..."

"हां, अगर तुम मुझे वैसे ही प्यार करते होते, जैसे मैं तुम्हें करती हूं, अगर तुम भी मेरी तरह यातना सहते होते..." आन्ना ने व्रोन्स्की की ओर देखते हुए सहमे-सहमे ढंग से कहा।

व्रोन्स्की को उसपर दया और साथ ही ग़ुस्सा भी आ रहा था। उसने उसे अपने प्यार का विश्वास दिलाया, क्योंकि वह देख रहा था कि केवल इसी से अब उसे शान्ति मिल सकती है। उसने शब्दों में नहीं, मगर मन ही मन उसकी भर्त्सना अवश्य की।

प्यार के सम्बन्ध में दिये जानेवाले आश्वासन, जो व्रोन्स्की को इतने तुच्छ प्रतीत हो रहे थे कि उन्हें मुंह से निकालते हुए भी उसे शर्म आ रही थी, आन्ना इन्हीं आश्वासनों की मस्ती में डूबती और धीरे-धीरे शान्त होती जा रही थी। इस घटना के एक दिन बाद उनके बीच पूरी तरह सुलह हो गयी और वे गांव चले गये।